हिन्दी गद्य साहित्य और संरचना

COURSE CODE: B21HD01LC

UG PROGRAMME

LANGUAGE CORE

HINDI

SELF LEARNING MATERIAL

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Vision

To increase access of potential learners of all categories to higher education, research and training, and ensure equity through delivery of high quality processes and outcomes fostering inclusive educational empowerment for social advancement.

Mission

To be benchmarked as a model for conservation and dissemination of knowledge and skill on blended and virtual mode in education, training and research for normal, continuing, and adult learners.

Pathway

Access and Quality define Equity.

हिन्दी गद्य साहित्य और संरचना

Course Code: B21HD01LC

Semester -II

Language Core Course
Hindi
for UG Programmes
Self Learning Material

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

B21HD01LC
हिन्दी गद्य साहित्य और संरचना

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

All rights reserved. No part of this work may be reproduced in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from Sreenarayanaguru Open University. Printed and published on behalf of Sreenarayanaguru Open University by Registrar, SGOU, Kollam.

www.sgou.ac.in

ISBN 978-81-963059-8-7

9 788196 305987

DOCUMENTATION

Academic Committee

Dr. C. Balasubramanian
Dr. Abdul Jabbar M.
Dr. Antony Oliver
Dr. Rajan T.K.
Dr. Sreedevi
Dr. Sumith P.V.
Dr.V.K. Subrahmanyan
Dr. Anish Cyriac
Dr. N. Shaji
Dr. Roshni R.
Dr. Suma S.
John Panicker

Development of the content

Dr. Lembodharan Pillai B.

Review

Content : Dr. Sunny M., Prof. (Dr.) N. Mohanan
Format : Dr. I.G. Shibi
Linguistics : Dr. Suma S.

Edit

Dr. Suma S., Prof. (Dr.) N. Mohanan

Scrutiny

Dr. Vincent B. Netto, Dr. Karthika M.S., Dr. Mini B., Dr. Indu G. Das

Co-ordination

Dr. I.G. Shibi and Team SLM

Design Control

Azeem Babu T.A.

Production

March 2023

Copyright

© Sreenarayanaguru Open University 2023

YouTube

MESSAGE FROM VICE CHANCELLOR

Dear

I greet all of you with deep delight and great excitement. I welcome you to the Sreenarayanaguru Open University.

Sreenarayanaguru Open University was established in September 2020 as a state initiative for fostering higher education in open and distance mode. We shaped our dreams through a pathway defined by a dictum 'access and quality define equity'. It provides all reasons to us for the celebration of quality in the process of education. I am overwhelmed to let you know that we have resolved not to become ourselves a reason or cause a reason for the dissemination of inferior education. It sets the pace as well as the destination. The name of the University centres around the aura of Sreenarayanaguru, the great renaissance thinker of modern India. His name is a reminder for us to ensure quality in the delivery of all academic endeavours.

Sreenarayanaguru Open University rests on the practical framework of the popularly known "blended format". Learner on distance mode obviously has limitations in getting exposed to the full potential of classroom learning experience. Our pedagogical basket has three entities viz Self Learning Material, Classroom Counselling and Virtual modes. This combination is expected to provide high voltage in learning as well as teaching experiences. Care has been taken to ensure quality endeavours across all the entities.

The university is committed to provide you stimulating learning experience. The UG programmes are benchmarked with similar programmes of other state universities in Kerala. The curriculum follows the UGC guidelines of having three disciplines in a bundle in addition to language core and skill enhancement courses. The present material is meant for a complete course in Hindi language and literature as a part of the mandatory language core in the curriculum. Being a general course in literature, the syllabus has been designed to enthuse the interest of the learners to pursue a deeper search for their preferences in the realm of literature. Care has been taken to ensure a cohesive approach in presenting the matter so that the thread of continuity will be in place. We assure you that the university student support services will closely stay with you for the redressal of your grievances during your studentship.

Feel free to write to us about anything that you feel relevant regarding the academic programme.

Wish you the best.

Regards,
Dr. P.M. Mubarak Pasha 01.03.2023

Contents

BLOCK - 01. हिन्दी लघुकथा का सामान्य परिचय 01

इकाई : 1 हिन्दी कहानी का सामान्य परिचय 02

इकाई : 2 हिन्दी के प्रमुख कहानिकार 07

इकाई : 3 प्रेमचंद, प्रसाद, जैनेंद्र, अज्ञेय और उषाप्रियंवदा का योगदान 12

BLOCK - 02. हिन्दी की प्रमुख कथाएँ 18

इकाई : 1 ईदगाह 19

इकाई : 2 वापसी 24

BLOCK - 03. गद्य का उद्भव और विकास 28

इकाई : 1 गद्य के प्रकार 29

इकाई : 2 निबंध, जीवनी, आत्मकथा, यात्रावृत्त सामान्य निबंध 34

इकाई : 3 संस्मरण-रेखाचित्र, एकांकी,व्यंग्य आदि 38

BLOCK - 04. विविध गद्य रूपों का परिचय 42

इकाई : 1 सदाचार का तावीज़ 43

इकाई : 2 रज़िया 48

BLOCK - 05. संरचनात्मक व्याकरण 52

इकाई : 1 शब्द विचार 53

इकाई : 2 संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण 57

इकाई : 3 क्रिया और काल 64

BLOCK - 06. व्याकरण के व्यावहारिक प्रयोग 71

इकाई : 1 शुद्ध कीजिए 72

इकाई : 2 अभ्यासार्थ अनुच्छेद 76

इकाई : 3 अभ्यास केलिए रचना 80

Model Question Paper Set -1 84

Model Question Paper Set -2 86

BLOCK - 01

हिन्दी लघुकथा का सामान्य परिचय

इकाई : 1
हिन्दी कहानी का सामान्य परिचय

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी साहित्य के आधुनिक गद्य विधाओं से परिचय प्राप्त करता है।
- हिन्दी कहानी के उद्भव और विकास से परिचय प्राप्त करता है।
- हिन्दी कहानी के आरंभ से अब तक की प्रतिनिधि कहानियों और कहानीकारों से परिचय प्राप्त करता है।
- हिन्दी कहानी कला के विभिन्न क्षेत्रों के बारे में समझता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी साहित्य का इतिहास करीब एक हज़ार वर्ष पुराना है। इस दीर्घ अवधि को विद्वानों ने आदिकाल या वीरगाथा काल, पूर्व मध्यकाल या भक्ति काल, उत्तर मध्यकाल या रीतिकाल और आधुनिक काल या गद्यकाल नाम में विभाजित किया है।

कहानी की परिभाषा

अन्य साहित्य विधाओं की तुलना में कहानी अत्यधिक लोकप्रिय विधा है। विश्व प्रसिद्ध भारतीय लेखक प्रेमचन्द ने कहानी की परिभाषा देते हुए कहा है - कहानी ऐसी एक रचना है, जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना लेखक का उद्देश्य रहता है। उपन्यास कई रूप-रंग-गुण के पौधोंवाला एक बगीचा है तो कहानी उसका एकमात्र पौधे का फूल है। अर्थात कहानी में लेखक जीवन के किसी एक महत्वपूर्ण अंग को प्रदर्शित करता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

कहानी के वर्गीकरण - प्रेमचन्द पूर्व (सन् 1900 - 1910) प्रेमचन्द युगीन (सन् 1910 से 1935), प्रेमचन्दोत्तर युगीन कहानियाँ (सन् 1935 से 1950), उत्तर शति (उत्तर आधुनिकता) और नयी कहानी (1950 से आज तक)।

Discussion / चर्चा

कहानी भाषा के साथ ही आदिम मानव से जुड़ी रही होगी। प्राचीन भाषाओं के साहित्य में कहानी की परंपरा सुरक्षित है। परन्तु हिन्दी कहानी का उद्भव 20 वीं शत के प्रारंभिक वर्षों से ही हुआ है। सरस्वती पत्रिका का प्रकाशन और हिन्दी कहानी की उत्पति लगभग समानान्तर घटनाएँ हैं।

प्रेमचन्द पूर्व कहानी, प्रेमचंद युगीन कहानी, प्रेमचन्दोत्तर युगीन कहानी, प्रेमचन्दोत्तर युगीन विविध कहानी आन्दोलन। आरंभिक काल की कहानियाँ अंग्रेज़ी एवं बँगला की छत्रछाया में पली हैं। इंशा अल्ला खाँ ने 1803 में रानी केतकी की कहानी की रचना की। रानी केतकी की कहानी में मौलिक तत्वों का अभाव होने से उसे पहली कहानी नहीं मानती। हिन्दी की पहली मौलिक कहानी 1900 में किशोरीलाल गोस्वामी कृत इन्दुमति है।

हिन्दी-कहानी के उद्भव से लेकर उत्तर आधुनिकता युगीन कहानियों के इतिवृत्त को निम्नलिखित शीर्षकों में वर्गीकृत किया जा सकता है :-

1. प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी - कहानी - प्रथम उत्थान काल - सन् 1900 - 1910

2. प्रेमचन्दयुगीन कहानी - द्वितीय उत्थान काल -सन्-1910 - 1935
3. उत्तर स्वच्छन्दतावाद(प्रगीत - प्रयोग) युगीन कहानी - तृतीय उत्थान काल - सन् 1935 से 1950
4. उत्तर शति(उत्तर आधुनिकता) और नयी कहानी - चतुर्थ उत्थान काल - 1950 से आज तक

पहली कहानी

हिन्दी की पहली कहानी और कहानीकार के बारे में विद्वानों में मतभेद है। इस विषय में एक निष्कर्ष पर पहुंचाना कठिन है और मतभेद पाठकों को शंका पर डाल देते हैं। अधिकांश विद्वान आचार्य रामचंद्र शुक्ल के मत को स्वीकार करते हैं।

आचार्य शुक्ल के हिन्दी साहित्य का इतिहास ग्रंथ के अनुसार किशोरीलाल गोस्वामी द्वारा सन् 1900 में लिखी इन्दुमती हिन्दी की पहली कहानी है। किशोरीलाल गोस्वामी को हिन्दी के प्रथम कहानीकार मानते हैं। इन्दुमती को प्रथम कहानी स्थापित करते हुए शुक्ल ने कहा है कि इंदुमती में किसी बंगला कहानी की छाया नहीं है, तो हिन्दी की यही मौलिक कहानी ठहरती है। इसके उपरान्त 'ग्यारह वर्ष का समय' और फिर दुलाईवाली का नंबर आता है। लेकिन कुछ विद्वान इंशा अल्लाह खाँ की रानी केतकी की कहानी (1803) को पहली कहानी मानते हैं। रानी केतकी की कहानी में विद्वान कहानी के मौलिक लक्षण का अभाव देखते हैं।

शैशव कालीन कहानी

इंशा अल्ला खाँ कृत रानी केतकी की कहानी, लल्लू लाल कृत प्रेमसागर, सदल मिश्र कृत नासिकेतोपाख्यान आदि कहानियों को हिन्दी के शैशव काल की कहानियाँ मानते हैं। आरंभिक काल की कहानी विवरणात्मक, घटना प्रधान, कौतूहल प्रधान, स्थूल कथानकवाले और चमत्कार पूर्ण होते हैं। प्रारंभिक कहानियों में भाषा, शिल्प, संवेदना, उद्देश्य, शैली आदि सभी शिथिल और दुर्बल दिखायी पड़ती है। कहानी के शैशव काल की सभी रचनाओं में बंगला तथा अंग्रेज़ी आदि भाषाओं का ज्यादा प्रभाव देखने को मिलता है।

सरस्वती, प्रदीप और मित्र पत्रिका

हिन्दी साहित्य के सर्वतोमुखी विकास के लिए 'सरस्वती', 'हिन्दी प्रदीप', 'छत्तीसगढ़ मित्र' जैसी पत्रिकाओं का योगदान अविस्मरणीय है। सरस्वती सन् 1900 में उत्तरप्रदेश के प्रयाग से प्रकाशित पत्रिका है। जिसमें हिन्दी की पहली लक्षण युक्त मौलिक कहानी इन्दुमती (किशोरीलाल गोस्वामी) प्रकाशित हुई थी। 'हिन्दी प्रदीप' सन् 1887 में भारतेन्दु हरिश्चंद्र के संपादकत्व में प्रयाग से प्रकाशित पत्रिका है। इसके सिवा छत्तीसगढ़ से मित्र नामक पत्रिका भी निकली थी।

सन् 1900 में इन्दुमती के प्रकाशन के उपरांत सन् 1902 में लाला भगवानदीन की प्लेग की चुड़ैल, 1903 में रामचंद्र शुक्ल कृत ग्यारह वर्ष का समय, बंगमहिला की कहानी दुलाई वाली, तदनंतर माधवराय सप्रे की एक टोकरी पर मिट्टी, एक पथिक का स्वप्न आदि कहानियाँ प्रकाशित हुई । ये सब हिन्दी साहित्य के आरंभकालीन कहानियाँ मानी जाती हैं।

सरस्वती पत्रिका ने किशोरीलाल गोस्वामी, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, बंग महिला, वृन्दावन लाल वर्मा, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक, प्रेमचन्द, जैनेंद्रकुमार जैसे महान कहानीकारों को कहानी जगत पर प्रतिष्ठित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। हिन्दी कहानी का यथार्थ विकास परिणाम भारतेन्दु युग से मानना उचित है।

भारतेन्दु युग (1868-1902)

भारतेन्दु हरिश्चंद्र हिन्दी के पुनर्जागरण का नायक एवं गद्य के पितामह हैं। भारतेन्दु युग की महत्वपूर्ण घटना हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन है। इस समय हिन्दी में कई पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ।

इनमें प्रमुख हैं -

1. आनंद कदंबिनी (मिर्जापुर),

2. हिन्दी प्रदीप (प्रयाग),

3.ब्रह्मण (कानपुर),

4.भारत बंधु (अलीगढ़) आदि।

भारतेन्दु ने सन् 1868 में कविवचन सुधा, सन् 1873 में हरिश्चंद्र मैगज़ीन, सन् 1874 में बाला बोधिनी तथा हरिश्चंद्र चंद्रिका आदि पत्रिकाओं का प्रकाशन किया है। इन पत्रिकाओं के द्वारा हिन्दी कहानी का विकास तीव्र होने लगा। भारतेन्दु स्वयं कहानीकार था। उनका लिखा हुआ - एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न नामक कहानी हिन्दी के आरंभकालीन समय की विशिष्ट उपलब्धि है। उनके समकालीन कहानीकार गौरीदत्त शर्मा की कहानी-टका कमानी और देवरानी जेठनी की कहानी उपदेश प्रधान कहानी की कोटि में आती हैं। अन्य प्रमुख कहानीकारों में किशोरीलाल गोस्वामी, बंग महिला, रामचंद्र शुक्ल, डॉ.

भगवानदास, बद्रीनारायण चौधरी आदि के नाम भी उल्लेखनीय है।

द्विवेदीयुग

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी हिन्दी के महान पथप्रदर्शक लेखक है। सन् 1903 को महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती पत्रिका के संपादकत्व ले लिया। हिन्दी कहानी की श्रीवृद्धि के लिए सरस्वती का अपूर्व देन है। हिन्दी कहानी के क्रमिक उत्थान द्विवेदी युग से मानना उचित है।

द्विवेदीयुग की मौलिक कहानीकारों की श्रेणी में मास्टर भगवानदास (प्लेगकी चुड़ैल-1902), रामचन्द्रशुक्ल (ग्यारह वर्ष का समय -1903), गिरजादत्तबाजपेयी (पंएित और पंएितानी-1903), बंग-महिला (दुलाईवाली) आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इस युग में महाकवि जयशंकर प्रसाद अपनी ग्राम नामक कहानी द्वारा हिन्दी कहानी के क्षेत्र में पदार्पण किया। चन्द्रधर शर्मा गुलेरी(उसने कहा था) द्विवेदी युग के श्रेष्ठ कहानीकारों में से एक हैं।

इस युग के कहानीकार देश के चारों ओर फैली हुई अशिक्षा, गरीबी, अंधविश्वास, अविवेक, अनीति, अत्याचार आदि पर ध्यान रखते थे। इस युग की कई रचनाएँ आदर्शवाद पर अधिष्ठित हैं।

प्रेमचन्दयुग

प्रेमचन्द युग (सन् 1916-1936) पूर्ण रूप में हिन्दी कहानी की सर्वतोमुखी प्रगति का युग है। प्रेमचन्द उर्दू मातृभाषी थे। हिन्दी कहानी की ओर उनका आगमन महत्वपूर्ण घटना थी।

कलम के सिपाही प्रेमचन्द ने हिन्दी कहानी को अंग्रेज़ी, बंगला और संस्कृत की छाया से अपने ही पैर पर खड़ा कर दिया है। हिन्दी के शुष्क और नीरस कहानी जगत में प्रेमचन्द का पदार्पण एक अद्भुत-अपूर्व घटना थी। वस्तुतः वे उर्दू के लेखक थे। इस युग के कहानीकारों में शीर्षस्थ हैं जैन्ेंद्रकुमार, सुदर्शन, जयशंकरप्रसाद, विश्वंभरनाथशर्मा कौशिक आदि। इस युग के कहानीकारों ने आदर्श- मार्क्सवाद, गाँधीवाद, यथार्थवाद, आदि भावनाओं से भरे चरित्र निर्माण पर बल दिया। किसानों-मज़दूरों के प्रति ममता, विदेशियों के प्रति कट्टर विरोध, जमींदार-साहूकारों के प्रति आक्रोश, सामाजिक कुरीतियों के प्रति निर्मम प्रतिकार भाव, अहिंसा का प्रचार, स्वदेश प्रेम, मार्क्स की समाज-व्यवस्था और अर्थशास्त्र का समर्थन, स्त्री-पुरुष सम भावना आदि पर बल दिया।

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी नयी कहानी, सचेतन कहानी, अकहानी, सहज कहानी, सक्रिय कहानी, जनवादी कहानी, समान्तर कहानी आदि विविध नाम से पुकारे जाते हैं। इसमें वस्तु, शिल्प और प्रस्तुतीकरण में व्यापक परिवर्तन उपस्थित है।

स्वातंत्र्योत्तर कहानी में एक नयी चेतना, नये विश्वास और नयी आशा-आकांक्षा अवश्य दृश्यमान है। इस समय राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश, कमलेश्वर जैसे कहानीकार के नेतृत्व में हिन्दी में नयी कहानी आंदोलन की शुरुआत हुई है। हिन्दी के नए कहानीकारों का मूल उद्देश्य पाठकों को समकालीन यथार्थ से परिचित कराना था।

नयी कहानी के आन्दोलन को प्रवाहमान बनाने में भीष्म साहनी, धर्मवीर भारती, फणीश्वरनाथ रेणु, मार्कण्डेय, अमरकान्त, कृष्णा सोबती, निर्मल वर्मा, मन्नू भण्डारी, उषा प्रियंवदा, हरिशंकर परसाई, शैलेश मटियानी आदि कहानीकारों का महत्वपूर्ण योगदान है। श्रीकांत वर्मा, रवीन्द्र कालिया, जगदीश चतुर्वेदी, राजकमल, प्रबोध कुमार, ममता कालिया, ज्ञानरंजन, दूधनाथ सिंह, गंगाप्रसाद विमल, प्रयाग शुक्ल, महेन्द्र भल्ला, मुद्राराक्षस आदि इस समय के अन्य प्रमुख कहानी लेखक हैं।

Critical Overview / अवलोकन

जनवादी दृष्टिकोण।

पूंजीवाद के विरुद्ध विद्रोह।

मानव - जीवन का यथार्थ वर्णन।

मानवीय संवेदना की गहरी परख।

Recap / पुनरावृत्ति

- आरंभिक काल की कहानियाँ अंग्रेज़ी एवं बँगला की छत्रछाया में पली हैं
- इंशा अल्ला खाँ ने 1803 में रानी केतकी की कहानी की रचना की
- रानी केतकी की कहानी में मौलिक तत्वों का अभाव होने से उसे पहली कहानी नहीं मानती
- हिन्दी की पहली मौलिक कहानी 1900 में किशोरीलाल गोस्वामी कृत इन्दुमति है
- प्रेमचन्द पूर्व कहानी
- कहानी सम्राट प्रेमचन्द
- प्रेमचन्द का जन्म 31 जुलाई 1880 में लमही में और मृत्यु 8 अक्तूबर 1936 में वाराणसी में हुआ है। उनकी गणना विश्व साहित्यकारों की कोटि में हैं
- प्रेमचन्दोत्तर युगीन कहानी
- विविध कहानी आन्दोलन
- प्रमुख कहानीकार और उनकी प्रमुख कहानियाँ
- प्रेमचन्द के बाद के कहानीकारों में गुलेरी, जैनेंद्र कुमार, प्रसाद, यशपाल, अज्ञेय, भीष्म साहनी, स्वयंप्रकाश, उषा प्रियंवदा आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं
- स्वातंत्र्योत्तर कहानी, नयी कहानी, सचेतन कहानी, अकहानी, सहज कहानी, सक्रिय कहानी, जनवादी कहानी, समान्तर कहानी आदि नाम से पुकारे जाते हैं

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रेमचन्द युग की समय सीमा कहाँ से कहाँ तक है?
2. प्रेमसागर - किसकी लिखी कहानी है?
3. रानी केतकी की कहानी के रचनाकार कौन हैं ?
4. सरस्वती पत्रिका का प्रकाशन कब, कहाँ से शुरू हुआ है?
5. प्लेग की चुड़ैल - नामक कहानी के रचनाकार कौन है?
6. हरिश्चंद्र मैगज़ीन के संपादक कौन हैं ?
7. उसने कहा था - किसकी कहानी है ?
8. सामान्तर कहानी आन्दोलन के प्रवर्तक कौन हैं ?

Answers उत्तर

1. सन् 1910 से 1935
2. लल्लू लाल ।
3. इंशा अल्ला खाँ ।
4. सरस्वती सन् 1900 में उत्तर प्रदेश के प्रयाग से प्रकाशित पत्रिका है

5. सन् 1902 - लाला भगवानदीन ।
6. भारतेन्दु हरिश्चंद्र ।
7. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ।
8. कमलेश्वर ।

Assignments प्रदत्त कार्य

1. भारतेन्दु युग के मुख्य हिन्दी पत्रिकाओं के नाम बताइए।
2. हिन्दी के आरंभकालीन कहानियों और रचनाकारों का परिचय दीजिए।
3. द्विवेदी युग की कहानी के क्रमिक विकास पर टिप्पणी लिखिए।
4. हिन्दी के आरंभकालीन कहानीकारों का परिचय दीजिए।
5. स्वातंत्र्योत्तर कहानी के मुख्य विषय क्या-क्या रहे हैं ?
6. प्रेमचन्द युग के चार प्रसिद्ध कहानीकारों के नाम लिखिए।
7. हिन्दी साहित्य के कहानी कला का परिचय दीजिए।
8. द्विवेदी युगीन कहानियों के नाम लिखिए।

इकाई : 2
हिन्दी के प्रमुख कहानिकार

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी साहित्य के प्रमुख कहानीकारों का परिचय प्राप्त होता है।
- हिन्दी कहानी के विविध आन्दोलन और उनके प्रवर्तकों का परिचय मिलता है।
- हिन्दी कहानी के आरंभ से अब तक के प्रतिनिधि कहानियों और कहानीकारों से परिचय प्राप्त होता है।
- कहानी साम्राट प्रेमचन्द की कहानी कला की विशेषताएँ समझता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

आधुनिक कालीन हिन्दी कहानी

1. भारतेन्दु युग (सन् 1850-1900) - प्रमुख कहानियाँ और कहानिकार
2. द्विवेदी युग (सन् 1900-1920) - प्रमुख कहानियाँ और कहानिकार
3. प्रेमचन्द युग (सन् 1920-1936) -प्रमुख कहानियाँ और कहानिकार
4. प्रेमचंदोत्तर युग (सन् 1936 से आज तक) - आदि रूप में विभाजित किया जा सकता है। कहानी आधुनिक काल की उपलब्धि है। हिन्दी कहानी की विकास-यात्रा करीब सौ वर्षों की होती है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

प्रमुख कहानी आन्दोलन, कहानियों में उपलब्ध संघर्ष की भावना, नवीन शिल्प का प्रयोग, नागरिक जीवन का यथार्थ चित्रण

Discussion / चर्चा

हिन्दी- कहानी के गर्भ में संस्कृत के पौराणिक कथावृत्तों का आधार रहा है। हिन्दी कहानी की उत्पति से पूर्व इसी तरह का कथात्मक रूप कहानी का था। सरस्वती और इन्दु की पंक्तियों के माध्यम से अनेक कहानिकारों की कहानियाँ पाठक के समक्ष आयीं। हिन्दी साहित्य के कहानिकारों में जागरूकता एवं चेतना के लक्षण स्पष्ट प्रतीत होते हैं। कहानी-कला की दृष्टि से उत्कृष्ट कहानियों में चन्द्रधर शर्मा गुलेरी कृत उसने कहा था प्रमुख बन पडी है। आचार्य शुक्ल ने इसकी बहुत प्रशंसा की है। जयशंकर प्रसाद की विविध कहानियाँ परंपरा को पुष्ट करनेवाली हैं। उन्होंने इन्दु पत्रिका के माध्यम से कहानी विधा को और आगे बढाया। हिन्दी कहानी साहित्य नवीन कथ्य, नवीन शिल्प से संपन्न है।

हिन्दी कहानी साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ:-

- नागरिक जीवन की अभिव्यक्ति ।
- संघर्ष की भावना का प्राधान्य ।
- मानव जीवन का यथार्थ चित्रण ।
- नवीन शिल्प का प्रयोग ।
- जनवादी दृष्टिकोण ।
- पूंजीवाद के विरुद्ध विद्रोह ।
- मानवीय संवेदना की गहरी परख ।

प्रमुख कहानीकार और प्रतिनिधि कहानियाँ

पूर्व प्रेमचन्द युग - कहानियाँ और कहानिकार

- इंशा अल्ला खाँ (रानी केतकी की कहानी)

- राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द (राजा भोज का सपना)
- भारतेन्दु हरिश्चंद्र (अद्‌भुत अपूर्व स्वप्न)
- राजेन्द्र बाला घोष -बंगमहिला (दुलाईवाली)
- किशोरी लाल गोस्वामी (इन्दुमति, गुलबहार)
- माधवप्रसाद मिश्र (मन की चंचलता)
- भगवान दीन (प्लेग की चुड़ौल)
- रामचन्द्र शुक्ल (ग्यारह वर्ष का समय)
- राधिका रमण प्रसाद मिश्र (इन कानों में कंगना)
- चन्द्रधरशर्मा गुलेरी (सुखमय जीवन, उसने कहा था)
- वृंदावन लाल वर्मा (राखीबंधन)
- विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक (रक्षाबंधन, ताई)

प्रेमचन्दयुग - कहानियाँ और कहानिकार

- प्रेमचन्द (कफन, पूस की रात)
- जयशंकर प्रसाद (यामा, आकाश द्वीप)
- सुदर्शन (तीर्थयात्रा, हार की जीत)
- चतुर्सेन शास्त्री (दुखवाँ मैं कैसे कहूँ मेरी सजनी)
- पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र (इंद्रधनुष, निर्लज्जा)
- जैनेंद्र कुमार (खेल, हत्या, अपना-अपना भाग्य)
- अज्ञेय (कोठरी की बात, परंपरा)
- निराला (लिली, पद्मा)
- सुमित्रानंदन पंत (पानवाला)
- राहुल साँकृत्यायन (सतमी के बच्चे)
- सुभद्रा कुमारी चौहान (बिखेर मोती, उन्मादिनी)

प्रेमचन्दोत्तर युग - कहानियाँ और कहानीकार

- भगवती चरण वर्मा (प्रायश्चित, वो दुनिया)
- उपेन्द्रनाथ अश्क (मुक्त, देशभक्त)
- भुवनेश्वर (सूर्यपूजा, भेड़िये)
- गजानन माधव मुक्तिबोध (काठ का सपना)
- इलाचंद जोशी (आहुति, दीवाली)
- यशपाल (मक्रील, फूलों का कुरता)
- विष्णु प्रभाकर (धरती अब भी घूम रही है, संघर्ष के बाद)
- फणीश्वर नाथ रेणु (ठुमरी, तीसरी कसम)
- मोहन राकेश (मलबे का मालिक, परमात्मा का कुता)
- भीष्म साहनी (चीफ की दावत, भटकती राख)
- हरिशंकर परसाई (भोलाराम का जीव)
- शिवप्रसाद सिंह (आरपार की माला, मुर्दा सराय)
- निर्मल वर्मा (परिंदे, कुत्ते की मौत)
- कमलेश्वर (राजा निरबंसिया, नीली झील)
- कमल जोशी (शीराजी, पत्थर की आँखें)
- राजेंद्र यादव (प्रतीक्षा, छोटे-छोटे ताजमहल)
- शेखर जोशी (बदबू)
- अमरकांत (जिंदगी और जोंक)
- मार्कण्डेय (गुलरा के बाबा, साबुन)
- धर्मवीर भरती (मुर्दों का गाँव, चाँद और टूटे हुए लोग)
- नरेश मोहता (निशा जी, तथापि)
- सर्वेश्वर दयाल सस्कसेना (पागल कुत्तों का मसीहा, अंधेरे पर अंधेरा)
- मन्नू भंडारी (मैं हार गयी, यही सच है)
- उषा प्रियंवदा (वापसी, कितना बड़ा झूठ)
- कृष्णा सोबती (यारों के यार, ऐ लड़की)
- ज्ञानरंजन (पिता, फेस के इधर उधर)
- गंगा प्रसाद विमल (एक और विदाई, प्रश्न चिह्न)
- ज्ञानप्रकाश (अंधेरे के सिलसिले)
- महेंद्र भल्ला (एक पति के नोट्स, तीन-चार दिन)
- काशी नाथ सिंह (चायघर में मृत्यु, चोट)
- मंजुल भगत (सफेद कौआ)
- गिरिराज किशोर (गउन, चिड़ियाघर)
- उदय प्रकाश (तिरिछ, पीली छत्तरीवाली लड़की)

आदि हिन्दी के प्रमुख कहानिकार है जिन्होंने हिन्दी कहानी को संपन्न कराने केलिए अपना योगदान किया है।

समकालीन कहानीकार

ज्ञान प्रकाश, मोहनदास नैमिशराय, कँवल भारती, ओमप्रकाश वाल्मीकि, संजय खाती, संजय, जयप्रकाश कर्दम, अब्दुल बिस्मिल्लाह, विवेक, बादशाह हुसैन, रमेश उपाध्याय, मदन मोहन, दीप्ति खण्ऐलवाल, प्रभा खेताना, मृणाल पाण्ऐय, मृदुला गर्ग, दयानन्द वटरौी, चित्रा मुद्‌गल, निरुपमा सेवती, राजी सेठ, मंजुल भगत, सुधा अरोड़ा, पुन्नीसिंह आदि समकालीन कहानी के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं।

क्रम संखा	कहानी के शीर्षक	कहानीकार
1	रानी केतकी की कहानी	इंशा अल्ला खाँ
2	राजा भोज का सपना	शिवप्रसाद सितारे हिन्द

3	अद्भुत अपूर्व सपना	भारतेन्दु हरिश्चंद्र
4	दुलाईवाली	बंगमहिला
5	इन्दुमती	किशोरी लाल गोस्वामी
6	प्लेग की चुड़ैल	भगवानदीन
7	मन की चंचलता	माधव प्रसाद मिश्र
8	ग्यरह वर्ष का समय	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
9	इ कानों में कंगन	राधिका रमण प्रसाद सिंह
10	उसने कहा था	चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
11	राखी बंधन	वृंदावन लाल वर्मा
12	रक्षाबंधन	विश्वंभर नाथ शर्मा कौशिक
13	कफन	प्रेमचन्द
14	हार की जीत	सुदर्शन
15	चिनगारियाँ	पाण्डेय बच्चन शर्मा उग्र
16	खेल	जैनेन्द्र कुमार
17	हल्दी घाटी में	चतुर्सेन शास्त्री
18	ग्राम	जयशंकर प्रसाद
19	कोठरी की बात	सच्चिदानंद हीरांनंद अज्ञेय
20	पानवाला	सुमित्रानंदन पंत
21	सतमी के बच्चे	राहुल साँकृत्यायन
22	उन्मादिनी	सुभद्रा कुमारी चौहान
23	प्रायश्चित	भगवती चरण वर्मा
24	देशभक्त	उपेन्द्रनाथ अश्क
25	भेड़िए	भुवनेश्वर
26	काठ का सपना	गजानन माधव मुक्तिबोध
27	आहूति	इलाचंद जोशी
28	आदमी का बच्चा	यशपाल
29	संघर्ष के बाद	विष्णु प्रभार
30	ठुमरी	फणीश्वर नाथ रेणु
31	परमात्मा का कुता	मोहन राकेश
32	चीफ की दावत	भीष्म साहनी
33	भोलाराम का जीव	हरिशंकर परसाई

Critical Overview / अवलोकन

हिन्दी कहानी के विकास के लिए भारतेन्दु हरिश्चंद्र और महावीर प्रसाद द्विवेदी ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन दोनों महात्माओं ने हिन्दी गद्य साहित्य को अंग्रेज़ी तथा बंगला साहित्य से अलग कर अपने ही पैरों पर खड़ा कर दिया है। हिन्दी कहानी अब प्रेमचन्द - युग से बहुत आगे निकल आयी

है। प्रेमचन्द के बाद जैनेंद्र, यशपाल, उपेन्द्र नाथ अश्क आदि लेखकों ने उसे नयी ज़मीन दी थी। स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद अनेक आन्दोलनों के दौर से गुजरती हुई, अब कहानी यथार्थ से सीधा साक्षात्कार करने में समर्थ है। इस बीच उसने अनेक देशी-विदेशी रचनाकारों से पर्याप्त विस्तृत हो गयी है। उसमें उत्तर आधुनिकता, स्त्रीवाद, दलित चेतना आदि नाना भूमियों को संस्पर्श मिला है।

Recap / पुनरावृत्ति

- प्रेमचन्द की संपूर्ण कहानी मानसरोवर-8 भाग में संकलित है
- आरंभिक काल की कहानियाँ अंग्रेज़ी एवं बँगला की छत्रछाया में पली है
- इंशा अल्ला खाँ ने 1803 में रानी केतकी की कहानी की रचना की
- रानी केतकी की कहानी में मौलिक तत्वों का अभाव होने से उसे पहली कहानी नहीं मानती
- हिन्दी की पहली मौलिक कहानी 1900 में किशोरीलाल गोस्वामी कृत इन्दुमति है
- प्रेमचन्द का जन्म 31 जुलाई 1880 में लमही में और मृत्यु 8 अक्तूबर 1936 में वाराणसी में हुआ है। उनकी गणना विश्व साहित्यकारों की कोटि में हैं
- प्रेमचन्द ने 301 कहानी लिखे हैं, जिसमें 298 उपलब्ध है
- प्रेमचन्द के बाद के कहानीकारों में गुलेरी, जैनेंद्र कुमार, प्रसाद, यशपाल, अज्ञेय, भीष्म साहनी, स्वयं प्रकाश, उषा प्रियंवदा आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय है
- स्वातंत्र्योत्तर कहानी नयी कहानी, सचेतन कहानी, अकहानी, सहज कहानी, सक्रिय कहानी, जनवादी कहानी, समान्तर कहानी आदि नाम से जानी जाती हैं
- सचेतन कहानी - महींप सिह - प्रवर्तक
- समान्तर कहानी - कमलेश्वर - प्रवर्तक
- जनवादी कहानी - ज्ञानरंजन, काशी नाथ सिंह, रमेश उपाध्याय, उदय प्रकाश आदि
- सक्रिय कहानी - चित्रा मुद्गल, सुरेन्द्र कुमार आदि

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. कलम के सिपाही - किसका विशेषण है?
2. प्रेमचन्द उर्दू में किस नाम पर लिखते थे?
3. आकाशदीप कहानी के कहानीकार कौन हैं?
4. सचेतन कहानि के प्रवर्तक कौन हैं?
5. समान्तर कहानी के प्रवर्तक कौन हैं?
6. रक्षा बंधन किसकी रचना है?
7. रामचंद्र शुक्ल जी के एक कहानी का नाम लिखिए।
8. पिता किसकी रचना है?

Answers उत्तर

1. प्रेमचन्द।
2. नवाब राय।
3. जयशंकर प्रसाद।
4. महींप सिंह।
5. कमलेश्वर।
6. विश्वभर नाथ कौशिक।
7. ग्यारह वर्ष का समय।
8. ज्ञानरंजन।

Assignments प्रदत्त कार्य

1. हिन्दी साहित्य और कहानी लेखन लिखिए।
2. प्रमुख कहानियाँ और कहानिकार।
3. हिन्दी की पहली कहानी और कहानीकार के नाम बताइए।
4. हिन्दी के आरंभकालीन कहानीकारों के परिचय दीजिए।
5. प्रेमचन्द युग के चार प्रसिद्ध कहानीकारों के नाम लिखिए।
6. वर्तमानकालीन कहानीकारों में किन्हीं दो के नाम लिखिए।
7. हिन्दी कहानी साहित्य पर टिप्पणी लिखिए।

इकाई : 3
प्रेमचंद, प्रसाद, जैनेंद्र, अज्ञेय और उषाप्रियंवदा का योगदान

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी साहित्य के कहानी साम्राट प्रेमचन्द की कहानियों के बारे में समझता है।
- प्रेमचन्द युगीन कहानियों में व्यक्त जनवादी दृष्टिकोण समझता है।
- प्रतिनिधि कहानीकार अज्ञेय जी के कहानियों की विशेषताएँ समझता है।
- हिन्दी साहित्य में महिला कहानीकार उषा प्रियंवदा का स्थान समझता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

प्रेमचन्द काल - सन् 1916 में सरस्वती पत्रिका के माध्यम से कहानी साम्राट प्रेमचन्द की पहली कहानी पंच परमेश्वर प्रकाश में आयी। प्रेमचन्द जी जनसामान्य के लेखक थे। जयशंकर प्रसाद जी ने अपनी कहानियों में छायावाद की प्रतिष्ठा की है। उनकी अधिकतर कहानियों में भावना की प्रधानता है। मनोवैज्ञानिक कहानी परंपरा के प्रतिनिधि और प्रवर्तक जैनेंद्र कुमार हैं। इन्होंने प्रथम बार कहानियों में एक विशिष्ट जीवन दर्शन को अपनाया है। अज्ञेय जी के कहानियाँ फ्रोयडीयन मनोविज्ञान पर आधारित है। महिला कथाकारों में उषा प्रियंवदा शीर्षस्थ है। उनकी दृष्टिकोण अधिकांशतः स्त्री विमर्श में केंद्रित है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

प्रेमचन्द युगीन हिन्दी कहानी कला, समाज के सभी पक्षों का चित्रण, जनवादी दृष्टिकोण।

Discussion / चर्चा

हिन्दी साहित्य में कहानी कला की दृष्टि से उत्कृष्ट कहानिकारों में प्रेमचन्द, प्रसाद, जैनेंद्र, अज्ञेय और उषा प्रियंवदा का स्थान अद्वितीय है। सरस्वती पत्रिका के माध्यम से कहानी साम्राट प्रेमचन्द की पहली कहानी पंचपरमेश्वर प्रकाश में आयी। प्रेमचन्द जी जनसामान्य के लेखक थे।

प्रसाद जी ने अपनी कहानियों में छायावाद की प्रतिष्ठा की है। प्रेमचन्द और प्रसाद जी इस काल के सामाजिक चेतना और वैयक्तिक चेतना के दो छोर है।

प्रेमचन्दोत्तर काल हिन्दी - कहानी साहित्य का पूर्ण उत्तकर्ष काल माना जाता है। इस युग में कहानी ने नवीन दिशा तथा नया रंग - रूप प्राप्त किया। इस युग के कहानिकारों में अज्ञेय और जैनेन्द्र प्रमुख हैं। जैनेन्द्र मनोवैज्ञानिक कहानिकारों में आग्रण्य थे। अज्ञेय ने मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक धरातल की कहानियाँ लिखी हैं। महिला कहानिकारों ने भी हिन्दी कहानी विधा को सशक्त एवं समृद्ध बनाने में सहयोग किया इनमें प्रमुख है - उषा प्रियंवदा।

युगनिर्माताप्रेमचन्द

साहित्यकार प्रेमचन्द कथा शिल्पी है। उन्होंने लगभग तीन सौ कहानियाँ लिखी हैं। प्रेमचन्द मात्र हिन्दी की संपत्ति नहीं बल्कि, पूरे भारत का वरदान है। प्रेमचन्द, विश्व साहित्य में हिन्दी भाषा को प्रतिष्ठित किया है। उन्होंने जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं को सुवर्ण अक्षरों में जितना खींचा है, वे अन्यत्र दुर्लभ

हैं। प्रेमचन्द आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानीकार है। यह सही है कि कहानी क्षेत्र में प्रेमचन्द के समान प्रेमचन्द ही होता है। 1936 में लखनऊ में प्रगतिशील लेखक संघ के सम्मेलन में अध्यक्ष थे प्रेमचन्द ।

जन्म और शिक्षा

प्रेमचन्द का जन्म 31 जुलाई 1880 को काशी से चार मील दूर के लमही नामक गाँव में हुआ था। उनका वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। प्रेमचन्द की माता आनन्दी देवी और पिता अजायबराय थे। वे 1898 में मैट्रिक परीक्षा और 1919 में बी.ए की परीक्षा उत्तीर्ण की।

प्रेमचन्द उर्दू मातृ भाषी थे। वे उर्दू से हिन्दी की ओर आये। उर्दू में उनका नाम नवाब राय था। हिन्दी में प्रेमचन्द नाम से प्रसिद्ध हुए हैं। उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचन्द के योगदान को देखकर बंगाल के विख्यात उपन्यासकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय ने उन्हें उपन्यास साम्राट का विशेषण दिया है।

उर्दू में प्रेमचन्द का प्रथम कहानी-संग्रह सन् 1908 में सोजे-वतन (राष्ट्र विलाप) प्रकाशित हुआ है। जनता को भड़काने का आरोप लगाकर उत्तर प्रदेश के हमीरपुर जिला कलेक्टर ने सोजे-वतन को जब्त कर उसकी पाँच सौ प्रतियाँ आग लगा दी गई। कलेक्टर ने नवाबराय (प्रेमचन्द) को धमकी दी कि यदि आगे लिखा तो जेल भेज दिया जाएगा। इस घटना के बाद नवाबराय, प्रेमचन्द नाम से लिखना शुरू किया।

हिन्दी में प्रेमचन्द की पहली कहानी ज़माना पत्रिका के दिसम्बर 1910 अंक में प्रकाशित बड़े घर की बेटी है। उनकी अंतिम कहानी कफन है। कफन का प्रकाशन 1936 में उनकी मृत्यु से कुछ समय पहले हुई थी। हिन्दी में उनका पहला उपन्यास प्रेमा (1903) और अंतिम उपन्यास 1936 में लिखा गया अधूरा उपन्यास मंगलसूत्र है।

प्रेमचन्द ने हिन्दी में कुल मिलाकर 301 कहानियाँ लिखी हैं, जिनमें 3 अभी भी अप्राप्य है। उर्दू में प्रेमचन्द की पहली कहानी 'संसार का सबसे अनमोल रत्न' (जून 1908 में प्रकाशित सोज़े वतन में संकलित) है। पूस की रात, सद्गगति, पंचपरमेश्वर, आत्माराम, बड़े घर की बेटी, बूढ़ी काकी, शतरंज के खिलाड़ी, बज्रपात, ईदगाह, सुजान भगत, कफन, मुक्तिपथ, नमक का दारोगा, मंत्र आदि प्रेमचन्द की उल्लेखनीय कहानियाँ हैं। अत्यंत सरल भाषा एवं आकर्षक शैली के धनी प्रेमचन्द आज भी करोड़ों के मन में जिंदा हैं।

पहले प्रेमचन्द की कहानियाँ सप्तसरोज, नवनिधि, प्रेमपचीसी, प्रेमपूर्णिमा, प्रेमद्वादशी, प्रेमतीर्थ, सप्तसुमन आदि नामों में संकलित कर लिया है। बाद में उनकी संपूर्ण कहानियाँ मानसरोवर 8 भाग में संग्रहीत है। माधुरी, मर्यादा, जागरण तथा हंस आदि पत्रिकाओं के संपादक भी है।

जयशंकर प्रसाद :-

प्रेमचन्द युग के मशहूर कहानीकारों में जयशंकर प्रसाद का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रसाद मूलतः कवि है। नाटककार, उपन्यासकार और कहानीकार के रूप में भी उन्होंने अपनी अपूर्व प्रतिभा दिखायी है। उनकी ग्राम नामक आरम्भिक कहानी इन्दु नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई है। आकाशदीप, आँधी, छाया, प्रतिध्वनि, बिसाती, पुरस्कार, इन्द्रजाल, गुण्डा जैसी प्रसाद की कहानियाँ साहित्य जगत में काफी चर्चित रचनाएँ हैं। प्रसाद की कहानियों के महत्त्व उनकी काव्यमयी भाषा और कोमलता है। भावपक्ष और कलापक्ष की दृष्टि में प्रसाद की कहानियाँ श्रेष्ठ मानी जाती हैं।

प्रसाद की लेखनी से 72 कहानियाँ जन्म पायी हैं। इनमें अधिकांश भावना प्रधान है। वे कुछ यथार्थोन्मुख और वातावरण प्रधान कहानियाँ भी लिखी हैं। प्रसाद मौलिक कहानीकार है। उन्होंने अपनी कहानियों में इतिहास को कल्पना से संजोया है।

प्रसाद की रचनाओं में भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता प्रस्फुटित होती है। प्रसाद की कहानी में प्रेम, करुणा, सौंदर्य, भावुकता आदि भारी मात्रा में सम्मिलित है। उन्हें भारतीय अतीत के गौरव गायक मानते हैं। आँधी, आकाशदीप, पुरस्कार, गुंडा, सालवती, स्वर्ग के खंडहर में, इंद्रजाल, विराम चिह्न, छोटा जादूगर, बिसाती, समुद्र संतरण जैसी प्रसाद की कहानियाँ पाठक-हृदय को प्रलोभन कर देते हैं। बुद्धगुप्त, चंपा, मणिभद्र, इरावती, मधुलिका, लैला, सालवती, नन्हकूसिंह आदि पाठक-मन पर स्थान पाये हैं। ललित-प्रवाहित काव्यमय भाषा, प्रभाव युक्त शैली, कल्पना की विविधता, अतीत के प्रति विशेष झुकाव आदि से संपन्न प्रसाद की कहानियाँ कालातीत हैं।

जैनेंद्रकुमार :-

हिन्दी के अमर कहानीकार जैनेंद्र कुमार का जन्म 2 जनवरी 1905 को उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ के कौड़ियागंज में हुआ था। उनकी मृत्यु 24 दिसम्बर 1988 को हुई। बनारस विश्वविद्यालय की उच्च्य शिक्षा के दौरान जैनेंद्र कुमार साहित्य जगत पर पदार्पण किया। विद्यार्थी जीवन में उन्हें असहयोग आंदोलन में भाग लेकर जेल जीवन भोगना पड़ा। आगे वे साहित्य-जगत में

सजीव हो गया। जैनेंद्र कुमार को मानव मन के निपुण चितेरा कह सकते हैं। उन्हें भारत सरकार ने 1966 में केंद्र साहित्य अकादमी पुरस्कार और 1971 में पद्मभूषण दे कर सम्मानित किया है। सन् 1973 में दिल्ली विश्वविद्यालय ने उनको डीलिट की उपाधि दे कर सम्मानित किया है।

जैनेंद्र कुमार अपनी कहानियों में पहले पहल दार्शनिक और बुद्धिजीवी के रूप में आये हैं। प्रेमचन्द अपनी अल्पायु में जिस सामाजिक जीवन चित्रण अधूरा छोड़ चला गया, उसे जैनेंद्र कुमार ने पूरा किया है।

जैनेंद्र कुमार की कहानी व्यक्ति-मन के आंतरिक भाव चित्र है। वे व्यक्ति के मन को सूक्ष्म से सूक्ष्म परखते हैं और अंत में निष्कर्ष पाठक-समक्ष पेश करते हैं।

जैनेंद्र कुमार हिन्दी कहानी के सर्वोच्च मनोवैज्ञानिक (Psychological) कहानीकार है। उन्होंने कहानी रचना-प्रक्रिया के लिए मनोविज्ञान का सहारा लिया है। इधर-उधर फैली हुई छोटी-छोटी घटनाओं को उन्होंने अपनी कहानियों में वातावरण निर्माण में कम ध्यान रखा है, वे ज्यादा पात्रों के पीछे दौड़ते हैं। लगता है कि कहानियों में कहानीकार मुख्य पात्र के साथ सहयात्रा करते हैं।

भगवान बुद्ध के करुणा मनोभाव, गांधीजी के सत्य-अहिंसा सिद्धांत आदि के साथ-साथ दार्शनिकता एवं संस्कृति की महत्ता भी जैनेंद्र में उपलब्ध है। जैनेंद्र प्रगतिशील-क्रांतिकारी रचनाकार होने के कारण उनमें परंपरागत रीति-रिवाज का अभाव है।

जैनेंद्र की कहानियों में मनोविज्ञान के साथ दार्शनिकता भी अंतर्लीन है। ईनाम, मास्टरजी जैसी अपूर्व कहानियों में उन्होंने दार्शनिकता को यथार्थवाद से संजोए हैं। सशक्त सूक्ष्मता, अपार कौशल, अद्भुत सरलता, दार्शनिकता, मानवीय दृष्टि कोण आदि उनमें है।

जैनेंद्र कुमार ने लगभग 200 कहानियाँ लिखी है। उनका पहला कहानी संग्रह फाँसी का प्रकाशन सन् 1927 में हुआ था। पाजेब, फाँसी, दो चिड़ियाँ, ध्रुव यात्रा, एक रात, वातायन, नीलम देश की राजकुमारी, जैनेंद्र की कहानियाँ (दस भाग), मेरी प्रिय कहानियाँ, नई कहानियाँ, स्पर्द्धा, एक दिन तथा एक रात आदि जैनेंद्र कुमार के कहानी संग्रह है।

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय

अज्ञेय का पूरा नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय है। उनका जन्म 7 मार्च 1911 को उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के कसया (कुशीनगर) में हुआ था । वे सन् 1929 में बी.एस.सी पूरा करके अंग्रेज़ी में एम.ए के लिए पढ़ते समय साहित्य में सक्रिय हो गये। अज्ञेय बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार है। अज्ञेय को आधुनिक हिन्दी के पथ-प्रदर्शक कहते हैं। उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार (1964-आँगन के पार द्वार), भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार (1978, कितनी नावों में कितनी बार) तथा 1983 में भारत-भारती पुरस्कार आदि मिले हैं।

महान कवि, प्रसिद्ध शैलीकार, कथा-साहित्य को एक महत्त्वपूर्ण मोड़ दिये गये कथाकार, श्रेष्ठ उपन्यासकार, ललित निबंधकार, समर्थ संपादक, सैनिक और सफल अध्यापक आदि विविध रूप में अज्ञेय का आदरणीय स्थान है। विपथगा (1937), (परंपरा 1944), अमर वल्लरी (1944), कड़ियाँ तथा अन्य कहानियाँ (1945), कोठरी की बात (1945), शरणार्थी (1948), जयदोल (1951), ये तेरे प्रतिरूप (1961), संपूर्ण कहानियाँ (1975) आदि उनके कहानी संग्रह हैं। अज्ञेय का निधन 4 अप्रैल 1987 को हुआ है।

अज्ञेय की लेखनी से 67 उच्चस्तरीय कहानियाँ मिली हैं। उनकी आरंभकालीन कहानियाँ क्रांतिकारी भावना से ओतप्रोत हैं। उन्हें धीर, वीर, गंभीर कथाकार कहते हैं। उनकी कहानियों में क्रांति का उपज पौरुष, दृढ़ता, अचंचलता, साहस, बलिदान भावना, सर्वत्र समर्पण भावना, प्रगति की पिपासा आदि अनेक गुण एकसाथ मिलते हैं।

अज्ञेय भाषा के धनी हैं। उन्होंने उसका जादू-सा उपयोग किया है। वैसे भावपक्ष और कला पक्ष की दृष्टि में अज्ञेय की कहानियाँ श्रेष्ठतम हैं। निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि आधुनिक हिन्दी के कहानीकारों में अज्ञेय का स्थान शीर्षस्थ है।

उषा प्रियंवदा

उषा प्रियंवदा आधुनिक हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार हैं। उपन्यास और कहानी में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनका जन्म 24 दिसम्बर 1930 को उत्तर प्रदेश के कानपुर में हुआ था। अंग्रेजी में उच्च शिक्षा प्राप्त कर उषा कई साल श्रीराम कॉलेज दिल्ली, इलाहबाद विश्वविद्यालय और अमेरिका के इंएियाना विश्वविद्यालय में अध्यापिका रही थी।

नई कहानी की महिला कथाकारों में उषा प्रियंवदा शीर्षस्थ है। उनका दृष्टिकोण अधिकांशतः स्त्री विमर्श में केंद्रित है। ज़िंदगी और गुलाब के फूल, मेरी प्रिय कहानियाँ, वनवास, एक कोई दूसरा, कितना बड़ा झूठ, संपूर्ण कहानियाँ, शून्य आदि उषा प्रियंवदा के कहानी संग्रह है। वापसी, मछलियाँ और प्रतिध्वनि

उनकी सबसे महत्वपूर्ण कहानियाँ हैं। इसके अलावा उन्होंने कई उपन्यास और नाटक भी लिखे हैं।

उषा प्रियंवदा मध्य वर्गीय वैयक्तिक एवं पारिवारिक जीवन के कहानीकार हैं। उनकी कुछ कहानियों में आधुनिक नगरीय जीवन के विविध पक्ष होते हैं। अकेलापन की मानसिक पीड़ा उनमें ज़बरदस्त है।

उषा प्रियंवदा समकालीन व्यक्ति की दशा और दिशा चित्रित करने में समर्थ है। उनकी कथावस्तु यथार्थ धरातल पर अधिष्ठित हैं।

Critical Overview / अवलोकन

हिन्दी कहानी के विकास-हेतु प्रेमचन्द का समर्पण अद्भुत और अविस्मरणीय है। अपनी अल्पायु में प्रेमचन्द ने 300 कहानियाँ देकर हमें अनुगृहित किया है। अथवा यों कहिए कि प्रेमचन्द से हिन्दी कहानी विकसित हुआ है। कहानी क्षेत्र में जैनेन्द्र, प्रसाद, अज्ञेय और उषा प्रियंवदा का स्थान अद्वितीय है।

आज तक के अनुसंधान से ज्ञात होता है कि हिन्दी कहानी का विकास आश्चर्यजनक है। निष्कर्षतः हम निःसंकोच कह सकता है कि किसी दूसरी भाषा की कहानी के मुकाबला में हिन्दी पूर्ण रूप से समर्थ और सक्षम है।

Recap / पुनरावृत्ति

- आरंभिक काल की कहानियाँ अंग्रेज़ी एवं बंगला की छत्रछाया में पली हैं। हिन्दी कहानी का विकास आधुनिक काल में हुई है
- सन् 1903 में द्विवेदी ने सरस्वती पत्रिका के संपादकत्व ले लिया
- द्विवेदी युग में जयशंकर प्रसाद की पहली कहानी ग्राम का प्रकाशन हुआ
- सरल, सरस, प्रभावशाली खड़ीबोली भाषा द्विवेदी युग की कहानियाँ के मुख्य गुण है
- प्रेमचन्द युग कहानी के सर्वतोन्मुख विकास का युग है
- जैनेंद्र कुमार, सुदर्शन, प्रसाद, कौशिक आदि प्रेमचन्द युग के प्रमुख कहानीकार है
- कथा शिल्पी प्रेमचन्द ने तीन सौ से अधिक कहानियाँ लिखी हैं
- प्रेमचन्द माधुरी, मर्यादा, जागरण, हंस आदि पत्रिकाओं का संपादक रहे थे
- हिन्दी की महिला कहानीकारों में उषा प्रियंवदा, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, कृष्णा सोबती आदि के नाम लिया जाता है
- आधुनिक जीवन के अनुरूप आज कहानी का रूप-भाव भी बदला है
- प्रेमचन्द का संपूर्ण कहानी मानसरोवर-8 भाग में संकलित है
- प्रेमचन्द के बाद के कहानीकारों में गुलेरी, जैनेंद्र कुमार, प्रसाद, यशपाल, अज्ञेय, भीष्म साहनी, स्वयं प्रकाश, उषा प्रियंवदा आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं
- स्वातंत्र्योत्तर कहानी नयी कहानी, सचेतन कहानी, अकहानी, सहज कहानी, सक्रिय कहानी, जनवादी कहानी, समान्तर कहानी आदि नाम में पुकारे जाते हैं

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. वापसी किसकी कहानी है?
2. हिन्दी में प्रेमचन्द की पहली कहानी का नाम क्या है?
3. प्रेमचन्द की अंतिम हिन्दी कहानी का नाम लिखिए ।
4. आकाशदीप - किसकी कहानी है?
5. हिन्दी में आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानीकार के नाम में प्रसिद्ध कहानीकार कौन है?
6. जैनेंद्र कुमार का जन्म कहाँ हुआ है?
7. घीसू और माधव प्रेमचन्द के किस कहानी के पात्र हैं ?
8. अज्ञेय का पूरा नाम क्या है?

Answers उत्तर

1. उषा प्रियंवदा।
2. पंच परमेश्वर।
3. कफन।
4. जयशंकर प्रसाद।
5. प्रेमचन्द।
6. जैनेंद्र कुमार का जन्म 2 जनवरी 1905 को उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ के कौड़ियागंज में हुआ था।
7. कफन।
8. सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन अज्ञेय।

Assignments प्रदत्त कार्य

1. प्रेमचन्द के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दीजिए।
2. जैनेंद्र कुमार के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दीजिए।
3. समझाइए कि जैनेंद्र कुमार और अज्ञेय मनोवैज्ञानिक कहानी के दो शिखर हैं।
4. अज्ञेय जी के प्रमुख कहानियाँ क्या - क्या हैं?
5. प्रेमचन्द की कहानियों की विशेषताएँ लिखिए।
6. कहानीकार जैनेन्द्र कुमार पर टिप्पणि लिखिए
7. उषा प्रियंवदा की कहानी क्यों स्वाभाविक लगती है?
8. प्रसाद की प्रमुख कहानियों के नाम लिखिए।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. कहानी की कहानी - डॉ. इन्दनाथमदान।
2. कथाकार अज्ञेय - डॉ. चंद्रकांत।
3. हिन्दी कहानी का विकास - डॉ. मधुरेश।
4. नईकहानी : उपलब्धि और सीमाएँ - शेखावतगोरधनसिंह।
5. हिन्दी कहानी : पहचान और परख - डॉ. इन्द्रनाथमदान।
6. हिन्दी कहानी और कहानीकार - प्रो. वासुदेव।

BLOCK - 02

हिन्दी की प्रमुख कथाएँ

इकाई : 1
ईदगाह

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी के विख्यात कहानीकार एवं उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द के बारे में समझता है।
- प्रेमचन्द के धर्मनिरपेक्ष मानवीय दृष्टिकोण से परिचय प्राप्त करता है।
- ईद जैसे त्योहार उत्पन्न करने वाले भाईचारा भाव से परिचय प्राप्त होता है।
- प्रेमचन्द के धार्मिक समभाव पर विचार करने का अवसर मिल जाता है।
- छात्रों में धन का मूल्य और उसके सदुपयोग के बारे में चेतावनी जागृत करने का अवसर प्राप्त होता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

प्रेमचन्द

ईदगाह विश्व विख्यात कहानीकार और उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द की एक चर्चित कहानी है। आदर्शोन्मुख यथार्थवादी लेखक प्रेमचन्द का जन्म 31 जुलाई 1880 में काशी के निकट लमही में हुआ था। उनकी रचनाओं में जीवन के विविध पक्षों का अनुपम एवं अद्भुत चित्रण मिलते हैं। उन्होंने बारह उपन्यास और तीन सौ से अधिक कहानियाँ लिखी हैं। प्रेमचन्द ने साहित्य के विविध क्षेत्रों में अपनी अपार निपुणता दिखायी है।

ईदगाह प्रेमचन्द द्वारा लिखी गयी अत्यंत सुंदर कहानी है। इस कहानी में बाल मनोविज्ञान भी शामिल है। इसमें जीवन के कुछ महत्वपूर्ण मूल्यों को एक बालक के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। ईदगाह हिन्दी के अनुपम भाव से ओतप्रोत कहानियों में एक माना जाता है।

ईद एक साधारण त्योहार नहीं है। ईद क्षमा, करुणा, दया, शांति, भाईचारा आदि मानवीय भावनाओं को उद्घोषित करने वाले एक महत्वपूर्ण त्योहार माना जाता है। ईद के अवसर पर करोड़ों मुसलमान अपनी असीम आत्मीय अच्छाई प्रदर्शित करते हैं। मुसलमान रमज़ान महीने के तीस दिन उपवास करते हैं। तीस दिन के उपवास के पश्चात ईद आता है। ईद के दिन मुसलमान एक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जिस जगह पर एकत्र हो कर नमाज अदा करते हैं, उस जगह को ईदगाह कहते हैं।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- ईद रमजान महीने के तीस दिन पश्चात आने वाला त्योहार है।
- ईदगाह एक बाल मनोवैज्ञानिक कहानी है।
- ईदगाह में हामिद के मनोभावों और परिस्थितियों का सूक्ष्म चित्रण हुआ है।
- हामिद कहानी का मुख्य पात्र और नायक है।
- हामिद निर्धन और माता-पिता हीन चार-पाँच वर्ष का बच्चा है।
- हामिद छोटा बच्चा होकर भी बड़ा समझदार है।

Discussion / चर्चा

ईदगाह मनोवैज्ञानिक कहानी है। इसका प्रकाशन चाँद नामक पत्रिका के 1933 अगस्त अंक में हुई है। इसकी पूरी कथा 'ईद' से मिल जुलकर होती है। लगता है कि इसका वातावरण प्रेमचन्द ने गोरखपुर के दरगाह मुबारक खां शहीद मस्जिद के आसपास को उठा लिया है। इस मस्जिद के निकट एक ईदगाह मैदान है। गोरखपुर के अध्यापन के दौरान प्रेमचन्द इस ईदगाह के समीप के एक छोटे मकान पर रहते थे। ईद के अवसर इस ईदगाह के मैदान में मेले होते हैं। प्रेमचन्द कई बार उस मेले में भाग लिया था । ईद में मिले तीन पैसे से खिलौने के बदले अपनी दादी के लिए लोहे का चिमटा खरीदने वाला हामिद को प्रेमचन्द इधर देखा होगा। अथवा इस कहानी की पृष्ठभूमि के रूप में प्रेमचन्द ने अपनी परिचित जगह और पात्रों को ढूँढ लिया है।

रमजान तीस के बाद आज ईद आयी हैं। ईद के आगमन में गाँव भर खुशी उठते हैं। सभी मुसलमान पुरुष ईदगाह जाने की तैयारी में लगे हुए हैं। लड़कों में ईदगाह जाने की सबसे ज्यादा खुशी है। हामिद माता-पिता विहीन चार-पाँच साल का लड़का है। उनके पिता आबिद और माता पहले मर चुके थे। वह अपनी बूढ़ी दादी अमीना के साथ छोटे घर पर रहते हैं। हामिद अपनी दादी अमीना से ईदगाह जाने का हठ कर रहा है।

गाँव से ईदगाह के लिए तीन कोस (कोस दूरी नापने की एक पुराना मापदंड है। एक कोस = 1.60934 किलो मीटर है।) पैदल चलना है। गाँव के बच्चे अपने पिता के हाथ पकड़कर नगर के ईदगाह जाते हैं। किंतु हामिद को यह कैसे संभव? हामिद दादी अमीना की गोद में सोने वाला है। अमीना निर्धन है। वह कहीं छोटी-छोटी सिलाई वगैरह करके पेट के लिए कमाई करती हैं।

हामिद अमीना की आँखों के तारे हैं। थोड़ी देर भी एक-दूसरे को अलग रहना दोनों को संभव नहीं है। अमीना को मालूम है कि बेटे को नये कपड़ा और पाँव में जूते नहीं हैं। उनकी टोपी पुरानी है। सारे बच्चे नये कपड़े और जूते पहन कर बड़ी खुशी में ईदगाह जाने को प्रस्तुत है। नये कपड़े और जूते न होकर भी हामिद बड़ा प्रसन्न है। उनकी प्रसन्नता ईदगाह जाने के कारण होते हैं।

अमीना इस पर दुखी है कि अपने बच्चे जूते के बिना अकेले तीन कोस पैदल चलकर कैसे ईदगाह जायेंगे? उन्हें घर पर सेवैये बनाना है। नहीं तो हामिद को ले कर वह भी जाती। हामिद दादी को वादा देता है कि डरना मत, मैं नमाज पूरा कर सबसे पहले लौटूंगा ।

हामिद अपने मित्र मोहसिना, महमूद, सम्मी, नूरे आदि के साथ ईदगाह के लिए जाते हैं। रास्ते में बच्चे भूतों-प्रेतों के बारे में चर्चा करते हैं। बच्चों में किसी के पास बारह पैसे हैं, किसी के पास पन्द्रह है। हामिद के पास केवल तीन पैसे हैं, जो दादी अमीना कई दिनों से इक्कट्ठा कर उन्हें दिये थे। कम पैसा होकर भी दादी की उदारता पर उन्हें गर्व है।

इमली की घनी छाया के नीचे सजाये ईदगाह में बहुत भीड़ है। पहले आने से पहली पंक्ति में स्थान पाती है। नमाज में लाखों लोग पंक्तिबद्ध होकर एक साथ खड़े हो जाते हैं और एक साथ सिर झुकते हैं। भक्त एक साथ घुटनों के बल पर बैठ जाते हैं। ईदगाह की सम भावना हामिद को अत्यन्त अपूर्व और अद्भुत लग रहा है।

नमाज समाप्त होने पर लोग गले मिलकर स्नेह देते-लेते हैं। ईदगाह के निकट मेले चल रहे हैं। बच्चे मेले पर जाकर झूले में झूलकर और अन्य प्रकार आनन्द पा लेते हैं। मोहसिन, महमूद आदि बच्चे घोड़ों और ऊँटों पर चढ़ कर मज़ा लेते हैं। हामिद अपना तीन पैसा ऐसे अनावश्यक खर्च करना नहीं चाहते हैं। हामिद दूर खड़ा रहता है। हामिद को छोड़कर बाकी बच्चे खिलौने और मिठइयाँ खरीद कर खाते हैं। तब हामिद को थोएी निराशा एवं दुख लगता है। क्योंकि सारे बच्चे मिठाई खाते समय किसी ने भी उन्हें एक भी मिठाई नहीं दी है। तब हामिद के मन में अपने मित्रों के प्रति नाराज पैदा होता है।

हामिद अपने तीन पैसे से कोई उपकारी काम करना चाहते हैं। वह एक दुकान की ओर जाता है और एक लोहे का चिमटा उठाकर उसका दाम पूछता है। दुकानदार चिमटे का छः पैसा बताता है। अंत में वह तीन पैसे में चिमटा खरीद लेता है। हामिद अपने चिमटा सिपाही के बंदूक के समान कंधे पर रख देता है।

ग्यारह बजे में सब लोग ईदगाह से गाँव लौटते हैं। रास्ते में बच्चे हामिद को विजेता कहते हैं। क्योंकि बाकी सभी बच्चे मिट्टी की छोटे-बडे खिलौना खरीदे हैं। हामिद उसे अनुपयोगी चीज साबित करते हैं। अर्थात हामिद चिमटा खरीदकर सभी के आगे नायक बन जाते हैं। हामिद का भरोसा था कि उसका

चिमटा देखकर दादी अमीना खुश हो जायेगी ।

ईदगाह से घर लौटते-लौटते बच्चों की मिट्टी की खिलौने एक-एक होकर गिरकर टूट पड़े। लोहे के होने से हामिद के चिमटे की कोई हानि नहीं होती। हामिद के हाथ पर चिमटा देखते ही अमीना के भाव बदल जाते हैं। वह बडे गुस्से से पूछते हैं कि तुम्हें खरीदने को और कोई चीज़ नहीं मिला? बाकी बच्चे खिलौना खरीदकर या मिठाई खाकर मज़ा लेते हैं। तुमने अन्य बच्चों की तरह खाया-पिया क्यों नहीं? दादी अमीना के सम्मुख हामिद ने अपराधी भाव से कहा - तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने इसे लिया । यह सुनते ही अमीना का क्रोध स्नेह में बदल जाता है। हामिद के असीमित स्नेह के आगे अमीना का मन गदगद हो जाता है। वह आँसू बहाते हुए हामिद को आलिंगन कर दुआएँ देती हैं।

ईदगाह प्रेमचन्द की बालक-मनोविज्ञान पर आधारित प्रतिनिधि कहानी है। इसमें ईद के त्योहार के आधार पर अभाव ग्रस्त ग्रामीण मुस्लिम परिवार का चित्रण किया गया है। अभाव ग्रस्त बालक बचपन में ही बडों के समान समझदार हो जाता है। कहानी में नायक हामिद का चरित्र इसका उदाहरण है। हामिद के चिमटे के माध्यम से कहानीकार ने श्रम का महत्व एवं सौंदर्य का भी उद्घाटन किया है।

Critical Overview / अवलोकन

ईदगाह की पूरी कहानी हामिद के चरित्र के इर्द-गिर्द घूमती-फिरती हैं। हामिद एक उज्ज्वल चरित्र है। वह एक विशेष स्वभाववाला बालक है। उसमें बालक सुलभ निष्कलंकता, आशा, आकांक्षा, जिज्ञासा, बड़ों के प्रति आदर-सम्मान भाव, समझदारी आदि सभी गुण विद्यमान हैं। हामिद की अपनी इच्छाएँ हैं, लेकिन वह उसे मन पर दबा देता है।

हामिद मात्र एक बच्चा नहीं है, वह एक उज्ज्वल चरित्र है। उसके माता-पिता नहीं हैं। बूढ़ी दादी अमीना ही उनकी एकमात्र अभिभावक है। वह अनपढ़ ग्रामीण औरत है। अशिक्षित होकर भी अमीना का व्यवहार शिक्षित से उच्चतर है। तात्पर्य यह है कि हामिद के माता-पिता की मृत्यु की खबर अमीना छिपा रखती है। यहाँ कहानीकार ने मनोवैज्ञानिक शैली अपनायी है। हामिद और अमीना यहाँ के करोड़ों निस्सहाय-निरवलंबों का प्रतिनिधित्व करती है।

Recap / पुनरावृत्ति

- ईद ग्रामीण परिवेश में
- ईदगाह की सजावट
- ईद का मुख्य संदेशा - आत्मसमर्पण तथा भाईचारा
- हामिद का विवेक और समझदारी
- माता-पिता हीन बच्चे की मनोदशा
- विवेक और सामर्थ्य आयु के अनुसार नहीं बनते हैं
- हामिद चिमटा खरीदकर व्यक्त करने वाली सच्चाई - पैसा का सदुपयोग
- कहानी में मनोविज्ञान का प्रयोग
- ईदगाह कहानी की अच्छाई-बुराई
- परंपरागत त्योहार - अपनी दृष्टि में
- प्रेमचन्द का आदर्शोन्मुख-यथार्थवाद
- प्रेमचन्द का सामाजिक दृष्टिकोण
- प्रेमचन्द की धर्मनिरपेक्ष भावना
- ईदगाह कहानी की भाषा-शैली

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. ईदगाह कहानी के रचनाकार हैं ?
2. प्रेमचन्द का जन्म कहाँ हुआ था?
3. प्रेमचन्द का वास्तविक नाम क्या है ?
4. प्रेमचन्द की मातृभाषा क्या थी?
5. ईदगाह का प्रकाशन कब हुआ?
6. ईदगाह का नायक पात्र कौन है?
7. ईदगाह किस शैली की कहानी है?
8. दुकानदार ने हामिद को पहली बार चिमटे की कीमत कितने बताई थी?
9. हामिद ने चिमटा कितने पैसे में खरीदा?
10. मेले में जाते समय हामिद के पास कितने पैसे थे?

Answers उत्तर

1. मुंशी प्रेमचन्द।
2. लमही नामक गाँव में 31 जुलाई 1880 ई, एक साधारण परिवार में हुआ था।
3. धनपत राय।
4. उर्दू।
5. 1933।
6. बालक हामिद।
7. बालमनोवैज्ञानिक।
8. छः पैसा।
9. तीन पैसा ।
10. तीन पैसा ।

Assignments प्रदत्त कार्य

1. ईदगाह की मनोवैज्ञानिकता पर विचार कीजिए ।
2. ईदगाह के आधार पर एक पटकथा तैयार कीजिए ।
3. हामिद के चरित्र की मुख्य विशेषताएँ व्यक्त कीजिए ।
4. अमीना की स्वभावगत विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए ।
5. ईदगाह का वर्णन संक्षेप में कीजिए ।
6. ईदगाह कहानी की विषय वस्तु क्या है?
7. ईदगाह कहानी के लिए यह शीर्षक क्या उचित है?
8. ईदगाह कहानी में हामिद का स्थान निर्धारित कीजिए ।

9. हामिद के साथ गए बच्चों ने मेले से क्या खरीदा?

10. हामिद ने अपने चिमटे को सबसे बेहतर कैसे साबित किया?

इकाई : 2

वापसी

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी कहानी की महिला लेखिकाओं में उषा प्रियंवदा का परिचय प्राप्त करता है।
- आधुनिक काल की सुप्रसिद्ध कहानीकार उषा प्रियंवदा के व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचय प्राप्त करता है।
- मध्य वर्गीय परिवारों में उत्पन्न होने वाली स्वार्थ चिंता से परिचय प्राप्त करता है।
- समकालीन समाज में टूट जाने वाले पितृ-पुत्र संबंध की दर्दनाक चित्र का परिचय प्राप्त करता है।
- पिता पर संतान द्वारा किये जानेवाले अमानवीय व्यवहारों की वास्तविकता समझता है।
- वापसी हर प्रकार के संबंधों की वापसी है, वह सहनीय नहीं है- यह समझता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

आधुनिक हिन्दी साहित्य में उषा प्रियंवदा का उल्लेखनीय स्थान है। उनकी कहानियों में व्यक्ति की दशा और दिशा खूब जीवंत है। सामाजिक और पारिवारिक जीवन से संबंधित उनकी कहानियाँ पाठकों को सहजता और संवेदनशीलता प्रदान करती हैं। उषा प्रियंवदा की कहानियाँ यथार्थ बोध पर अधिष्ठित है, जो पाठक को प्रभावित करने को लायक है।

वापसी उषा प्रियंवदा की चर्चित कहानी है। इसका प्रकाशन अगस्त 1960 में हुआ था। यह वापसी एक सामाजिक तथा पारिवारिक कहानी है। नयी कहानी में भावपक्ष और कलापक्ष की दृष्टि में वापसी का विशिष्ट स्थान है। इसमें मानवीय संबंधों की सफलता एवं विफलता जितनी सच्चाई के साथ चित्रित है, उतना अन्यत्र दुर्लभ है। वापसी स्वातंत्र्योत्तर काल की एक आदर्श निष्ठ, यथार्थवादी कहानी है।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- उषा प्रियंवदा आधुनिक हिन्दी के ख्याति प्राप्त रचनाकार है।
- उषा प्रियंवदा सामाजिक-पारिवारिक कहानीकार के रूप में प्रसिद्ध है।
- वापसी अगस्त 1960 में प्रकाशित कहानी है।
- वापसी का मुख्य चर्चा विषय मानवीय संबंधों की शिथिलता है।
- वापसी में पुराने और आधुनिक पीढ़ी के लोगों के मानसिक एवं शारीरिक संघर्ष चित्रित है।

Discussion / चर्चा

वापसी उषाप्रियंवदा की प्रसिद्ध एवं चर्चित कहानी है। जिसमें बदलते पारिवारिक जीवन और सामाजिक मूल्यों का मार्मिक और स्वाभाविक चित्रण हुआ है।

वापसी कहानी का मुख्य पात्र है गजाधर बाबू। गजाधर बाबू के कुल चार बच्चे थे। बड़ा बेटा अमर, छोटा बेटा नरेंद्र, बड़ी बेटी कांति तथा छोटी बेटी बसंती है। वह पैंतीस साल की रेलवे की नौकरी से रिटायर होकर घर पहुँचे। जीवन के अच्छे दिन उन्होंने अकेले रहकर काटे थे। अपने परिचित वातावरण को

छोड़ जाने की वेदना होते हुऐ भी अपनी पत्नी और बाल बच्चों के साथ हंसी- खुशी और आराम के साथ बिताने की उत्कृष्ट अभिलाषा से वे घर पहुँचे, लेकिन उन्होंने देखा कि परिवार के किसी भी सदस्य को उनके आगमन पर उत्साह नहीं है।

गजाधर बाबू देखते हैं कि पत्नी भी उनसे उदासीन हो गयी है। बच्चों के मन में भी उनके लिए कोई श्रद्धा, प्रेम या सम्मान नहीं है। बैठक में उनके लिए एक चारपाई डालकर एक अस्थाई प्रबंध करता है। पत्नी हमेशा किसी न किसी बात को लेकर शिकायत करती रहती है। जब वे घर की व्यवस्था करने लगे तो बच्चों को अच्छे नहीं लगते हैं।

बडा बेटा अमर पहले घर का मालिक बना हुआ था। उसे कुछ असुविधा होने लगती है और वह घर से अलग होने का विचार प्रकट करते हैं। इससे उस स्नेही पिता का हृदय टूट जाता है। अपनी सहेली षीला के यहाँ जाने केलिए निकली बसंती को गजाधर बाबू मना करते हैं, और इससे वह पिता से बोलना ही बंद करती है।

अगले दिन सबेरे वे घूमने के बाद आऐ तो उनकी चारपाई जो पहले बैठक में डाली गयी थी, वह पत्नी के कमरे में कनस्तरों और अन्य सामानों के बीच डाली पायी। फिर वे किसी से कोई शिकायत नहीं करते हैं। लेकिन कुछ दिन के बाद पत्नी ने नौकर की शिकायत की तो वे नौकर को छोड़ देते हैं। इसपर परिवार के सभी लोग उनसे अप्रसन्न होते हैं। बडा लडका अमर यहाँ तक कह देता है कि - 'बूढे आदमी है, चुपचाप पडे रहें'

गजाधर बाबू को लगता है कि घर में वे पराये हो गये हैं। उनके सबसे बडा दुख पत्नी में आये परिवर्तन को देखकर होता है।

इस महत्वहीन वातावरण से बचने केलिए वे सेठ रामजीवन की चीनी मिल में नौकरी स्वीकार कर चले जाते हैं। वे पत्नी से साथ चलने केलिए पूछते हैं। लेकिन पत्नी अपनी गृहस्थी, रसोई और अपने बच्चों के बिना जीवन की कल्पना ही नहीं कर सकती। दुखी मन से गजाधर बाबू घर से रवाना होते हैं। उनके वापस जाने पर घर के सभी लोग खुश होते हैं।

वापसी पारिवारिक विघटन की कहानी है। इसमें एक ओर पारिवारिक संबंधों की टूटने का चित्रण हुआ है, तो दूसरी ओर यह पीढियों के अन्तराल की कहानी भी है। इस पारिवारिक तनाव के चित्रण में वापसी शीर्षक उचित है। जब गजाधर बाबू चीनी मिल में नौकरी स्वीकार कर चले जाने के लिए तैयार होते हैं, तो बडे उत्साह के साथ बच्चे पिता के जाने की तैयारी करते हैं। लेकिन परिवार के साथ रहने की मधुर कल्पना लेकर गजाधर बाबू जब नौकरी से रिटायर होकर घर पहुँचते हैं तो वह भरे पूरे परिवार में अपने को अजनबी पाते हैं, तथा अब उदास हृदय के साथ वापस जाते हैं। उनकी उस वापसी पर पाठकों का हृदय भी विकलित हो उठता है।

पारिवारिक संबंधों में आये यँात्रिकता और ठंडेपन को सच्चाई के साथ इस कहानी में व्यक्त किया गया है। इस दृष्टि से उषा प्रियंवदा की वापसी कहानी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्रस्तुत कहानी की भाषा इसकी कथानक और चरित्र के अनुकूल हैं। इसकी भाषा सरल और सहज है, जो दैनिक जीवन में उपयोग पर लाती हैं। इसकी भाषा तत्सम तथा गतिशील भी है।

वापसी उद्देश्य निष्ठ कहानी है। इसमें संयुक्त परिवार के विघटन का छोटे-मोटे कारणों को रेखांकित करना कहानीकार का मुख्य उद्देश्य है। आलोच्य कहानी में नयी पीढ़ी के हृदय हीन संघर्ष का चित्रण हुआ है। नयी पीढ़ी कुछ परंपरागत मूल्यों-मान्यताओं को त्यागकर आगे जाने के इच्छुक है। आजकल स्वार्थता ज्यादा और निस्वार्थता कम दिखायी पड़ता है। माता-पिता-संतान आदि सब अपनी-अपनी लाभ पूर्ति के विचार में डूबे हुए हैं। पारिवारिक जीवन की सफलता और विफलता परिवार में रहने वाले सदस्यों की प्रवृत्ति पर आधारित है। परिवार के सदस्य एक-दूसरे को जानता-मानता न तो शिथिलता अवश्य हो जायेगी ।

Critical Overview / अवलोकन

वापसी पारिवारिक जीवन की विडंबनाएँ रेखांकित करनेवाली कहानी है। समकालीन समाज में पारिवारिक जीवन संकुचित एवं स्वार्थपरता पर डूबा हुआ है। वापसी में मानव जीवन का अत्यन्त सूक्ष्म क्रिया-कलापों पर निरूपण हुआ है। विवेच्य कहानी के केन्द्र पात्र गजाधर बाबू जीवन के अधिकांश समय परिवार से अलग रहा हुआ व्यक्ति है। यह उनका परिवार के विघटन का एक कारण बन जाता हैं।

Recap / पुनरावृत्ति

- वापसी का मुख्य पात्र गजाधर बाबू है
- गजाधर पैंतीस साल रेलवे में नौकरी करने के बाद सेवानिवृत्त होकर घर लौटते हैं
- गजाधर बाबू के आगे पूर्ण रूप में बदला हुआ घर उपस्थित होता है
- गजाधर के मन में क्वॉर्टेस के पड़ोसी गणेशी तथा उनके परिवार उपस्थित होता है
- गणेशी पिछले कई सालों से गजाधर को प्यार से खिलाते-पिलाते थे
- गजाधर बाबू के प्रति घर के सभी लोग एक साथ अपनी-अपनी स्वार्थता उतारती है
- अपने प्रयत्न से बनाये घर पर गजाधर बाबू को अनचाहा अतिथि बनकर रहना पड़ता है
- गजाधर बाबू को घर पर रहने को कमरा तक नहीं मिलता है
- गजाधर बाबू को लगता कि वह घरवालों के धनोपार्जन का निमित्त मात्र है
- गजाधर बाबू के शिक्षित बच्चे अपने-अपने इच्छानुसार चलते हैं
- गजाधर बाबू के घर का पूरा माहौल उनके प्रतिकूल उपस्थित होता है
- गजाधर पत्नी-बच्चों के साथ आराम चाहते हैं, पर वह उन्हें अनुपलब्ध है
- गजाधर को घर से आदर-सम्मान नहीं मिलता है
- गजाधर बाबू का मन विक्षुब्ध है, वह भीतर ही भीतर रोता है
- गजाधर अनमने रेलवे क्वॉर्टर्स के पास के रामजी लाल चीनी मिल में नौकरी स्वीकार कर लौटते हैं

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. गजाधर बाबू कितने साल रेलवे में काम किये थे?
2. गजाधर बाबू के कुल कितने बच्चे थे?
3. वापसी कहानी के नायक कौन हैं?
4. वापसी कहानी के लेखक कौन हैं?
5. गजाधर बाबू कहाँ काम करता था?
6. गजाधर बाबू किस नौकरी से सेवानिवृत्त हुए थे?
7. गजाधर बाबू ने अपनी नौकरी में कितने वर्ष अकेले व्यतीत किए थे?
8. वापसीकिस विधा की रचना है?

Answers उत्तर

1. पैंतीस साल (35)
2. कुल चार बच्चे थे।
3. गजाधर बाबू ।
4. उषा प्रियंवदा ।
5. रेलवे में ।

6. रेलवे स्टेशन मास्टर ।
7. 35 वर्ष ।
8. मध्यवर्गीय - पारिवारिक कहानी ।

Assignments प्रदत्त कार्य

1. वापसी कहानी के माध्य से मध्यम वर्गीय परिवार की विवशताएँ स्पष्ट कीजिए।
2. पारिवारिक शिथिलता के मुख्य कारणों पर एक आलेख लिखिए।
3. गजाधर एवं गणेशी के संबंध के आधार समझाइए कि मित्रता सबसे बड़ी संपत्ति है।
4. पारिवारिक एकता के लिए युवकों का दायित्व - विषय में एक भाषण तैयार कीजिए।
5. उषा प्रियंवदा के व्यक्तिव और कृतित्व का परिचय दीजिए।
6. वापसी के माध्यम से मध्य वर्गीय परिवार की समस्याओं पर प्रकाश डालिए।
7. वापसी कहानी के शीर्षक के औचित्य पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
8. वापसी कहानी के माध्यम से गजाधर बाबू का चरित्र-चित्रण कीजिए ।
9. वापसी की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. मानसरोवर - प्रेमचन्द ।
2. प्रेमचन्द : एक तलाश - डॉ. श्रीराम त्रिपाठी ।
3. नयी कहानी भूमिका - कमलेश्वर ।
4. वापसी - उषा प्रियंवदा ।
5. नई कहानी : उपलब्धि और सीमाएँ - डॉ. गोवरधन सिंह ।
6. कितना बड़ा झूठ - उषा प्रियंवदा ।
7. बीसवीं शताब्दी का हिन्दी साहित्य - डॉ. विजयमोहन सिंह

BLOCK - 03

गद्य का उद्भव और विकास

इकाई : 1

गद्य के प्रकार

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी गद्य साहित्य की विविध विधाओं के आविर्भाव के बारे में परिचय प्राप्त करता है।
- गद्य साहित्य की विविध विधाओं के विकास से परिचय प्राप्त करता है।
- आधुनिक काल के गद्य साहित्य से परिचय प्राप्त करता है।
- आधुनिक काल के प्रमुख गद्यकार और उनके ग्रंथों का परिचय प्राप्त करता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी साहित्य के इतिहास में आधुनिक या गद्य काल सचमुच विकास का काल है। इस काल में गद्य का वास्तविक उद्भव ही नहीं, उसका सर्वतोमुखी विकास भी हुआ है। हिन्दी आज विश्व की उच्चस्तरीय भाषा है। इसका साहित्य समृद्ध एवं सर्वव्यापी है। आधुनिक हिन्दी साहित्य की संपन्नता के पीछे अनेक लेखकों व पंडितों का कठिन परिश्रम परिलक्षित है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामचंद्र शुक्ल, हज़ारी प्रसाद द्विवेदी जैसे आचार्यो, लल्लूलाल, सदल मिश्र, प्रेमचन्द, यशपाल, अज्ञेय, नामवर सिंह, रामविलास शर्मा जैसे लेखकों, हरिऔध, प्रसाद, निराला, अज्ञेय, महादेवी वर्मा के जैसे रचनाकारों के प्रयत्न से हिन्दी साहित्य विक्सित एवं समृद्ध हुए हैं।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- हिन्दी में गद्य का उद्भव।
- मुम्बई में सन् 1875 में स्थापित आर्य समाज गद्य के विकास के लिए सहायक बना।
- राजा राममोहन राय कृत वेदांत सूत्रों का हिन्दी अनुवाद हिन्दी गद्य के विकास के लिए अनुकूल वातावरण पैदा किया।
- गद्य साहित्य के विकास के लिए ईसाई मिशनरियों का योगदान महत्वपूर्ण है।
- हिन्दी के आरंभिक गद्यकार लल्लूलाल और सदल मिश्र फोर्ट विलियम कॉलेज के अध्यापक थे।
- हिन्दी गद्य साहित्य की विविध विधाएँ।
- भारतेन्दु युग में गद्य।
- द्विवेदी युग में गद्य।
- रामचन्द्र शुक्ल युग में गद्य।
- शुक्लोत्तर युग में गद्य।
- हिन्दी में उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी आदि के विकास।

Discussion / चर्चा

साहित्य गद्य और पद्य के रूप में दो प्रकार के होते हैं। पद्य छंद बद्ध है। इसलिए साधारणतः छंद, अलंकार जैसे काव्यगत नियमों का पालन करता है। गद्य छंद मुक्त है। इसलिए बड़ी आसानी से बोल या लिख सकते हैं। गद्य तो पद्य की तुलना में सरल, सहज, आसान और व्यवहारिक भाषा है। गद्य को अंग्रेजी में Prose कहते हैं। गद्य में छंद, अलंकार, रस योजना आदि काव्य संबंधी नियमों के पालन करने की आवश्यकता नहीं है।

भारत में गद्य का विकास अंग्रेजों के आने के बाद हुआ है। गद्य वाक्य बद्ध तथा विचारात्मक रचना है। इसमें मनुष्य अपनी चेष्टाएँ, कल्पनाएँ, मनोभाव, सोच-विचार आदि सरलता से प्रकट कर सकता है। इसलिए आधुनिककाल में गद्य, अभिव्यक्ति का सबसे शक्तिशाली माध्यम हो चुका है।

हिन्दी में गद्य साहित्य आधुनिक काल की उपज है। जब तक राजा-महाराजाओं का शासन जोरों पर था, तब तक पद्य की प्रबलता थी। पद्य दैनिक जीवन में आदान-प्रदान का अनायास माध्यम था। जब जन साधारण को व्यवहारिक स्तर पर आदान-प्रदान के आवश्यक माध्यम की ज़रूरत पड़ी, तब से गद्य का विकास आरंभ हुआ है। अंग्रेजों का आगमन, कोलकत्ता में फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना, छपाई यंत्रों की स्थापना, कई पत्र-पत्रिकाओं का आरंभ आदि हिन्दी गद्य साहित्य के विकास के मुख्य कारणों में कुछ हैं। अब हिन्दी में गद्य साहित्य किसी भी भारतीय भाषा के पीछे नहीं है। आजकल कंप्यूटर, इंटरनेट आदि के द्वारा हिन्दी गद्य निरंतर विकासशील है।

हिन्दी के की विभिन्न गद्य विधाएँ

मनुष्य के भावों और विचारों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति गद्य से संभव होती है। इसलिए सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, साहित्यिक एवं वैज्ञानिक सभी विषयों के लिखने का माध्यम गद्य बन गया है। गद्य अभिव्यक्ति का सबसे सरल-सहज माध्यम है। गद्य से तात्पर्य है कहना अथवा बोलना।

हिन्दी में गद्य साहित्य एक आधुनिक विधा है। गद्य कई प्रकार के होते हैं। साहित्य के विकास के साथ-साथ विविध गद्य विधाएँ हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में शामिलहो गये। शुक्लोत्तर युग में अधिकाँश गद्य विधाएँ विकसित हो गयीं। उपन्यास, नाटक, एकांकी, कहानी, निबंध और आलोचना आदि आरंभिक गद्य विधाएँ हैं।

हिन्दी में उपन्यास

उपन्यास को अंग्रेजी में Novel कहते हैं। हिन्दी में उपन्यास का वास्तविक आरंभ अंग्रेज़ी साहित्य के संपर्क से हुआ है। संसार में पहले पहल उपन्यास का आविर्भाव और विकास यूरोप में हुआ था। हिन्दी का पहला उपन्यास और उपन्यासकार का नाम विवादस्पद है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल एवं अधिकतर विद्वान लाला श्रीनिवास दास सन् 1882 में लिखा गया 'परीक्षा गुरु' को हिन्दी का पहला उपन्यास मानते हैं। उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार हैं। उन्होंने हिन्दी उपन्यास के रूप और भाव को पूर्ण रूप में बदल दिया है। उन्होंने हिन्दी में सन् 1906 में 'प्रेमा' नामक उपन्यास प्रकाशित किया है। इसके बाद उन्होंने बारहउ पन्यास लिखे हैं। सन् 1936 में कृत 'मंगलसूत्र' (अपूर्ण) प्रेमचन्द का अंतिम उपन्यास है। उनके गोदान विश्व साहित्य के महान उपन्यासों में एक है।

हिन्दी में कहानी

हिन्दी में कहानी आधुनिककाल की उपज है। हिन्दी की आरम्भिक कहानियाँ मात्र मनोरंजन को ध्यान में रखकर लिखी प्रतीत होती हैं। हिन्दी के प्रारम्भिक समय के कहानीकारों में लल्लूलाल (प्रेम सागर), सदल मिश्र (नासिकेतोपाख्यान), इंशा अल्ला खाँ (रानी केतकी की कहानी) आदि के नाम सर्वोपरी है। सन् 1900 में किशोरीलाल गोस्वामी कृत इन्दुमति नामक कहानी सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हुई। इन्दुमति को हिन्दी के प्रथम प्रामाणिक, मौलिक कहानी मानी जाती है।

हिन्दी में नाटक

हिन्दी में नाटक का सही विकास उन्नीसवीं सदी में, भारतेन्दु युग में हुआ है। आरंभ काल में हिन्दी नाटक संस्कृत नाटकों की परंपरा का विकसित रूप रहा था। भारतेन्दु से पूर्व ब्रजभाषा में प्राणचंद चौहान ने रामायण महानाटक शीर्षक नाटक लिखा है। इसके बाद बनारसी दास जैन ने समय सार नाटक, विश्वनाथ सिंह ने आनंद रघुनंदन आदि नाटक लिखे हैं। सन् 1610 से लेकर सन् 1850 तक करीब 14 नाटक लिखे हैं। भारतेन्दु हरिश्चंद्र के अनुसार सन् 1873 में बाबू गोपाल चंद्र गिरिधरदास द्वारा रचित नहुष हिन्दी का पहला नाटक माना जाता है ।

जयशंकर प्रसाद हिन्दी के युग प्रवर्तक नाटककार है। प्रसाद ने विशाखदत्त, अजातशत्रु, जनमेजय का नागयज्ञ, एक घूंट, कामना, स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी जैसे अनेक नाटक

लिखकर साहित्य में चिर प्रतिष्ठा पायी है।

रिपोर्ताज

रिपोर्ताज शब्द का अर्थ होता है सरस और भावात्मक अंकन। रिपोर्ताज को अंग्रेज़ी में Report कहते हैं। किसी परिपाटी, घटना, संस्था आदि की कलात्मक रीति में तैयार करने वाले विवरण को रिपोर्ताज कहते हैं। रिपोर्ताज गद्य की आधुनिक विधा है। हिन्दी में कई महान रिपोर्ताजकार है। धर्मवीर भारती, प्रकाशचन्द्र गुप्त, उपेन्द्रनाथ अश्क, प्रभाकर माचवे, रामनारायण उपाध्याय, विष्णुकान्त शास्त्री, उदयन शर्मा, अमृतराय, निर्मल वर्मा, विष्णु प्रभाकर, अमृतराय आदि रिपोर्ताजकार के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

गद्य काव्य या गद्य गीत

गद्य काव्य आधुनिक साहित्य विधा है। जीवन की किसी सघन अनुभूति को आकर्षक तथा भावपूर्ण गद्य में प्रस्तुत करने को गद्य काव्य कहते हैं। रसात्मकता, कलात्मकता, भावात्मक और चमत्कार आदि गद्य काव्य की प्रमुख विशेषताएँ हैं। रामवृक्ष बेनीपुरी, रायकृष्णदास, वियोगी हरि आदि हिन्दी के गद्य काव्यकारों में प्रमुख हैं।

भेंटवार्ता

भेंटवार्ता को साक्षात्कार भी कहते हैं। अंग्रेज़ी में यह इण्टरव्यू नाम से जाना जाता है। यह मुख्य रूप से पत्रकारिता से संबंधित विधा है। हिन्दी में भेंटवार्ता का विकास आधुनिक काल में हुआ है। किसी महान व्यक्ति के पास रहकर प्रश्नों के द्वारा उनके जीवन, आदर्श, दृष्टिकोण, व्यवहार आदि समझकर भेंटवार्ता तैयार की जाती है। हम जिस व्यक्ति को नजदीक से जानना चाहते हैं, उनके निकट की बातें समझने के लिए भेंटवार्ता सहायक हो जाती है। आजकल भेंटवार्ता सबसे से ज्यादा टेलीविज़न में देखने को मिलती हैं। राजेन्द्र यादव, शिवदान सिंहचौहान, पद्मसिंह शर्मा कमलेश आदि हिन्दी भेंटवार्ता लेखकों में प्रमुख हैं।

डायरी

डायरी लेखन गद्य साहित्य की एक विशेष विधा है। प्रतिदिन की घटनाएँ तिथि के अनुसार लिखने को डायरी लेखन कहते हैं। प्रतिदिन जीवन में घटित घटनाएँ डायरी की विषय-वस्तु बन जाती हैं। लेखक उसका क्रमिक वर्णन करता है। डायरी लेखन में कल्पना का कोई स्थान नहीं है। दैनंदिन जीवन में जो घटित हो, उसे वैसे ही लिख सकते हैं। तात्पर्य यह है कि अवास्तविक बातों को डायरी में तनिक भी स्थान न दें। गाँधीजी द्वारा लिखी गयी डायरी हिन्दी की सर्वप्रथम प्रौढ़-गंभीर डायरी मानी जाती है। हिन्दी की डायरी लेखन में रामधारी सिंह दिनकर, धीरेन्द्रवर्मा, शमशेर बहादुर सिंह, मोहन राकेश आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

पत्र साहित्य

पत्र को अंग्रेजी में Letter कहते हैं। पत्र-लेखन पूर्ण रूप में वैयक्तिक है। सहजता एवं सरलता पत्र लेखन का सबसे बड़ा गुण होना चाहिए। पत्र के हर शब्द में उसके लेखक का व्यक्तित्व देखने को मिलता है। पत्र आत्म प्रकाशन का महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली साधन है।

पत्र लेखन दो व्यक्तियों के बीच चलते हैं। इसलिए पत्र-लेखक को अपने पत्र पढ़ने वाले को ध्यान में रखकर पत्र लिखना चाहिए। कुछ पत्र समाज एवं व्यक्ति के लिए अत्यंत लाभदायक होता है। गांधीजी द्वारा समय-समय पर लिखे गए पत्र, नेहरु द्वारा अपनी बेटी इंदिरा गांधी को लिखे गये पत्र (पिता के पत्र पुत्री के नाम) आदि साहित्यिक एवं सामाजिक दृष्टि में उच्च स्थान पर विराजते हैं।

आलोचना

आलोचना या समीक्षा आधुनिक साहित्यिक विधा है। किसी साहित्यिक कृति या रचना को भली-भाँति पढ़कर उसका मूल्यांकन करने को साहित्य में आलोचना कहते हैं। साहित्य जीवन की व्याख्या है। आलोचना साहित्य की व्याख्या है। आलोचना वास्तव में साहित्य कृति और पाठक के बीच का पुल है। आलोचना करने वाले को आलोचक कहते हैं। आलोचक का कर्तव्य किसी पक्षपात के बिना रचना का मूल्यांकन करना होता है। जिससे रचना की अच्छाई-बुराई से पाठक को सही जानकारी प्राप्त होती हैं।

हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, गुलाबराय, रामविलास शर्मा, नामवर सिंह, नन्ददुलारे वाजपेयी, नगेन्द्र आदि प्रमुख आलोचक हैं।

Critical Overview / अवलोकन

- गद्य को पद्य का विकसित रूप माना जाता है।
- गद्य अभिव्यक्ति का सबसे शक्तिशाली माध्यम है।
- शुक्लोत्तर युग में गद्य साहित्य का सर्वोच्च विकास हुआ है।

Recap / पुनरावृत्ति

- हिन्दी में गद्य साहित्य आधुनिक विधा है
- साधारण बातचीत में प्रयोग करने वाले शब्दार्थ युक्त भाषा गद्य कहलाते हैं
- गोकुलनाथ कृत चौरासी वैष्णवन की वार्ता ब्रजभाषा की आरंभिक गद्य रचना है
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आधुनिक काल का नाम गद्य काल घोषित किया है
- साधारण बातचीत में प्रयोग करने वाले शब्दार्थ युक्त भाषा गद्य कहलाते हैं
- हिन्दी के गद्य का विकास पाँच कालों में विभक्त है
- आधुनिक गद्य का पितामह भारतेन्दु हरिश्चंद्र है
- भारतेन्दु के कविवचन सुधा, हरिश्चन्द्र मैगजीन एवं हरिश्चंद्र पत्रिका गद्य के विकास का निदान रहा है
- प्रयाग से 1900 में निकली सरस्वती पत्रिका ने हिन्दी गद्य के विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है
- द्विवेदी युग से हिन्दी कहानी का सही विकास माना जाता है
- प्रेमचन्द द्विवेदी युग के महान लेखक है
- शुक्ल युग हिन्दी गद्य का तृतीया चरण है
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कृत चिंतामणि शुक्ल युग की सर्वश्रेष्ठ रचना है
- कहानी एवं उपन्यास क्षेत्र में प्रेमचंद सम्राट रहा है
- रामप्रसाद निरंजनी 1741 में कृत भाषायोगवशिष्ट खड़ीबोली के पहला प्रौढ़ गद्य है
- अंग्रेजों ने भाषा-अध्ययन के लिए कोलकत्ता में 10 जुलाई 1800 में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की है
- गद्य कई प्रकारके होते हैं, जिनमें कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, आलोचना, निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र, व्यंग्य, यात्रा वृत्तांत, डायरी, आलोचना, भेंटवार्ता आदि मुख्य है
- इसमें उपन्यास, नाटक, एकांकी, कहानी, निबंध, आलोचना आदि आरंभ काल की गद्य विधाएँ हैं
- साहित्य के विकास के साथ-साथ समय-समय पर संस्मरण, रेखाचित्र, व्यंग्य, यात्रा वृत्तांत, डायरी, भेंटवार्ता, आत्मकथा, जीवनी, रिपोर्ताज, गद्य काव्य, भेंट, पत्र साहित्य आदि विधाएँ गद्य क्षेत्र में शामिल हो गये
- व्यंग्य, आत्मकथा, रिपोर्ताज, डायरी, पत्र साहित्य, भेंट वार्ता आदि के विकास द्विवेदी युग एवं शुक्ल युग में हुआ
- शुक्लोत्तर युग में भेंटवार्ता, विद्रूप लेखन जैसी गद्य विधाएँ विकसित हो गयी
- उपन्यास, नाटक, एकांकी, कहानी, निबंध और आलोचना जैसी आरंभिक गद्य विधाएँ अपने आप में एक-दूसरे से स्वतंत्र अस्तित्व रखती हैं

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. गद्य तात्पर्य क्या है?
2. आधुनिक गद्यके पितामह कौन है?
3. किस युग में अधिकांश गद्य विधाएँ विकसित हो गयीं?
4. हिन्दी गद्य के विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली पत्रिका कौन सी है?
5. सरस्वती पत्रिका कब और कहाँ से निकली है?
6. कौन से युग में गद्य साहित्य का सर्वोच्च विकास हुआ है?

7. कहानी एवं उपन्यास क्षेत्र के सम्राट कौन हैं?
8. हिन्दी के प्रथम मौलिक उपन्यास के नाम बताइए ।
9. हिन्दी के प्रथम मौलिक उपन्यास के रचनाकार कौन हैं?
10. किशोरीलाल गोस्वामी द्वारा लिखी इन्दुमति का प्रकाशन कब हुआ?
11. बड़े घर की बेटी कहानी के रचयिता कौन हैं?
12. हिन्दी में नाटक का विकास कब से माना जाता है?
13. हिन्दी के युग प्रवर्तक नाटककार कौन हैं?

Answers उत्तर

1. साधारण बातचीत में प्रयोग करनेवाले शब्दार्थ युक्त भाषा गद्य कहलाते हैं।
2. आधुनिक गद्य का पितामह भारतेन्दु हरिश्चंद्र है।
3. शुक्लोत्तर युग में अधिकांश गद्य विधायें विकसित हो गयीं
4. सरस्वती पत्रिका
5. प्रयाग से 1900
6. शुक्लोत्तर युग में गद्य साहित्यका सर्वोच्च विकास हुआ है।
7. प्रेमचंद कहानी एवं उपन्यास क्षेत्र में सम्राट रहा है।
8. सन् 1882 में लिखा गया परीक्षा गुरु को हिन्दी का पहला उपन्यास माना जाता है।
9. लाला श्रीनिवास दास
10. सन् 1900 में
11. प्रेमचन्द्र
12. हिन्दी में नाटक का सही विकास उन्नीसवीं सदी में, भारतेन्दुयुग में हुआ है।
13. जयशंकर प्रसाद हिन्दी के युग प्रवर्तक नाटककार हैं।

Assignments प्रदत्त कार्य

1. अपने विश्वविद्यालय के उपकुलपति के साथ एक भेंटवार्ता तैयार कीजिए ।
2. हिन्दी गद्य के विकास पर एक समीक्षात्मक निबंध तैयार कीजिए ।
3. प्रेमचन्द हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार हैं, क्यों?
4. हिन्दी में कहानी आधुनिक काल की उपज है- समझाइए।
5. कहानी एवं उपन्यासक्षेत्र में प्रेमचंद सम्राट रहा है, स्पष्ट कीजिए।
6. हिन्दी के युग प्रवर्तक नाटककार 'जयशंकर प्रसाद'।
7. हिन्दी के गद्य के विकास पाँच कालों में विभक्त है, व्यक्त कीजिए।

इकाई : 2

निबंध, जीवनी, आत्मकथा, यात्रावृत्त सामान्य निबंध

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- गद्य साहित्य की विविध विधाओं में निबंध, जीवनी, आत्मकथा, यात्रावृत्त सामान्य निबंध आदि सभी का विशेष परिचय प्राप्त करता है।
- गद्य साहित्य के प्रमुख निबंधकार, आत्मकथाकार, यात्रावृत्तान्त लेखकों और जीवनी लेखकों के स्थान समझता है।
- गद्य साहित्य के प्रमुख निबंध, आत्मकथा, यात्रावृत्तान्त और जीवनी से परिचय प्राप्त करता है।
- गद्य साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक-राजनीतिक-सांस्कृतिक स्थितियों से अवगत होता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी साहित्य में निबंध, जीवनी, आत्मकथा, यात्रावृत्त सामान्य निबंध आदि के विकास। जीवनी एक व्यक्ति के बारे में दूसरा लिखता है। वर्तमान हिन्दी निबंध देशातीत एवं कालातीत है। आत्मकथा और संस्मरण मिलती जुलती होकर भी एक स्वतंत्र साहित्य विधा है। जीवनी और आत्मकथा अलग अलग साहित्यिक विधाएँ हैं।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- सीमित आकार में किसी एक विषय का वर्णन विशेष संगति या संबंध के साथ करना निबंध।
- भारतेन्दु हिन्दी निबंध का जनक।
- निबंध में किसी विषय का निसृत एवं आकर्षक वर्णन किया जाता है।
- जीवनी गद्य की एक सशक्त विधा है।
- सत्यता आत्मकथा का मूलाधार है।
- यात्रावृत्तांत समकालीन साहित्य की नवीन विधा है।
- यात्रावृत्तांत का प्रारम्भ आधुनिक काल में हुआ है।

Discussion / चर्चा

हिन्दी में निबंध

निबंध को अंग्रेज़ी में Essay कहते है। निबंध शब्द का अर्थ है सुगठित या अच्छा-सा बंधा। सीमित आकार में किसी एक विषय का वर्णन विशेष संगति या संबंध के साथ करने वाले साहित्य को निबंध कहते हैं। भारतेन्दु को हिन्दी निबंध का जनक माना जाता है।

निबंध मुख्यतः वर्णनात्मक, विचारात्मक, भावात्मक, विवरणात्मक आदि चार रूपों में विभाजित हैं।

1. वर्णनात्मक निबंध - निबंध में किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, दृश्य आदि का विवेचन कर के रसपूर्ण एवं प्रभाव पूर्ण शैली में लिखने वाले निबंधको वर्णनात्मक निबंध कहते हैं।
2. विचारात्मक निबंध - किसी विषय का तर्क युक्त विवेचन,

अन्वेषण तथा विश्लेषण करके लिखने वाले निबंध को विचारात्मक निबंध कहते हैं।

3. भावात्मक निबंध - लेखक के मन में पैदा होने वाले भावों और चिंताओं को व्यक्त करने वाले निबंध को भावात्मक निबंध कहते हैं।
4. विवरणात्मक निबंध - सामाजिक और ऐतिहासिक स्थानों, घटनाओं, दृश्यों आदि के रस पूर्ण विवरण के साथ लिखनेवाले निबंध को विवरणात्मक निबंध कहते हैं।

जीवनी

जीवनी गद्य की एक सशक्त विधा है। कुछ लोगों की गलत धारणा है कि जीवनी और आत्मकथा एक है। सच में जीवनी और आत्मकथा में अंतर है। जीवनी को अंग्रेज़ी में Biography कहते हैं। आत्मकथा को अंग्रेज़ी में AutoBiography कहते हैं। जीवनी एक व्यक्ति के बारे में दूसरा लिखता तो आत्मकथा लेखक अपने आप लिखते हैं। आत्मकथा संस्मरण (memories) से मिलती जुलती होकर भी एक स्वतंत्र साहित्य विधा है।

1588 में नाभादास कृत भक्तमाल को हिन्दी की प्रथम जीवनी मानी जाती है। इसके बाद समय-समय पर अनेक महत्वपूर्ण जीवनियों की रचना हुई, जिनमें महात्मा गाँधी, नेहरु, सुभाषचंद्र बोस आदि के जीवन से संबंधित जीवनी उल्लेखनीय है। प्रेमचन्द के पुत्र अमृतराय द्वारा प्रेमचन्द के बारे में लिखी गयी कलम का सिपाही, विष्णु प्रभाकर बंगला लेखक शरद चन्द्रचटर्जी के बारे में लिखी गयी आवारा मसीहा, विख्यात लेखक कमलेश्वर के बारे में उनकी पत्नी गायत्री कमलेश्वर द्वारा 2005 में लिखी गयी मेरे हम सफर आदि विशेष उल्लेखनीय जीवनियाँ हैं।

आत्मकथा

आत्मकथा हिन्दी की नव विकसित साहित्य विधा है। हिन्दी की आत्मकथा को अंग्रेज़ी में AutoBiography कहते हैं। आत्मकथा वास्तविक जीवन पर अधिष्ठित साहित्य है। आत्मकथा का सबसे बड़ा गुण ईमानदारी है। सत्यता उसका मूलाधार है। आत्मकथाकार का मुख्य उद्देश्य अपने मन-मस्तिष्क पर संचित अपने विशेष बातों को समाज को परिचय कराना होता है। पहले कह चुका है कि आत्मकथा किसी व्यक्ति द्वारा अपने आप लिखने वाला साहित्य विधा है।

आचार्य शुक्ल के अनुसार हिन्दी की प्रथम आत्मकथा बनारसीदास जैन द्वारा सन् 1641 में कृत अद्धर्कथानक मानी जाती है। इसके बाद गाँधीजी के सत्य के प्रयोग (1923), सुभाषचंद्रबोस (सन् 1935 में) कृत तरुण के स्वप्न, श्याम सुंदर दास (1941) कृत मेरी आत्म कहानी, हरिभाऊ उपाध्याय (1946) कृत साधना के पथ पर, राहुल सांकृत्यायन (1946) कृत मेरी जीवनयात्रा, राजेन्द्र प्रसाद (1947) कृत आत्मकथा, यशपाल (1951) कृत सिंहावलोकन आदि उल्लेखनीय है।

यात्रा वृत्तांत

यात्रा वृत्तांत समकालीन साहित्य की नवीन विधा है। यात्रावृत्त या वृत्तांत को अंग्रेजी में Travelogue कहते हैं। इसका प्रारम्भ आधुनिककाल में हुआ है। किसी यात्रा के पश्चात लेखक द्वारा आकर्षक भाषा और शैली में लिखी जाने वाली प्रामाणिक रचना को यात्रावृत्त कहते हैं। यात्रावृत्त में यायावर अपने अनुभवों, सौंदर्यबोधों का प्रकाशन करते हैं।

हिन्दी गद्य के आरंभ काल में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कविवचन सुधा पत्रिका में कई यात्रा विवरण लिखे हैं। जिनमें सरयू पार की यात्रा, लखनऊ की यात्रा और हरिद्वार की यात्रा आदि महत्त्वपूर्ण हैं।

बालकृष्ण भट्ट, श्रीमती हरदेवी, भगवानदास वर्मा, स्वामी मंगलानन्द, श्रीधर पाठक, उमा नेहरु, मोहन राकेश, रामधारीसिंह दिनकर, अज्ञेय, देवेन्द्र सत्यार्थी, नगेन्द्र, यशपाल, विनय मोहन शर्मा आदि हिन्दी के प्रमुख यात्रावृत्तांतकार है।

Critical Overview / अवलोकन

- हिन्दी गद्य के आरंभ काल में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का योगदान महत्वपूर्ण है।
- निबंध का उद्भव और विकास आधुनिक गद्य काल के अन्य साहित्य विधाओं के उद्भव और विकास समान हुआ है।
- आत्मकथा किसी व्यक्ति द्वारा अपने आप लिखनेवाला साहित्य विधा है।
- यात्रावृत्त में यायावर अपने अनुभवों, सौंदर्यबोधों का प्रकाशन करते हैं।

Recap / पुनरावृत्ति

- जीवनी को अंग्रेज़ी में Biography कहते हैं
- जीवनी एक व्यक्ति के बार में दूसरा लिखता है
- सन् 1588 में नाभादास कृत भक्तमाल हिन्दी की पहली जीवनी है
- आवारा मसीहा विष्णु प्रभाकर रचित विख्यात जीवनी है
- आत्मकथा को अंग्रेज़ी में AutoBiography कहते हैं
- आत्मकथा वास्तविक जीवन पर अधिष्ठित साहित्य है
- बनारसीदास जैन द्वारा 1641 में कृत अद्धर्कथानक प्रथम आत्मकथा मानी जाती है
- यात्रावृत्त या यात्रा वृत्तांत को अंग्रेजी में Travelogue कहते हैं
- यात्रा वृत्तांत समकालीन साहित्य की नवीननतम विधाओं में एक है

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निबंध को अंग्रेज़ी में क्या कहते हैं?
2. निबंध शब्द का अर्थ क्या हैं?
3. हिन्दी निबंध का जनक कौन है?
4. चिंतामणि के लेखक कौन है?
5. आत्मकथा की विशेषता क्या है ?
6. हिन्दी की प्रथम जीवनी कौन सी है ?
7. अंग्रेज़ी के Biography को हिन्दी में क्या कहते हैं ?
8. किसी व्यक्ति के जीवन वृत्तांत को क्या कहते हैं ?
9. यात्रावृत्त या यात्रा वृत्तांत को अंग्रेजी मेंक्या कहते हैं?
10. आरंभ काल में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने किस पत्रिका में कई यात्रा विवरण लिखे हैं?

Answers उत्तर

1. निबंध को अंग्रेज़ी में Essay कहते हैं।
2. निबंध शब्द का अर्थ है सुगठित या अच्छा-सा बंधा।
3. भारतेन्दु हिन्दी निबंध का जनक।
4. आचार्य रामचंद्र शुक्ल
5. आत्मकथा वास्तविक जीवन पर अधिष्ठित साहित्य है।
6. 1588 में नाभादास कृत भक्तमाल को हिन्दी की प्रथम जीवनी मानी जाती है।
7. जीवनी को अंग्रेज़ी में Biography कहते हैं।
8. जीवनी
9. यात्रावृत्त या यात्रा वृत्तांत को अंग्रेजी में Travelogue कहते हैं।
10. आरंभ काल में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कविवचन सुधा पत्रिका में कई यात्रा विवरण लिखे हैं।

Assignments प्रदत्त कार्य

1. किसी यात्रा को लेकर एक यात्रा विवरण तैयार कीजिये।
2. आत्मकथा वास्तविक जीवन पर अधिष्ठित साहित्य है, व्यक्त कीजिए।
3. 'निबंध का उद्भव और विकास' विषय पर एक लेख तैयार कीजिए ।
4. आपकी मनपसंद जगह को लेकर एक यात्रावृत्त तैयार कीजिए।
5. पढी हुई किसी एक आत्मकथा पर टिप्पणी तैयार कीजिए।
6. यात्रावृत्त की विशेषता और उसकी विशिष्टता पर एक पर्चा तैयार कीजिए।
7. अपनी मनपसंद एक जीवनी पर टिप्पणी तैयार कीजिए।

इकाई : 3

संस्मरण-रेखाचित्र, एकांकी,व्यंग्य आदि

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- गद्य साहित्य की विविध विधाओं में संस्मरण, रेखाचित्र, एकांकी, व्यंग्य आदि सभी का विशेष परिचय प्राप्त करता है।
- गद्य साहित्य के प्रमुख संस्मरणकार, रेखाचित्रकार, एकांकीकार और व्यंग्यकार से परिचय प्राप्त करता है।
- गद्य साहित्य के प्रमुख संस्मरण, रेखाचित्र, एकांकी और व्यंग्य रचनाओं से परिचय प्राप्त करता है।
- गद्य रचनाओं में चित्रित समस्याओं और उसके समाधान से अवगत होता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी में संस्मरण, रेखाचित्र, एकांकी व्यंग्य आदि का विकास तीव्र गति से हुआ है। संस्मरण एक विशेष प्रकार की स्मृति है। रेखाचित्र में लेखक शब्दों द्वारा आकर्षक रचना करते हैं। व्यंग्य आधुनिक साहित्य की एक मुख्य विधा है। हरिशंकर परसाई, शरद जोशी आदि हिन्दी के उल्लेखनीय व्यंग्यकार है।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- संस्मरण एक विशेष प्रकार की स्मृति होती है।
- शब्दार्थ के अनुसार एक अंक वाला नाटक है एकांकी।
- रेखाचित्र आधुनिक गद्यविधा है।
- आत्मकथा को आत्मकथ्य भी कहते हैं।
- व्यंग्य आधुनिक साहित्य की एक मुख्य विधा के रूप में उभरा है।

Discussion / चर्चा

संस्मरण

संस्मरण को अंग्रेज़ी में Memories कहते हैं। संस्मरण सम् + स्मरण, दो शब्दों के योग से बनने वाला शब्द है, जिसका अर्थ होता है - सम्यक स्मरण। इसमें व्यक्ति का महत्व गौण होता है वस्तु की घटना का महत्व मुख्य होता है। किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना का स्मृति के आधार पर कलात्मक साहित्यिक वर्णन को संस्मरण कहते हैं। संस्मरण एक विशेष प्रकार की स्मृति होती है।

हिन्दी के सर्वप्रथम संस्मरण सन् 1929 में पद्मसिंह शर्मा लिखा गया पद्मराग माना जाता हैं। संस्मरण और रेखाचित्र, दोनों में कम अंतर होता है। संस्मरण एक विवरणात्मक साहित्य विधा है तो रेखाचित्र रेखा मात्र या विवरण रहित साहित्य विधा है। संस्मरण और रेखाचित्र के बारे में पद्मसिंह शर्मा का मत उल्लेखनीय है - प्रायः प्रत्येक संस्मरण लेखक रेखाचित्र लेखक भी है और प्रत्येक रेखाचित्र लेखक संस्मरण लेखक भी है।

संस्मरणकार जीवन के विशेष प्रसंगों और अनुभवों का उल्लेख करता है। संस्मरण को अवास्तविक या काल्पनिक

न होकर यथार्थ पर अधिष्ठित होना आवश्यक है। संस्मरण मर्मस्पर्शी स्मृति पर अधिष्ठित होना चाहिए।

रेखाचित्र

अंग्रेजी के Sketch को हिन्दी में रेखाचित्र कहते हैं। रेखाचित्र, रेखा और चित्र, दो शब्दों के मेल से बना शब्द है। जिसका अर्थ है रेखाओं द्वारा बनाने वाला चित्र । इसमें लेखक शब्दों द्वारा आकर्षक रचना करते हैं। रेखाचित्र शब्दों द्वारा बनाने वाला होने से इसे शब्द चित्र भी कहते हैं। चित्रकलामें रेखा का जो महत्व होता है, वही महत्व शब्द चित्र (रेखाचित्र) में शब्द को होता है।

रेखाचित्र आधुनिक गद्य विधा है। किसी सत्य पर आधारित घटना की वस्तु अथवा व्यक्ति का चित्रात्मक भाषा में करने वाले वर्णन को रेखाचित्र कहते हैं।

रेखाचित्र संस्मरण के सबसे नज़दीक रहने वाली साहित्य विधा है। साहित्य में रेखा चित्रकार शब्दों के माध्यम से व्यक्ति का पूर्ण चित्र उद्घाटित करता है। रेखाचित्र कथात्मक शैली, डायरी शैली, वर्णनात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, सम्बोधनात्मक शैली, संवादात्मक शैली के होते हैं।

हिन्दी का पहला रेखाचित्र पद्मसिंह शर्मा कृत पद्मपराग (1929) माना जाता है। इसके पश्चात कई लेखक हिन्दी रेखाचित्र को उत्तरोत्तर विकसित किया है।

एकांकी

एकांकी शब्द का अर्थ है एक अंक वाला (लघु नाटक)। एकांकी को अंग्रेज़ी में One act play कहते हैं। शब्दार्थ के अनुसार एक अंक वाला नाटक है एकांकी । नाटक की अपेक्षा एकांकी आकार में छोटा है। विषय के अनुसार एकांकी को सामाजिक एकांकी, पौराणिक एकांकी, ऐतिहासिक एकांकी, राजनीति से संबंधित एकांकी, चरित्रप्रधान एकांकी, अर्थपूर्ण एकांकी के रूप में विभाजित कर सकते हैं।

हिन्दी में व्यंग्य

व्यंग्य आधुनिक साहित्य की एक मुख्य विधा है। गद्य साहित्य के आरंभ से करीब भारतीय आज़ादी काल तक व्यंग्य को एक स्वतंत्र साहित्य विधा के रूप में माना न था। स्वातंत्र्योत्तर काल में हिन्दी में व्यंग्य साहित्य को स्वतंत्र अस्तित्व मिला है।

विद्वानों ने व्यंग्य की परिभाषा अलग-अलग रूप में किया है। सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई ने व्यंग्य को जीवन का साक्षात्कार माना है। नरेन्द्र कोहली ने विसंगति से उत्पन्न आक्रोश को व्यंग्य कहा है। व्यंग्य का अस्तित्व बुराइयों की आलोचना पर अधिष्ठित है। आलोचना जितना तीव्र होता, व्यंग्य का उद्देश्य उतना निकट आता है।

आरंभिक काल में हिन्दी में भारतेन्दु हरिश्चंद्र व्यंग्य लेखन का नेतृत्व दे दिया था । स्वतंत्र रूप में न होकर भी उनके अंधेर नगरी में व्यंग्य का अच्छा पुट मिलता है। द्विवेदी युग के प्रमुख व्यंग्यकारों में प्रताप नारायण मिश्र, बालमुकुंद गुप्त, पांडेय बच्चनशर्मा उग्र, ठाकुर प्रसाद सिंह, निराला आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। हरिशंकर परसाई, शंकर पुणतांबेकर, नरेंद्र कोहली, गोपाल चतुर्वेदी, विष्णु नागर, प्रेम जन्मेजय, ज्ञान चतुर्वेदी, सूर्यकांत व्यास, शरद जोशी, आलोक पुराणिक, सुरेश आचार्य, ज्ञान चतुर्वेदी, विवेक रंजन श्रीवास्तव आदि हिन्दी के उल्लेखनीय व्यंग्यकार हैं।

Critical Overview / अवलोकन

- संस्मरण एक विशेष प्रकार की स्मृति होती है।
- रेखाचित्र संस्मरण के नज़दीक रहने वाला साहित्य विभाग है।
- संस्मरणकार जीवन के विशेष प्रसंगों और अनुभवों का उल्लेख करता है।
- रेखाचित्र के लेखक शब्दों द्वारा आकर्षक रचना करते हैं।

Recap / पुनरावृत्ति

- अंग्रेजी के Sketch को हिन्दी में रेखाचित्र कहते हैं
- रेखाचित्र का अर्थ होता है - रेखाओं द्वारा बनाने वाला चित्र
- हिन्दी का पहला रेखाचित्र पद्मसिंह शर्मा 1929 में रचित पद्मपराग है
- रामवृक्ष बेनीपुरी हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ रेखा चित्रकार हैं
- हिन्दी में संस्मरण की वर्तमान स्थिति विचारणीय है
- रेखाचित्र संस्मरण के सबसे नज़दीक रहने वाला साहित्य विधा है
- स्वातंत्र्योत्तर काल में हिन्दी में व्यंग्य साहित्य को स्वतंत्र अस्तित्व मिला है
- आरंभिक काल में हिन्दी में भारतेन्दु हरिश्चंद्र व्यंग्य लेखन का नेतृत्व दे दिया

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. अंग्रेज़ी के Memoirs को हिन्दी में क्या कहते हैं?
2. अंग्रेजी में प्रयुक्त रेखाचित्र के लिए शब्द कौन सा है ?
3. रेखाचित्र का अर्थ क्या है ?
4. रेखाचित्र किस विधा के नज़दीक रहनेवाला साहित्य विधा है ?
5. हिन्दी का पहला रेखाचित्र .... है ।
6. कब हिन्दी में व्यंग्य साहित्य को स्वतंत्र अस्तित्व मिला है?
7. आरंभिक काल में हिन्दी मे व्यंग्य लेखन का नेतृत्व किसने दिया था?
8. हरिशंकर परसाई ने व्यंग्य की परिभाषा किस प्रकार दी है ?
9. हरिशंकर परसाई मुख्य रूप में किस विधा के लेखक है?
10. हिन्दी के दो प्रमुख व्यंग्यकारों के नाम बताइए ।

Answers उत्तर

1. संस्मरण को अंग्रेज़ी में Memoirs कहते हैं।
2. अंग्रेजी के Sketch को हिन्दी में रेखाचित्र कहते हैं।
3. रेखाचित्र का अर्थ होता है - रेखाओं द्वारा बनानेवाला चित्र।
4. रेखाचित्र संस्मरण के नज़दीक रहनेवाला साहित्य विभाग है।
5. हिन्दी का पहला रेखाचित्र पद्मसिंहशर्मा द्वारा 1929 में रचित पद्मपराग है।
6. स्वातंत्रोत्तर काल में हिन्दी में व्यंग्य साहित्य को स्वतंत्र अस्तित्व मिला है।
7. आरंभिक काल में हिन्दी में भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने व्यंग्य लेखन का नेतृत्व दे दिया था ।
8. हरिशंकर परसाई ने व्यंग्य को जीवन का साक्षात्कार माना है।
9. व्यंग्य

10. हरिशंकर परसाई, शंकर पुणतांबेकर, नरेंद्र कोहली, गोपाल चतुर्वेदी, विष्णुनागर, प्रेमजन्मेजय, ज्ञान चतुर्वेदी, सूर्यकांत व्यास, शरद जोशी, आलोक पुराणिक, सुरेश आचार्य, विवेक रंजन श्रीवास्तव आदि हिन्दी के उल्लेखनीय व्यंग्यकार हैं।

Assignments प्रदत्त कार्य

1. संस्मरणकार जीवन के विशेष प्रसंगों और अनुभवों का उल्लेख करता है, स्पष्ट कीजिये ।
2. हिन्दी में संस्मरण की वर्तमान स्थिति और गति ।
3. टिप्पणी लिखिए - व्यंग्य, रेखाचित्र, जीवनी, संस्मरण।
4. रेखाचित्र संस्मरण के सबसे नज़दीक रहनेवाली साहित्यविधा है, स्पष्ट कीजिए।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. नगेन्द्र।
3. हिन्दी साहित्य उद्भव और विकास - हजारीप्रसाद द्विवेदी।
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. कपूर टंडन।
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. नगेन्द्र ।
6. हिन्दी साहित्य का समग्र इतिहास - डॉ. रमेशचंद्रशर्मा।
7. हिन्दी का हास्य - ज्ञान प्रकाश शर्मा।
8. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य - हरिशंकर दुबे।

BLOCK - 04

विविध गद्य रूपों का परिचय

इकाई : 1
सदाचार का तावीज़

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई के व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचय प्राप्त करता है।
- व्यंग्य साहित्य में हरिशंकर परसाई का स्थान समझता है।
- हरिशंकर परसाई के प्रतिनिधि व्यंग्य 'सदाचार का तावीज़' से परिचय प्राप्त करता है।
- भ्रष्टाचार -रिश्वतखोरी जैसे दुराचारों के मूल कारण और निवारण मार्ग समझता है।
- भ्रष्टाचार-रिश्वतखोरी से समाज को बचाने की आवश्यकता पर विचार-विमर्श करता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हरिशंकर परसाई हिन्दी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ व्यंग्यकार है। उनका जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के इटारसी के पास जमानी नामक गाँव में 22 अगस्त 1924 को हुआ था । उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए उत्तीर्ण करके कुछ वर्ष अध्यापक वृत्ति किया। फिर जबलपुर से वसुधा नामक पत्रिका के प्रकाशन और संपादन शुरु किया। किंतु आर्थिक विषमता के कारण पत्रिका उपेक्षित कर पूरा समय साहित्य सृष्टि में सक्रिय रहे।

साहित्यिक विशेषता

समाज और व्यक्ति की विसंगतियाँ परसाई के व्यंग्य की विषय-वस्तु रही थी। उन्होंने व्यंग्य को समाज परिष्करण का उत्तम मार्ग समझा है। सामाजिक नैतिकता की सुरक्षा उनके व्यंग्य का लक्ष्य था। उनका व्यंग्य पाठक को जितनी अनुभूति देता था, उससे ज्यादा समाज-विरोधियों को प्रहार दे सकता था। उनकी भाषा तलवार की जैसी ताकतवर थी।

परसाई की रचनाएँ

तब की बात और थी, पगएण्डियों का ज़माना, भूत के पाँव पीछे, बेईमानी की परत, हँसते हैं रोते हैं, रानी नागमती की कहानी, सदाचार का तावीज़, तट की खोज, विकलांग श्रद्धा का दौर, जैसे उनके दिन फिरे, शिकायत मुझे भी है, और अन्त में, सुनौ भाई साधौ आदि परसाई की प्रमुख रचनाएँ हैं। परसाई के विकलांग श्रद्धा का दौर नामक रचना केन्द्र साहित्य अकादमी सेपुरस्कृत हैं।

परसाई की भाषा-शैली

परसाई की भाषा सहज, सरल, रोचक और सुबोध है। उनकी भाषा में तीखी प्रहार शक्ति है, जो व्यंग्य के लिए अनिवार्य है। उन्होंने तत्सम, तद्‌भव, देशज, विदेशी शब्दों का उपयोग किया है। उनकी भाषा पर्याप्त लाक्षणिक एवं व्यंजन युक्त है। उनकी शैली विषय के अनुकूल वर्णनात्मक हैं।

विख्यात हास्य-व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई की मृत्यु 10 अगस्त 1995 को मध्य प्रदेश के जबलपुर में हुई थी।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- सदाचार का तावीज़ परसाई की चर्चित व्यंग्य रचना है।
- सदाचार का तावीज़ एक गूढ़ार्थ प्रधान व्यंग्य रचना है।
- परसाई कीबोलचाल की भाषा व्यंग्य की शोभा बढ़ाती हैं।
- परसाई व्यक्त करते हैं कि ऊपर की दवा से भ्रष्टाचार हट नहीं हो सकते हैं।
- भ्रष्टाचार मनुष्य के भीतर की एक अनैतिक समस्या है।
- भ्रष्टाचार की जैसे बुराई नैतिकता की फैलाव से दूर कर सकती हैं।
- आजकल घूस जैसे भ्रष्टाचार से साधारण जन-जीवन संकट पूर्ण हो चुका है।
- हमारे इधर घूस जैसे भ्रष्टाचार निम्न स्तर से उच्चस्तर तक व्याप्त है।
- सरकारी कर्मचारियों में कुछ घूस लेता है। घूस न देता तो काम नहीं चलता है।
- भ्रष्टाचार के कारण सामान्य जनता की आवश्यकताएँ सफल नहीं होती है।
- ईमानदारी पैदा करने से भ्रष्टाचार की जैसे बुराई दूर कर सकती हैं।
- अर्थाभाव मनुष्य को बुराई करने को प्रेरित करते हैं।
- यह व्यंग्य में भ्रष्टाचार के भयानक वास्तविक जगत की ओर ले जाता है।
- रिश्वतखोरी व भ्रष्टाचार समाप्त करने के लिए कर्मचारियों को उनकी आवश्यकता के अनुसार समुचित वेतन देना है।
- भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी आदि समाज के लिए शाप है।

Discussion / चर्चा

'सदाचार का तावीज़' सुप्रसिद्ध साहित्यकार हरिशंकर परसाई का लिखा हुआ व्यंग्यात्मक लेख है। इसमें परसाई ने व्यक्ति और समाज की दुर्बलताओं पर प्रहार किया हैं। इस व्यंग्य में परसाई भ्रष्टाचार की भयानक व्याप्ति व्यक्त करने के साथ-साथ उसके निवारण का उपाय भी पेश करते हैं। परसाई समझाते हैं कि हमारे समाज में भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी ऊपर से निम्न स्तर तक व्याप्त है। सदाचार का तावीज़ में एक संकीर्ण समस्या का रोचक वर्णन वार्तालाप शैली में हुआ है। इसमें लेखक एक ओर भ्रष्टाचार का फैलाव रेखांकित करता है। दूसरी ओर उसे उन्मूलन करने का उपाय सामने लाता है। अंत में यह साफ करता है कि भ्रष्टाचार तब तक समाप्त नहीं होगा, जब तक सरकारी कर्मचारियों को संतोष जनक वेतन नहीं मिल जाता।

एक कल्पित राज्य है। वहाँ लोग हल्ला मचाता है कि भ्रष्टाचार बहुत फैल गया है। राजा ने दरबारियों से कहा कि प्रजा बहुत हल्ला मचा रहा है कि सब जगह भ्रष्टाचार फैला हुआ है। हमें तो आज तक कहीं नहीं दिखा। तुम लोगों को कहीं दिखा हो तो बताओ। दरबारियोंने राजा से कहा कि भ्रष्टाचार सूक्ष्म है। इसलिए साधारण आँखों से देखा नहीं जा सकता है। हमें भ्रष्टाचार दिखा भी तो नहीं है। क्योंकि हमारी आँखों में आपका ही रूप बसा है।

राज्य के कोने में एक विशेष जाति के लोग रहते हैं। उनके पास एक विशिष्ट प्रकार का अंजन है। वह विशेष काजल आँखों में आँजते तो छोटी से छोटी चीज़ तक देख लेते हैं। दरबारियों के अनुरोध पर राजा ने विशेष जाति के पाँच आदमियों को दरबार पर बुलाया। राजा ने विशेषज्ञ जाति के लोगों से बताया कि हमारे राज्य में भ्रष्टाचार है। पर वह कहाँ है, इसका पता नहीं चलता है। तुम लोग उसका पता लगाओ। अगर मिल जाए तो पकड़ कर हमारे पास ले आओ। अगर बहुत हो तो नमूने के लिए थोड़ा-सा ले आना।

कुछ दिनों के बाद विशेषज्ञ राजा के पास उपस्थित हुए। भ्रष्टाचार को लेने के लिए राजा ने उनकी ओर हाथ बढ़ाये। विशेषज्ञों ने कहा कि भ्रष्टाचार सूक्ष्म और अगोचर होने से हाथ की पकड़ में नहीं आता है। उसे देखा नहीं जा सकता है, अनुभव किया जा सकता है। विशेषज्ञों ने स्पष्ट किया कि भ्रष्टाचार सर्वत्र व्याप्त है। वह राज भवन में ही नहीं, राजा के सिंहासन में भी होता है। भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

विशेषज्ञ योजना तैयार करते हैं। विशेषज्ञ लोग भ्रष्टाचार दूर करने की योजना-रिपोर्ट राजा के पास प्रस्तुत करता हैं। रिपोर्ट पढ़कर राजा चिंताग्रस्त हुए। वे विचार करते-करते दिन बीतते रहे। चिंता राजा के स्वास्थ्य को खराब कर देता है। विशेषज्ञों के कारण राजा की नींद उड़ जाती है।

राज्य के कोने के एक गुफा में एक साधु रहता है। राजाज्ञा के अनुसार दरबारियोंने उस साधु को राजा के पास उपस्थित करा दिया, जिस साधु ने मंत्रों से सिद्ध सदाचार का तावीज़ बनाया है। दरबारी कहते हैं कि साधु के तावीज़ बाँधने से दुराचारी एकदम सदाचारी हो जाता है। साधु बताते हैं कि भ्रष्टाचार और सदाचार मनुष्य की आत्मा में रहता है। ईश्वर जब मनुष्य को जन्म देता है, तब किसी की आत्मा में ईमानदारी भरा देता है और किसी की आत्मा में बेईमानी। आदमी के मन से निकलने वाले ईमान या बेईमानी के स्वर को आत्मा की पुकार कहते हैं। आत्मा की पुकार के अनुसार ही आदमी काम करता है। साधु का बनाया तावीज़ बेईमान को ईमान बना दे सकता है। अर्थात जिस आदमी की भुजा पर यह बाँधा होगा, वह सदाचारी हो जाएगा।

साधु ने सदाचार का तावीज़ का परीक्षण एक कुत्ते पर किया था । यह तावीज़ गले में बाँध देने से कुत्ता रोटी नहीं चुराता है। क्योंकि तावीज़ से सदाचार का स्वर निकलते हैं। जब किसी की आत्मा से बेईमानी के स्वर निकालने लगते हैं तो इस तावीज़ की शक्ति उनकी आत्मा का गला घोंट देती है।

साधु से बनाये तावीज़ पर राजा प्रभावित हुए। राजा ने कहा कि हम आपसे बहुत आभारी हैं। हमें लाखों नहीं, करोड़ों तावीज़ चाहिए। तब मंत्री राजा को अनुरोध देता है कि साधु बाबा को तावीज़ बनाने का ठेका दे दिया जाए। वे अपनी संघ से तावीज़ बनाकर राज्य को सप्लाई कर देंगे। परिणामतः राजा ने साधु को तावीज़ बनाने का कारखाना खोलने के लिए पाँच करोड़ रुपए की ठेका दिया।

सदाचार का तावीज़ लोगों की भुजा में बाँध गये तो राजा खुश हुए। इसके बाद एक दिन राजा को तावीज़ का काम देखने की उत्सुकता हुई। महीने के दूसरे दिन वह वेश बदलकर एक कार्यालय में गए। इससे एक दिन पहले कर्मचारियों को वेतन मिला था। वेश बदलकर राजा एक कर्मचारी के पास जाकर कोई काम बताकर पाँच रुपए का नोट देने लगे। कर्मचारी ने डाँटते हुए कहा कि भाग जा, घूस लेना पाप है। महीने के अंतिम दिन, इकतीस तारीख को राजा ने उस कर्मचारी के पास जाकर पाँच रुपए का नोट दिखाया, जिसके पास पहले गये थे। देखते ही देखते कर्मचारी ने रुपया लेकर जेब में रखा। राजा ने उस भ्रष्टाचारी कर्मचारी को हाथ से पकड़ लिया और व्यक्त किया कि मैं तुम्हारा राजा हूँ। राजा ने पूछा कि क्या तुम आज सदाचार का तावीज़ बाँधकर नहीं आए हैं? कर्मचारी ने भुजा में तावीज़ दिखा दिया। कर्मचारी की भुजा पर तावीज़ देखकर राजा चकित हुए। राजा ने तावीज़ पर कान लगाया। तब उससे इस प्रकार स्वर निकल रहे कि अरे आज इकतीस है, आज तो ले लें।

सदाचार का तावीज़ एक गूढ़ार्थ प्रधान व्यंग्य रचना है। इसमें देश के चारों ओर दिन-प्रतिदिन, क्षण-प्रतिक्षण फैलने वाले भ्रष्टाचार पर तीखा व्यंग्य किया गया है। मालूम होता है कि ऊपर की दवा से भ्रष्टाचार का उन्मूलन संभव नहीं हो सकता है। समाज में भ्रष्टाचार तब तक संभव है, जब तक व्यवस्था में यह दुराचार होने का मौका मौजूद हो। भ्रष्टाचार के बारे में घोर भाषण करने से यह दुराचार मिट नहीं सकता है। वैसे भ्रष्टाचार के बारे में वाद-विवाद करने से फायदा नहीं मिलता है। भ्रष्टाचार होने के कारणों को ढूँढकर पूर्ण रूप से निकालने का उपाय किये बिना यह दुराचार हट नहीं जाता है।

भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी मनुष्य के भीतर की नैतिक समस्याएँ हैं। अनैतिक व्यवस्था पर जन्म भर पलनेवालों में नैतिकता की बखान करने से लाभ नहीं मिलता है। नैतिक समाजमें पलनेवालों में नैतिकता स्वाभाविक उत्पन्न होती है। भ्रष्टाचार जैसी बुराइयों को दूर करने का सरल उपाय नैतिकता का फैलाव है। नागरिकों में नैतिक मूल्य, सच्चाई, ईमानदारी, सीधे-सादे पैसा कमाने का मनोभाव आदि पैदाकर भ्रष्टाचार जैसी बुराइयों को दूर कर सकती हैं।

Critical Overview / अवलोकन

हिन्दी साहित्य में व्यंग्य आधुनिक विधा है। व्यंग्य साहित्य में किसी व्यक्ति या समाज की विसंगतियों और विडंबनाओं का रोचक एवं हास्यास्पद वर्णन किया जाता है। भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी मनुष्य के भीतर की नैतिक समस्याएँ हैं। भ्रष्टाचार जैसी बुराइयों को दूर करने का सरल उपाय नैतिकता का फैलाव है। व्यंग्य का मूल उद्देश्य भ्रष्टाचारों या बुराइयों को रोकना है। व्यंग्यकार सदा समाज की सुरक्षा एवं भलाई पर ध्यानमग्न रहता है। व्यंग्यकार कभी भी विसंगतियों पर प्रत्यक्ष आक्रमण नहीं करता है। व्यंग्य लेखक सदा बुराइयों पर परोक्ष रूप में कठोर आक्रमण करते हैं। हरिशंकर परसाई, शरद जोशी,

श्रीलाल शुक्ल आदि हिन्दी के मशहूर व्यंग्यकार हैं।

नागरिकों में नैतिकमूल्य, सच्चाई, ईमानदारी, सीधे-सादे पैसा कमाने का मनोभाव आदि पैदा कर भ्रष्टाचार जैसी बुराइयों को दूर कर सकते हैं।

Recap / पुनरावृत्ति

- सदाचार का तावीज़ हरिशंकर परसाई कृत व्यंग्य है
- परसाई का व्यंग्य मात्र मनोरंजन का नहीं है, सामाजिक परिवर्तन का होता है
- एक संकल्पित राज्य के लोग भ्रष्टाचार पर हल्ला मचाता है
- राजा दरबारियों से भ्रष्टाचार हटाने के उपाय ढूँढते हैं
- दरबारी की आँखों में राजा की छवि होने से भ्रष्टाचार दिख नहीं पड़ता है
- पता चलता है कि राज्य के कोने के विशेष जाति के लोगों के पास एक काजल है
- विशेष जाति के अंजन आँखों में आँजते तो छोटी चीज़ तक देख सकते हैं
- विशेषज्ञ जाति के पाँच लोगों को राजा के सम्मुख उपस्थित करा देता है
- विशेषज्ञों ने कहा कि भ्रष्टाचार स्थूल, सूक्ष्म और अगोचर है
- भ्रष्टाचार को देखा नहीं सकता है, अनुभव किया जा सकता है
- विशेषज्ञों के अनुसार भ्रष्टाचार राज सिंहासन में भी होता है
- विशेषज्ञ भ्रष्टाचार को दूर करने की योजना-रिपोर्ट राजा के पास प्रस्तुत करता हैं
- रिपोर्ट पढ़ने के बाद महाराज की नींद तक टूट जाती है
- राज्य के कोने के गुफा में एक साधु रहता है
- साधु निर्मित मंत्रों-सिद्ध तावीज़ बाँधने से दुराचारी एकदम सदाचारी हो जाता है
- साधु ने सदाचार का तावीज़ का परीक्षण एक कुत्ते पर किया था
- तावीज़ गले में बाँध देने के पश्चात कुत्ता रोटी नहीं चुराता है
- साधु बनाये तावीज़ पर राजा प्रभावित हुए
- राजा, साधु को कारखाना खोलने के लिए पाँच करोड़ रुपए पेशगी देते हैं
- साधु द्वारा बनाये तावीज़ लोगों के भुजा में बाँध गये तो राजा खुश हुए
- एक दिन राजा वेश बदलकर एक कार्यालय पर पहुँचता है
- राजा कोई काम कहकर कर्मचारी को पाँच रुपए का नोट देता हैं
- कर्मचारी, घूस लेना पाप कहकर राजा को डाँटता है
- आगे इकतीस तारीख पर राजा उसी कर्मचारी के पास जाकर पाँच रुपए का नोट दिखाता है। नोट देखते ही कर्मचारी उसे लेकर जेब में रख देता है
- कर्मचारी की भुजा में तावीज़ देखकर राजा स्तब्ध हुए
- राजा तावीज़ पर कान लगाता है, तब उससे 'अरे आज इकतीस है, आज तो ले लें' - स्वर सुनायी पड़ती

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. सदाचार का तावीज़ का रचनाकार कौन है?
2. हरिशंकर परसाई जबलपुर से प्रकाशित पत्रिका का नाम क्या है?
3. हरिशंकर परसाई का साहित्य अकादमी से पुरस्कृत रचना का नाम बताइए?
4. हरिशंकर परसाई की रचनाओं का मुख्य उद्देश्य क्या है?
5. राजा ने भ्रष्टाचार ढूँढ़ने का काम किसे सौंप दिया?
6. साधु ने राजा को कौन-सी वस्तु दिखायी ?
7. साधु ने पहले पहल किस पर तावीज़ का प्रयोग किया?
8. साधु ने सदाचार और भ्रष्टाचार का कैसा वर्णन किया?
9. साधु का तावीज़ बनाने के लिए राजा द्वारा कितनी पेशगी दी गयी?
10. महीने के अंतिम दिन तावीज़ से कौन-सा स्वर निकल रहे थे?

Answers उत्तर

1. हरिशंकर परसाई
2. जबलपुर से वसुधा नामक पत्रिका के प्रकाशन और संपादन।
3. परसाई के विकलांग श्रद्धा का दौर नामक रचना केन्द्र साहित्य अकादमी से पुरस्कृत हैं।
4. परसाई का व्यंग्य मात्र मनोरंजन का नहीं है, सामाजिक परिवर्तन का होता है।
5. राजा ने दरबारियों को भ्रष्टाचार ढूँढ़ने का काम सौंप दिया।
6. साधु ने मंत्रों से सिद्ध सदाचार का तावीज़ राजा को दिखाया।
7. साधु ने सदाचार का तावीज़ का परीक्षण एक कुत्ते पर किया था ।
8. साधु बताते हैं कि भ्रष्टाचार और सदाचार मनुष्य की आत्मा में रहता है।
9. राजा ने साधु को तावीज़ बनाने का कारखाना खोलने केलिए पाँच करोड़ रुपए का ठेका दिया।
10. तावीज़ से इस प्रकार स्वर निकल रहे कि अरे आज इकतीस है, आज तो ले लें।

Assignments प्रदत्त कार्य

1. सदाचार का तावीज़ समाज पर व्याप्त भ्रष्टाचार एवं घूस का वास्तविक रूप प्रकट करते हैं- अपना तर्कयुक्त उत्तर दे कर समर्थन कीजिए ।
2. भ्रष्टाचार एवं घूस दूर करने का उपाय क्या-क्या हैं।
3. 'रिश्वतखोरी पाप है', इस विषय पर आपका विचार प्रकट कीजिए ।
4. सदाचार कातावीज़ व्यंग्य का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए ।
5. भ्रष्टाचार की समस्या का हल कैसे निकालें? इस विषय पर पर्चा लिखिए।
6. सदाचार का तावीज़ का सारांश लिखकर विशेषताएँ व्यक्त कीजिए ।

इकाई : 2
रज़िया

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- विख्यात रेखाचित्रकार रामवृक्ष बेनीपुरी के व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचय प्राप्त करता है।
- 'रज़िया' रेखाचित्र के भाव जगत से परिचय प्राप्त करता है।
- मानवता का महत्व धर्म से परे है, इस सत्य से अवगत होता है।
- पवित्र स्नेह के उज्ज्वल मुहूर्तों से अवगत होता है।
- रज़िया के द्वारा मनुष्य सहज आत्मीयता से परिचय प्राप्त करता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

प्रगतिवादी लेखक रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म 23 दिसंबर 1899 को बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के बेनीपुर गाँव के एक किसान परिवार में हुआ था। बेनीपुर उनके गाँव का नाम है, उसे उन्होंने अपने नाम के साथ जोड़ दिया है। बेनीपुरी स्वतंत्रता आंदोलन के शक्तिशाली सेनानी रहे थे। उनमें बचपन से ही समाजवादी भावना जोरों पर था । राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने के लिए उन्होंने अपनी पढ़ाई बीच में छोड़ दी । राष्ट्र सेवा के दौरान उन्हें कई बार जेलों में क्रूरता सहनी पएी थी।

रामवृक्ष बेनीपुरी बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार है। उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, रेखाचित्र, यात्रावृत्त, निबन्ध, संस्मरण आदि विधाओं को समृद्ध कर दिया है। उन्होंने बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना करके राष्ट्रभाषा के प्रति अपनी श्रद्धा-भक्ति अर्पित किया है। उनका पूरा सहित्य बेनीपुरी ग्रन्थावली में संकलित है।

पतितों के देश में नामक उपन्यास, चिता के फूल नामक कहानी-संग्रह, गेहूँ और गुलाब, मशाल - निबंध संग्रह, माटी की मूरतें, लाल तारा - रेखाचित्र, मील के पत्थर नामक संस्मरण, कार्ल मार्क्स की जीवनी आदि उनकी महत्वपूर्ण रचनाओं में कुछ हैं। सन् 1946 में प्रकाशित माटी की मूरतें रेखाचित्र बेनीपुरी को सबसे अधिक ख्याति प्रदान कर दी है। रामवृक्ष बेनीपुरी की मृत्यु 7 सितंबर 1968 को हुई थी।

प्रकार (GENRE)

रज़िया रामवृक्ष बेनीपुरी कृत माटी की मूरतें नामक ग्रंथ में संकलित रेखाचित्र है। रज़िया बेनीपुरी के निकट के गाँव की एक मुसलमान चूड़ीहारिन के बेटी है। बेनीपुरी ब्राह्मण धर्मी है। पहली मुलाकात में ही बेनीपुरी के मन में रज़िया के प्रति पवित्र मानव स्नेह का अनूठा भाव पैदा होता है। रज़िया अपनी माँ के साथ दूसरे गाँव से बेनीपुर गाँव पर आती थी। जब-जब रज़िया के माँ चूड़ियों का खाँचे लेकर गाँव-गाँव चलती थी, तब-तब लड़की रज़िया उनके साथ होती थी। वह उसी गाँव में रहती थी, जिस गाँव में उनका जन्म हुआ था, बचपन बितायी थी और जवानी हुई थी। वैवाहिक जीवन में वह हसना को पति स्वीकार किया था। रज़िया मरते वक्त तक सपरिवार लेखक के पड़ोसी गाँव में रहती थी। लेखक रामवक्ष बेनीपुरी और रज़िया के बीच एक अलग-सा अपनापन था। यह अनूठा आत्मीय स्नेह उनके अंत तक मौजूद रहा था ।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- रामवृक्ष बेनीपुरी का मानवीय विचार।
- रामवृक्ष बेनीपुरी एवं रज़िया की पहली मुलाकात।
- रामवृक्ष बेनीपुरी के मन में रज़िया के प्रति आकर्षण होने का कारण।
- घर-परिवार चलाने के लिए रज़िया और उनकी माँ जैसी स्त्रियों द्वारा सहने वाली यातनाएँ।
- चूड़िहारिन के रूप में रज़िया की निपुणता।
- परिवर्तित धार्मिकता एवं सांप्रदायिकता के बारे में लेखक एवं रज़िया का संवाद।
- पटना में रामवृक्ष बेनीपुरी और रज़िया की भेंट।
- चुनाव के अवसर रज़िया से रामवृक्ष बेनीपुरी की अंतिम मुलाकात।
- मनुष्य को मनुष्य के रूप में देखने की महानतम विचार पर ज़ोर दिया है।

Discussion / चर्चा

रज़िया अत्यंत रूपवती है। बेनीपुरी के गाँव में भी लड़कियाँ हैं, लेकिन रज़िया का सौंदर्य एवं आकर्षण किसी को न था । बेनीपुरी उनका सौंदर्य चित्रित करते हुए लिखते हैं- 'कानों में चाँदी की बालियाँ, गले में चाँदी का हैकल, हाथों में चाँदी के कंगन और पैरों में चाँदी की गोड़ाँई- भरबाँह की बूटेदार कमीज पहने, काली साड़ी के छोर को गले में लपेटे, गोरे चेहरे पर लट कते हुए कुछ बालों को संभालने में परेशान वह छोटी सी लड़की जो उस दिन मेरे सामने आकर खड़ी हो गई थी...।

जब लेखक स्कूल पर पढ़ते थे, तब रज़िया से उनकी पहली मुलाकात हुई थी। तब का परिचय दोनों के बढ़ने के अनुसार बढ़ने लगते हैं। दोनों के बीच का स्नेह कभी न कम होता था। दोनों विवाहित होकर अलग-अलग परिवार समेत रहते समय भी दोनों की आत्मीयता पहले जैसी हुई थी।

रज़िया चूड़ीहारिन के पेशे में निपुण थी। उनका विशिष्ट व्यवहार हर ग्रामीण को प्रभावित करता था। रज़िया के पेशे का समर्थन करते हुए लेखक लिखते हैं - चूड़ीहारिन के पेशे के लिए सिर्फ यही नहीं चाहिए कि उसके पास रंग-बिरंगी चूड़ियाँ हों-सस्ती, टिकाऊ, टटके-से-टटके फैशन की । बल्कि यह पेशा चूड़ियों के साथ चूड़ीहारिनों के बनाव-श्रृंगार, रूप-रंग, नाजोअदा भी खोजता है, जो चूड़ी पहननेवालियों को ही नहीं, उनको भी मोह सके जिनकी जेब से चूड़ियों के लिए पैसे निकलते हैं। हिन्दू-मुसलमान भेद बिना गाँव के सारे लोग, रज़िया की चूड़ी के ग्राहक बन गये। लेकिन स्थिति अचानक बदल गयी। भारत के अन्यप्रदेशों के समान बेनीपुर गाँव में भी सांप्रदायिकता जाग उठती हैं। फलतः हिन्दू को हिन्दू व्यापारी, मुसलमान को मुसलमान व्यापारी होने लगे । सांप्रदायिकवादियों ने मनुष्य के मन को हिन्दू एवं मुसलमान के रूप में विभाजित कर उसमें बडी-सी दीवार निर्मित की।

रामवृक्ष बेनीपुरी से रज़िया की अंतिम भेंट तब होती है, जब लेखक चुनाव में उम्मीदवार बनकर उनके गाँव पहुँचे। तब दोनों बुढ़ापे पर चढ़ चुके थे। रज़िया बीमार भी थी। जब लेखक उनके घर के बरामदे में खड़े थे, तब दोनों पुत्र वधुओं की सहायता से रज़िया उनके पास आयी। दोनों बड़ी देर तक अवाक रह गए। आगे परस्पर हालचाल पूछने लगे। जब बेनीपुरी रज़िया से विदा ली, तब उनकी आँखें भरकर बह गयी।

Critical Overview / अवलोकन

रामवृक्ष बेनीपुरी हिन्दी के विशिष्ट स्थान पर रहने वाले लेखकों में एक है। उन्होंने रेखाचित्र नामक आधुनिक साहित्य विधा को बहुत ही ह्रदय स्पर्शी एवं जन प्रिय बना दिया है। रामवृक्ष बेनीपुरी लेखक, संपादक, समाज सेवी होने के साथ-साथ प्रगतिवादी लेखक भी है। माटी की मूरतें बेनीपुरी का सन् 1946 में प्रकाशित रेखाचित्र संग्रह है, जिनमें ग्यारह अपूर्व रेखाचित्र संकलित है। रजिया, माटी की मूरतें ग्रंथ का पहला रेखाचित्र है। समकालीन समाज में कहीं-कहीं धर्म के नाम पर पागलपन चलते समय प्रस्तुत रेखाचित्र का महत्व बढ़ता जा रहा है।

Recap / पुनरावृत्ति

- रज़िया एक ग्रामीण मुस्लिम चूडीहारिन की बेटी है
- रज़िया बेनीपुरी के पड़ोसी गाँव की रहनेवाली है
- रज़िया बचपन से ही माँ के पीछे, चूड़ियाँ बेचने को जाती थी
- रज़िया नटखट और हंसमुख लड़की है
- रज़िया चूडीहारिन का स्वतंत्र अस्तित्व पा लेती है
- वह अपने पेशे में निपुण थी
- रज़िया जवान होते ही उनकी शादी हसन से हुई
- रज़िया साधारणतः अपने पति के साथ चूड़ी वगैरह खरीदने को पटना पर जाती थी
- बेनीपुरी पटना के एक अखबार में संपादक का काम करता था
- एक बार पटना में बेनीपुरी से रज़िया और हसन की भेंट होती थी
- पटना की मुलाकात में गाँव और नगर की सामाजिक परिवेश के परिवर्तन के बारे में रज़िया, बेनीपुरी से खूब कहती है
- हिन्दू-मुसलमान सांप्रदायिकता फैलने के बारे में रज़िया आशंकित थी
- सांप्रदायिकता के फलस्वरूप धीरे-धीरे रज़िया का परंपरागत पेशा बंद हो जाता है
- कई साल बाद जब बेनीपुरी चुनाव में उम्मीदवार बनकर रज़िया के गाँव पहुंचे, तब दोनों की फिर मुलाक़ात होती है
- बेनीपुरी को पता चलता है कि हसन चल बसे, उनके तीनों लड़कों में पहले दोनों किसी न किसी नौकरी कर परिवार चलाते थे
- बेनीपुरी और रज़िया के यह अंतिम मुलाकात दोनों के मन में कई घटनाओं एवं क्षणों को उद्वेलित करते हैं

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. रज़िया किस विधा की रचना है?
2. रज़िया किनकी रचना है?
3. रामवृक्ष को बेनीपुरी उपनाम कैसे मिली?
4. बेनीपुरी का व्यक्तित्व कैसा था ?
5. रज़िया रामवृक्ष बेनीपुरी के कौन से ग्रंथ में संकलित रेखाचित्र है ?
6. रामवृक्ष बेनीपुरी का निधन कब हुआ?
7. रज़िया की रूपगत विशेषता बताइए ?
8. रज़िया की माँ क्या काम करती थी?
9. रज़िया कौन है?
10. रज़िया क्यों आशंकित थी ?

Answers उत्तर

1. रेखाचित्र
2. रामवृक्ष बेनीपुरी
3. बेनीपुर उनके गाँव का नाम है, उसे उन्होंने अपने नाम के साथ जोड़ दिया है।
4. बेनीपुरी स्वतंत्रता आंदोलन के शक्तिशाली सेनानी रहे थे। उनमें बचपन से ही समाजवादी भावना जोरों पर थे।
5. रज़िया रामवृक्ष बेनीपुरी कृत माटी की मूरतें नामक ग्रंथ में संकलित रेखाचित्र है।
6. रामवृक्ष बेनीपुरी की मृत्यु 7 सितंबर 1968 को हुआ था।
7. रज़िया नटखट और हंसमुख लड़की है।
8. रज़िया की माँ चूड़ियाँ बेचने को जाती थी।
9. रज़िया एक ग्रामीण मुस्लिम चूड़ीहारिन की बेटी है।
10. हिन्दू-मुसलमान सांप्रदायिकता फैलने के बारे में रज़िया आशंकित थी।

Assignments प्रदत्त कार्य

1. रामवृक्ष बेनीपुरी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर एक लेख तैयार कीजिए।
2. अपने मनपसंद किसी एक रेखाचित्र पर टिप्पणी लिखिए।
3. रज़िया नामक रेखाचित्र का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
4. सारांश देकर समर्थन कीजिए कि रज़िया हिन्दी के इने-गिने श्रेष्ठ रेखाचित्रों में एक है।
5. रज़िया का चरित्र-चित्रण कीजिए।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. रामवृक्ष बेनीपुरी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर एक लेख तैयार कीजिए।
2. रज़िया नामक रेखाचित्र का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
3. सारांश देकर समर्थन कीजिए कि रज़िया हिन्दी के इने-गिने श्रेष्ठ रेखाचित्रों में एक है।
4. रज़िया का चरित्र-चित्रण कीजिए।
5. अपने मनपसंद किसी एक और रेखाचित्र पर टिप्पणी तैयार कीजिए।

BLOCK - 05

संरचनात्मक व्याकरण

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

इकाई : 1
शब्द विचार

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- शब्द विचार का परिचय प्राप्त करता है।
- व्याकरणिक आधार पर शब्दों के भेदों की जानकारी प्राप्त करता है।
- शब्द विचार का वर्गीकरण समझता है।
- अर्थ, रचना, व्युत्पत्ती के आधार पर शब्द विचार की जानकारी प्राप्त करता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

एक अक्षर या अधिक अक्षरों का समुदाय, जिस का कोई अर्थ हो वह 'शब्द' कहलाता है। शब्द दो प्रकार के होते हैं। हिन्दी व्याकरण का वह भाग जिस में शब्द के शुद्ध उच्चारण, शुद्ध लेखन की विवेचना की जाती है उसे शब्द विचार कहते हैं। इसके अंतर्गत शब्द की परिभाषा, भेद-उपभेद, संधि, विच्छेद, रूपांतरण, निर्माण आदि से सम्बंधित नियमों पर विचार किया जाता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

- वाचक शब्द, लाक्षणिक शब्द, व्यंजक शब्द, रूढ शब्द, यौगिक शब्द, योग रूढ़, तत्सम शब्द, तद्‌भव शब्द, देशज शब्द ।

Discussion / चर्चा

शब्द विचार

शब्दों की उत्पत्ति, प्रकार, रूप, रूपांतर आदि के अध्ययन को शब्द विचार कहते हैं। एक या एक से अधिक अक्षरों के सार्थक योग को शब्द कहते हैं।

उदा :- आ, चलो, राम

हिन्दी शब्दों के विभाजन चार आधारों पर किया जाता हैं :-

1. अर्थ के आधार पर
2. व्युत्पत्ति के आधार पर
3. उत्पत्ति के आधार पर
4. वाक्य में प्रयोग करने के आधार पर

1. अर्थ के आधार पर

अर्थ के आधार पर शब्दों के तीन भेद होते हैं :-

1. वाचक शब्द
2. लाक्षणिक शब्द
3. व्यंजक शब्द

वाचक शब्द

आसानी से समझ में आने वाले और एक मुख्य अर्थ होने वाले शब्द को वाचक शब्द कहते हैं।

उदाहरण :- यमुना, राम, कहाँ, दौड़ना

लाक्षणिक शब्द

जिस शब्द में प्रधान अर्थ के साथ अप्रधान अर्थ भी प्रकट

होता है, उसे लाक्षणिक शब्द कहते हैं। इस में लक्षण के अनुसार अर्थ आता है।

उदा :- अरूण गधा है। (यहाँ गधे की मूर्खता का आरोप अरूण पर किया गया है। वास्तव में अरूण गधा नहीं है। उस पर गधे की मूर्खता का आरोप करने से यह लाक्षणिक शब्द बन गये है।)

व्यंजक शब्द

मुख्य और लाक्षणिक अर्थ न होकर एक नया गूढ़ अथवा सांकेतिक अर्थ आता है तो उसे व्यंजक शब्द कहते हैं।

उदा:- तुम बड़े बहादुर हो। (यहाँ बहादुर शब्द डर को सूचित करता है।)

व्युत्पत्ति के अनुसार शब्द के भेद

व्युत्पत्ति के अनुसार शब्दों को तीन प्रकार से विभाजित कर सकते हैं :-

1. रूढ़ शब्द
2. यौगिक शब्द
3. योगरूढ़ शब्द

रूढ़ शब्द

कुछ शब्दों का विभाजन नहीं किया जा सकता है, ऐसे शब्द को रूढ़ शब्द कहते हैं। अथवा विभाजन करते समय यथार्थ अर्थ नहीं मिलता है तो उसे रूढ़ शब्द कहते हैं।

उदा:- पैर (पैर शब्द का विभाजन पै + र के रूप में करता तो 'पै' या 'र' को कोई अर्थ नहीं मिलता है।

आँख (आँख शब्द का विभाजन आँ + ख के रूप में करता तो 'आँ' या 'ख' को कोई अर्थ नहीं मिलता है)

सिर (सिर शब्द का विभाजन सि + र के रूप में करता है तो 'सि' या 'र' को कोई अर्थ नहीं मिलता है।)

कान (कान शब्द का विभाजन का + न के रूप में करता है 'का' या 'न' को कोई अर्थ नहीं मिलता है।)

पानी (पानी शब्द का विभाजन पा + नी के रूप में करता है 'पा' या 'नी' को कोई अर्थ नहीं मिलता है।)

नदी (नदी शब्द का विभाजन न + दी के रूप में करता है तो 'न' या 'दी' को कोई अर्थ नहीं मिलताहै।)

घोड़ा (घोड़ा शब्द का विभाजन घो + ड़ा के रूप में करता है 'घो' या 'डा' को कोई अर्थ नहीं मिलताहै।)

यौगिक शब्द

दो शब्दों के मिलन (योग) से बननेवाले शब्द को यौगिक शब्द कहते हैं। (इसमें अलग रहते समय और मिलते समय सही अर्थ होता है।)

उदा:- दूधवाला (दूध + वाला = दूधवाला)

पाठशाला (पाठ + शाला = पाठशाला)

विद्यालय (विद्या + आलय = विद्यालय)

योगरूढ़

दो या दो से अधिक शब्दों से बनकर यथार्थ अर्थ के बदले नया अर्थ पैदा करने वाले शब्द को योगरूढ़ शब्द कहते हैं।

उदा:- पंकज - पंक + ज अर्थात कीचट से उत्पन्न ,सामान्य अर्थ छोड़कर विशेष अर्थ है कमल

उत्पत्तिके आधार पर

उत्पत्ति के आधार पर शब्द चार प्रकार के हो सकते हैं -

1. तत्सम शब्द
2. तद्भव शब्द
3. देशज शब्द
4. विदेशज (विदेशी) शब्द

तत्सम शब्द

किसी भी प्रकार के परिवर्तन के बिना सीधे हिन्दी में आये संस्कृत शब्दों को तत्सम शब्द कहते हैं।

संस्कृत के वे शब्द जो हिन्दी में ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते है,तत्सम कहलाते हैं।

उदा:- ग्राम, पुत्र, पौत्र, अग्नि, स्वर्ग, पृथ्वी, भ्रातृ, रात्रि, अक्षि, ओष्ठ, कर्म, गृह, धैर्य, नव्य, पुष्प

तद्भव शब्द

संस्कृत से कुछ परिवर्तन के साथ हिन्दी में उपयोग करने वाले शब्दों को तद्भव शब्द कहते हैं।

उदा:-

संस्कृत के तत्सम शब्द - आम्र हिन्दी में तद्भव - आम

संस्कृत के तत्सम शब्द - अग्नि हिन्दी में - आग

संस्कृत के तत्सम शब्द - नव्य हिन्दी में - नया

संस्कृत के तत्सम शब्द - दुग्ध हिन्दी में - दूध

संस्कृत के तत्सम शब्द - दधि हिन्दी में - दही

संस्कृत के तत्सम शब्द - दन्त हिन्दी में - दाँत

संस्कृत के तत्सम शब्द - शत हिन्दी में - सौ

संस्कृत के तत्सम शब्द - हस्त हिन्दी में - हाथ

संस्कृत के तत्सम शब्द - अक्षि हिन्दी में - आँख

संस्कृत के तत्सम शब्द - आसरा हिन्दी में - आश्रय

संस्कृत के तत्सम शब्द - ओष्ठ हिन्दी में - ओंठ

संस्कृत के तत्सम शब्द - कर्म हिन्दी में - काम

संस्कृत के तत्सम शब्द - गृह हिन्दी में - घर

संस्कृत के तत्सम शब्द - घृत हिन्दी में - घी

संस्कृत के तत्सम शब्द - भ्रातृ हिन्दी में - भाई

संस्कृत के तत्सम शब्द - पृष्ठ हिन्दी में - पीठ

संस्कृत के तत्सम शब्द - पौत्र हिन्दी में - पोता

संस्कृत के तत्सम शब्द - पुष्प हिन्दी में - फूल

देशज शब्द

वे शब्द हैं जो न संस्कृत के हैं, न संस्कृत से बने हैं और न ही विदेशी हैं। वे इस देश की अपनी उपज हैं।

उदा:- चिड़िया, खिड़की, लोटा, कपड़ा

विदेशज (विदेशी) शब्द

अंग्रेजी, अरबी, फारसी, तुर्की, फ्रांसीसी जैसे भारत के बाहर की भाषाओं से हिन्दी की ओर आये शब्दों को विदेशज (विदेशी) शब्द कहते हैं।

उदा:- इंजन, जिला, किताब, हकीम, आदत, तहसील, गवाह, दरवाजा, चालाक, ट्रेन, बेंच, अखबार, आखिर, चादर, दफ्तर, अफसर, पिकनिक, टिकट, चम्मच, उम्र, औरत, नशा, तबादला, चाय, ट्रेन, होटल ।

Critical Overview / अवलोकन

वर्ण भाषा का मूल आधार है। एक या एक से अधिक वर्णों/ ध्वनि से बनी सार्थक एवं स्वतंत्र ध्वनी को शब्द कहते हैं। हिन्दी व्याकरण वह शास्त्र है जो हिन्दी भाषा को शुद्ध रूप में बोलने और लिखने सम्वधी नियमों का बोध करता है। हिन्दी भाषा को शुद्ध रूप से समझने, लिखने और बोलने केलिए हिन्दी व्याकरण के नियमों को अच्छे तरीके से समझना अति आवश्यक है।

Recap / पुनरावृत्ति

- शब्द विचार का परिचय
- शब्द विचार की उत्पत्ती
- शब्दों का विभाजन
- शब्दों के प्रकार
- शब्दों के भेद
- तत्सम शब्दों का प्रयोग
- तद्भव शब्दों का प्रयोग
- देशज शब्दों का प्रयोग
- विदेशज शब्दों का प्रयोग

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. हिन्दी में शब्दों के विभाजन कितने आधार पर किया गया है ?
2. अर्थ के आधार पर शब्द के कितने भेद हैं ?
3. व्युत्पत्ती के अनुसार शब्द के भेद क्या-क्या हैं ?
4. भारत के बाहर की भाषाओं से हिन्दी की ओर आये शब्दों को क्या कहते हैं ?
5. अपने ही देश की भाषाओं से हिन्दी की ओर आये शब्दों को क्या कहते हैं ?
6. आसानी से समझ में आनेवाले और एक मुख्य अर्थ होने वाले शब्द को क्या कहते हैं?
7. तत्सम शब्द के दो उदाहरण दीजिए ?
8. एक या एक से अधिक अक्षरों के सार्थक योग को क्या कहते हैं।

Answers उत्तर

1. चार।
2. तीन।
3. रूढ़ शब्द, यौगिक शब्द, योगरूढ़ शब्द।
4. विदेशज शब्द(विदेश)।
5. देशज शब्द।
6. वाचक शब्द।
7. पुत्र, गृह।
8. शब्द।

Assignments प्रदत्त कार्य

1. शब्द विचार की परिभाषा देते हुए उस का वर्गीकरण दीजिए ।
2. शब्द किसे कहते हैं ? अर्थ के आधार पर शब्दों के कितने भेद हैं ?
3. उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के भेदों को सोदाहरण समझाइए ।
4. हिन्दी व्याकरण में शब्द विचार का स्थान क्या है ?
5. तत्सम शब्द के उदाहरण देकर उसको स्पष्ट कीजिए।
6. 'वर्ण भाषा का मूलआधार है' इस विषय पर आलेख तैयार कीजिए।

इकाई : 2

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- संज्ञा के बारे में जानकारी प्राप्त करता है।
- संज्ञा के भेद को समझता है।
- सर्वनाम को समझता है।
- विशेषण का परिचय मिलता है।
- सर्वनाम और विशेषण के भेदों को समझता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

व्याकरण के द्वारा हमें किसी भाषा का शुद्ध रूप समझ में आता है। व्याकरण भाषा के अध्ययन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। भाषा के प्रयोग करने केलिए हमें भाषा के नियमों को जानने की ज़रूरत है। इन्हीं नियमों की जानकारी हमें व्याकरण से मिलती है।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- संज्ञा, व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, भाववाचक संज्ञा, सर्वनाम, पुरुषवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम, मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम, निजवाचक सर्वनाम, निश्चयवाचक सर्वनाम, अनिश्चयवाचक सर्वनाम, प्रश्नवाचक सर्वनाम, पुरुषवाचक सर्वनाम और निजवाचक सर्वनाम, विशेषण, विशेष्य विशेषण, संख्यावाचक विशेषण, परिमाणवाचक विशेषण, विशेषणों के रूपांतरण।

Discussion / चर्चा

संज्ञा

किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव, जाति, अवस्था आदि के नाम के बारे में बोध कराने वाले शब्द के रूप को संज्ञा कहते हैं। इसे अंग्रेजी में Noun कहते हैं।

उदाः- अरुण, पुस्तक, यमुना, चीन, दिल्ली, दया, मुंबई।

संज्ञा विकारी (Changeable) शब्द है।

संज्ञा तीन प्रकार के होते हैं:-

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा (Proper noun)
2. जातिवाचक संज्ञा (Common noun)
3. भाववाचक संज्ञा (Abstract noun)

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा

किसी एक विशेष व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि के नाम सूचित करने वाले संज्ञा के रूप को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

उदाः-अनन्तु, रामायण, कोलकत्ता, कालिकट, ताजमहल।

2. जातिवाचक संज्ञा

एक जाति के संपूर्ण प्राणियों अथवा वस्तुओं के नाम सूचित

करने वाले संज्ञा के रूप को जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

उदा:- मनुष्य, गाय, पहाड़, पशु, पुस्तक, नदी, जानवर

3. भाव वाचक संज्ञा

पदार्थ के गुण, दोष, अवस्था, स्थिति, व्यापार आदि के बारे में बोध कराने वाले संज्ञा के रूप को भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

उदा:- हंसी, रुलाई, मिठास, खुशी, चतुराई, बुढ़ापा, शोक, लड़कपन, चोरी।

भाववाचक संज्ञाएँ जाति वाचक संज्ञा से, विशेषण से और क्रिया से बनती है।

उदा:- जातिवाचक संज्ञा से :-

मनुष्य >	मनुष्यत्व
बूढ़ा >	बुढ़ापा
लड़का >	लड़कपन
पंडित >	पांडित्य
दोस्त >	दोस्ती
आदमी >	आदमियत
गुरु >	गुरुत्व
बच्चा >	बचपन
शिशु >	शैशव
ईश्वर >	ऐश्वर्य
युवक >	यौवन

उदा:- विशेषण से -

रंग >	रंगीन
महान >	महानता
काला >	कालापन
आलसी >	आलस्य
विधवा >	वैधव्य
उचित >	औचित्य
गरम >	गरमी
तपस्वी >	तपस्या
वीर >	वीरता
सफेद >	सफेदी
सुन्दर >	सौन्दर्य

उदा:- क्रिया से -

पढ़ना >	पढ़ाई
पूजना >	पूजा
चलाना >	चाल, चलन
उठना >	उठाई
गिरना >	गिरावट
लड़ना >	लड़ाई
दौड़ना >	दौड़
बोलना >	बोल
हँसना >	हँसी
चुनना >	चुनाव
भूखा >	भूख

संज्ञाओं के रूपांतर

लिंग, वचन और कारक के कारण संज्ञाओं में होने वाले विकार (परिवर्तन) को संज्ञाओं के रूपांतर कहते हैं।

उदा:- लिंग के कारण

लड़का खेलता है >	लड़की खेलती है।
बच्चा आता हैं >	बच्ची आती है।
अध्यापक पढ़ाता है >	अध्यापिका पढ़ाती है।

उदा:- वचन के कारण -

लड़का खेलता है >	लड़के खेलते हैं।
अध्यापक पढ़ाता है >	अध्यापक पढ़ाते हैं।
बच्चा आता हैं >	बच्चे आते हैं।

उदा:- कारक के कारण -

लड़का खेलता हैं। >	लड़के को खेलने दो ।

सर्वनाम

संज्ञा की पुनरुक्ति (आवृत्ति) को दूर करने के लिए उसके अर्थ में प्रयोग करने वाले विशेष शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।

अथवा :- संज्ञा के बदले प्रयोग करने वाले विकारी शब्द को सर्वनाम कहते हैं।

सर्वनाम शब्द का अर्थ है - सबका नाम।

उदा:- मैं, हम, तू, तुम, वह, यह, कोई, आप, कुछ, जो, आदि ।

शरण किरण से कहा कि मैं तुमसे सबेरे मिलूँगा ।

ऊपर दिये वाक्य में 'मैं' और 'तुम' सर्वनाम हैं। इधर सर्वनाम का प्रयोग न होता तो वाक्य इस प्रकार होता:- 'शरण किरण से कहा कि शरण किरण से सबेरे मिलेगा' -

इससे शब्दों की आवृत्ति आती है जो भाषा के सौन्दर्य में बाधा आ जाता है, इसलिए सर्वनाम का प्रयोग होता है।

सर्वनाम विकारी (Changeable) शब्द है। वचन और कारक के कारण सर्वनाम में रूपांतर होता है। सर्वनाम लिंग भेद के सिवा सभी संज्ञाओं के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं।

प्रयोग के अनुसार सर्वनाम के छः भेद हैं :-

1. पुरुषवाचक सर्वनाम (मैं, तू, तुम, आप, हम, यह, वह, ये, वे)
2. निजवाचक सर्वनाम (आप)
3. निश्चयवाचक सर्वनाम (यह, वह, ये, वे)
4. अनिश्चयवाचक सर्वनाम (कोई, कुछ)
5. सम्बन्धवाचक सर्वनाम (जो, सो)
6. प्रश्नवाचक सर्वनाम (कौन, क्या)

1.पुरुषवाचक सर्वनाम

बोलने वाले, सुनने वाले तथा अन्य व्यक्ति को सूचित करने वाले सर्वनाम को पुरुष वाचक सर्वनाम कहते हैं।

उदा:- मैं, तुम, हम, आप ।

पुरुष वाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते है :-

1. उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम
2. मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम
3. अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम

1. उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम

बोलने वाले या लिखने वाले के स्थान पर प्रयोग करने वाले सर्वनाम को उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।(मैं,हम)

उदा:- मैं पढ़ रहा हूँ।

मैं लिखता हूँ ।

हम पढ़ चुके हैं।

हम लिखते हैं।

2. मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम

सुनने वाले के लिए प्रयुक्त सर्वनाम को मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। इसका प्रत्यय (चिह्न) (तू, तुम, आप)

उदा:- तू पढ़ रहा है।

तू क्या कह रहा है ?

तुम जाओ।

तुम इधर आओ।

आप कहाँ जा रहे हैं ?

आप जाइये।

3. अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम

जिसके विषय में कुछ कहा जाये या लिखा जाये, उस के लिए प्रयोग करने वाले सर्वनाम को अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। इसका चिह्न यह, वह, ये, वे है।

उदा:- यह राहुल है

वह पढ़ती है।

ये शामको सिनेमा देखते हैं।

वे अनाथ बच्चे हैं।

1. निजवाचक सर्वनाम

अपने आप (स्वयं)के लिए प्रयोग करने वाले सर्वनाम को निज वाचक सर्वनाम कहते हैं। इसका चिह्न आप है।

उदा:- मैं आप (स्वयं)यह काम करूँगा ।

मैं खुद लिख लूंगा ।

मैंने यह रोटी आप बनायी है।

यह अपना ही घर है।

वरुण आप गाड़ी चलाकर आया ।

वह अपने आप यहाँ आया ।

वह अपना काम अपने आप करती है।

2. निश्चयवाचक सर्वनाम

किसी व्यक्ति या वस्तु की निश्चित सूचना देने वाले सर्वनाम को निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। इसका चिह्न यह, वह, ये, वे है।

उदा:- यह मेरा किताब है।

यह किसकी किताब है।

वह उसकी कलम है।

ये पुरानी किला है।

वे किताबें हैं

3. अनिश्चय वाचक सर्वनाम

किसी अनिश्चित व्यक्ति या वस्तु के बारे में सूचना देने वाले सर्वनाम को अनिश्चय वाचक सर्वनाम कहते हैं। (कोई, कुछ)

उदा:- यहाँ कोई आ रहा है।

रसोई पर कोई है।

कोई गा रहा है।

खिड़की के सामने कुछ चमक रहा है।

चाय में कुछ गिर गया है।

खड़े हुए लोगों में किसी ने उसे मारा ।

कक्षा में कुछ पड़ा है।

4. सम्बन्धवाचक सर्वनाम

दो व्यक्तियों, दो वस्तुओं या दो बातों को परस्पर संबंध करने वाले सर्वनाम को सम्बन्ध वाचक सर्वनाम कहते हैं। (जो, सो)।

उदा:- जो अच्छा पढ़ेगा सो परीक्षा में उत्तीर्ण होता।

जो सच्चा मित्र है सो सहायता करेगा।

जिसकी लाठी उसकी भैंस।

जैसा करोगे वैसा भरोगे।

जो पैसा मिलता सो सिनेमा देखता।

5. प्रश्नवाचक सर्वनाम

प्रश्न (सवाल) का बोध कराने वाले सर्वनाम को प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

उदा:- वहाँ कौन सोता है ?

तुम कौन हो ?

तुम्हें क्या चाहिए ?

क्या मैं अन्दर आऊँ ?

यह कलम किसकी है ?

बर्तन में क्या रखा है ?

कौन-कौन आये हैं ?

वे क्या-क्या ले आये ?

पुरुषवाचक आप और निजवाचक आप में अन्तर

पुरुष वाचक आप शब्द

आप, आपने	-	आप लोग, आप लोगों ने
आपको	-	आप लोगों को
आप से	-	आप लोगों से
आपको, आप के लिए-		आप लोगों को, आप लोगों के लिए
आपका, आपके	-	आप लोगों का, आप लोगों के
आपकी	-	आप लोगों की
आप में	-	आप पर आप लोगों में, आप लोगों पर

निजवाचक आप शब्द

आप (इसका बहुवचन नहीं होता)

आपको, अपने को, अपने आपको

आपसे, अपने से, अपने आपसे

आपको, अपने को, अपने आपको

आपसे, अपने से, अपने आप से

अपना, अपने, अपनी

आपमें, अपने में, अपने आप में

आप पर, अपने पर, अपने आप पर

विशेषण

वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।

उदा:- लम्बा आदमी, काली बिल्ली, लाल किताब, अच्छा लड़का, चौड़ा रास्ता, पुराना किला।

(ऊपर दिये उदाहरणों में लम्बा, काली, लाल, अच्छा, चौड़ा, पुराना आदि शब्द उनके साथ की संज्ञाओं की विशेषता को व्यक्त करते हैं। अथवा ये विशेषण हैं।)

विशेष्य विशेषण

विशेषण के द्वारा जिस शब्द की विशेषता प्रकट होते हो, उसे विशेष्य विशेषण कहते हैं।

(लम्बा आदमी, काली बिल्ली, लाल किताब, अच्छा लड़का, चौड़ा रास्ता, पुराना किला - इन वाक्यों में आदमी, बिल्ली, किताब, लड़का, रास्ता, किला आदि विशेष्य हैं।)

विशेषण विकारी (Changeable) शब्द है। लिंग और वचन के अनुसार विशेषण में परिवर्तन होता है।

उदा:- एकवचन में	- अच्छा लड़का।
बहुवचन में	- अच्छे लड़के।
पुल्लिंग के अनुसार	- अच्छा लड़का।

स्त्रीलिंग के अनुसार - अच्छी लड़की।

विशेषण चार प्रकार के होते हैं :-

1. गुण वाचक विशेषण
2. संख्या वाचक विशेषण
3. परिमाण वाचक विशेषण
4. सार्वनामिक विशेषण

1. गुणवाचक विशेषण

संज्ञा या सर्वनाम के रूप, रंग, गुण, आकार, दशा, स्थान, काल आदि की विशेषता प्रकट करने वाले विशेषण को गुण वाचक विशेषण कहते हैं।

उदाः- (गुण) - भला आदमी, बुरा लड़का, दुष्ट जन, अच्छा लड़का, बलवान आदमी, विद्वान लोग।

(रंग) - सफेद कपड़ा, लाल किला, धुंधला आसमान

(दशा) - अमीर लोग, गरीब आदमी, मोटालड़का, पतला कमरा

(आकार) - लम्बा आदमी, चौड़ा सड़क, सीधे रूप

(काल) - पिछले साल, प्राचीन गुफा, अगला आदमी

(स्थान) - भारतीय इतिहास, दायें हाथ, ऊपरी कमरे

2.संख्यावाचक विशेषण

संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध कराने वाले विशेषण को संख्या वाचक विशेषण कहते हैं।

उदाः- एक रुपया, पाँच बालक, आधा पेट, पहला लड़का, तीनों बच्चे, चारों तरफ, थोड़ा चावल, इतना चीज़, ज़रा-सा नमक ।

संख्या वाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं :-

1. निश्चित संख्या वाचक विशेषण
2. अनिश्चित संख्या वाचक विशेषण

1. निश्चित संख्या वाचक विशेषण

किसी निश्चित संख्या का बोध करानेवाले विशेषण को निश्चित संख्या वाचक विशेषण कहते हैं।

उदा :- एक, सौ, लाख, पहला, दूसरा, तीसरा, दुगुना, तिगुना, चौगुना, दोनों, चारों प्रति

निश्चित संख्या वाचक विशेषण के 6 भेद होते है :-

1. पूर्णांक बोधक उदाः- एक, सौ, पाँच, लाख, करोड़
2. अपूर्णांक बोधक उदाः- आधा, पाव, सवा
3. क्रमवाचक उदाः- पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा, पाँचवाँ, सातवाँ, दसवाँ
4. आवृत्तिवाचक उदाः- दुगुना, तिगुना, चौगुना
5. समूहवाचक उदाः- दोनों, चारों, दसों, हज़ारों, करोड़ों
6. प्रत्येक वाचक उदाः- प्रति, प्रत्येक, हर एक

2. अनिश्चित संख्या वाचक विशेषण

किसी अनिश्चित संख्या का बोध करानेवाले विशेषण को अनिश्चित संख्या वाचक विशेषण कहते हैं।

उदाः- कुछ लोग, कई साल, अनेक समस्याएँ, थोड़ा, बहुत, काफी, ज्यादा ।

3. परिमाणवाचक विशेषण

वस्तु की माप, तोल अथवा परिमाण का बोध कराने वाले विशेषण को परिमाण वाचक विशेषण कहते हैं।

परिमाण वाचक विशेषण दो प्रकार के होते है :-

1. निश्चित परिमाण वाचक विशेषण
2. अनिश्चित परिमाण वाचक विशेषण

उदाः- (निश्चित संख्या)- पाँच मन गेहूँ, एक किलो माँस, दो आम, एक लीटर दूध।

उदाः- (अनिश्चित संख्या) - मुझे बहुत मिला है, उसे कम आमदनी होती है।

4. सार्वनामिक विशेषण

सर्वनाम विशेषण के रूप में आकर संज्ञा की विशेषता प्रकट करता है तो उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

उदाः- वह घर उसका है।

उस बच्चे का नाम क्या है ?

वह साफ-सुधरा कमरा है।

यह लड़की कहाँ से आती हैं।

ये घोड़े मेरे हैं।

विशेषणों के रूपांतर

लिंग, वचन और कारक के कारण विशेषण में होनेवाले रूपांतर को विशेषणों के रूपांतर कहते हैं।

परिमाण वाचक विशेषण

उदाः- अच्छा - अच्छे - अच्छी

काला - काले - काली

नीला - नीले - नीली

Critical Overview / अवलोकन

भाषा सम्बन्धी ज्ञान केलिए व्याकरण की शिक्षा आवश्यक है। भाषा का सामान्य ज्ञान हो जाने पर ही व्याकरण की शिक्षा दी जाना चाहिए। भाषा के प्रयोग करने केलिए हमें व्याकरण के नियमों को जानने की जरूरत है।

Recap / पुनरावृत्ति

- संज्ञा के भेद ।
- संज्ञा के रूपांतरण ।
- व्यक्तिवाचक संज्ञा ।
- जातिवाचक संज्ञा ।
- भाववाचक संज्ञा ।
- सर्वनाम ।
- विशेषण ।
- 'ने' का प्रयोग ।

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. संज्ञा के कितने प्रकार हैं ?
2. जातिवाचक संज्ञा का दो उदाहरण दीजिए ।
3. सर्वनाम के कितने प्रकार हैं ?
4. वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले शब्दों को क्या कहते है ?
5. विशेषण के कितने प्रकार हैं ?
6. संख्यावाचक विशेषण के कितने प्रकार हैं?
7. लिंग, वचन और कारक के कारण विशेषण में होनेवाले रूपांतरण को क्या कहते हैं ?
8. वस्तु की माप, तोल, अथवा परिमाण का बोध करानेवाले विशेषण को क्या कहते हैं ?

Answers उत्तर

1. तीन प्रकार।
2. पहाड़, नदी।
3. छः भेद है।
4. विशेषण
5. चार प्रकार। गुणवाचक विशेषण, संख्या वाचक विशेषण, परिमाण वाचक विशेषण, और सार्वनामिक विशेषण।
6. दो प्रकार। निश्चित संख्या वाचक और अनिश्चित संख्या वाचक।
7. विशेषणों के रूपांतरण कहते हैं।
8. परिमाण वाचक विशेषण।

Assignments प्रदत्त कार्य

1. हिन्दी में समुदाय वाचक और द्रव्य वाचक संज्ञाएँ किस संज्ञा के अन्तर्गत आती हैं?
2. संज्ञा क्या है और संज्ञा के प्रकार व्यक्त कीजिए।
3. संज्ञा को समझते हुए संज्ञा के प्रकार और भेद की चर्चा कीजिए।
4. सर्वनाम के भेद को समझाइए।
5. विशेषण के रूपांतरण क्या है? समझाइए।
6. भाषा सम्बन्धी ज्ञान केलिए व्याकरण की शिक्षा आवश्यक है, स्पष्ट कीजिए।

इकाई : 3
क्रिया और काल

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- क्रिया और काल को समझता है।
- क्रिया के सामान्य रूप का परिचय प्राप्त करता है।
- क्रिया के प्रकार को समझता है।
- 'ने' के प्रयोग को समझता है।
- 'काल' को समझता है।
- 'काल' के भेद को समझता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

'क्रिया' वाक्य को पूर्ण बनाती है। इसे ही वाक्य का 'विधेय' कहा जाता है। वाक्य में किसी काम के करने या होने का भाव क्रिया ही बताती है। जिससे काम का होना या करना समझा जाय, उसे ही क्रिया कहते है। क्रिया के जिस रूप से कार्य करने या होने के समय का ज्ञान होता है उसे 'काल' कहते हैं। जिससे उसके कार्य-व्यापार का समय और उसकी पूर्ण अथवा अपूर्ण अवस्था का बोध है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

- क्रिया, कर्ता, कर्म, धातु, क्रिया का सामान्य रूप, सकर्मक क्रिया, अकर्मक क्रिया, द्विकर्मक क्रिया, प्रेरणार्थक क्रिया, मूल धातु, यौगिक धातु, नाम धातु क्रिया, संयुक्त क्रिया, भूत काल, वर्तमानकाल, भविष्यत काल ।

Discussion / चर्चा

क्रिया

किसी काम के करने या होने को सूचित करने वाले शब्द के रूप को क्रिया कहते हैं।

उदा:- बच्चे मैदान में खेल रहे हैं।
अध्यापक हिन्दी पढ़ाते हैं।
अमृता नाचती हैं।
मोहन खाना खाता हैं।

(कुछ काम स्वयं होता हैं और कुछ करना पड़ता है, दोनों क्रिया है।)

कर्ता

क्रिया या काम (प्रवृत्ति) करने वाले को कर्ता कहते हैं।

कर्म

कर्ता के द्वारा किये जाने वाले काम को कर्म कहते हैं।

उदा:- आना, जाना, करना, लिखना, दौड़ना ।

क्रिया विकारी (Changeable- മാറ്റമുണ്ടാകുന്നത്) शब्द है। यह लिंग, वचन और कारक के अनुसार परिवर्तित होती है।

धातु (Verb root)

शब्द के मूल रूप को धातु कहते हैं।

धातु के साथ विशेष प्रत्यय (चिह्न) लगाकर क्रिया बनाते हैं।

उदा:- आ + ना = आना (इसमें आ मूल रूप या धातु है, ना क्रिया का चिह्न है।)

जा + ना = जाना (इसमें जा मूल रूप या धातु है, ना क्रिया का चिह्न है।)

कर + ना = करना (इसमें कर मूल रूप या धातु है, ना क्रिया का चिह्न है।)

लिख + ना = लिखना (आ, जा, कर, लिख आदि शब्द के मूल रूप या धातु है। ऐसे मूल रूप के साथ क्रिया का प्रत्यय (चिह्न) ना मिलाते तो क्रिया बनते हैं।)

उदा:- पढ़ से पढ़ना
चढ़ से चढ़ना
उठ से उठना
नाच से नाचना

क्रिया का सामान्य रूप

धातु और प्रत्यय से बनने वाले रूपों को क्रिया के सामान्य रूप कहते हैं। संज्ञा के स्थान पर इन रूपों के प्रयोग को क्रियार्थक संज्ञा (Verbal noun) कहते हैं।

उदा:- ऊँचे आवाज़ में हँसना अच्छा नहीं हैं।

मध्याहन में सोना अच्छी स्वभाव नहीं है।

क्रिया के प्रकार

क्रिया दो प्रकार के होते हैं-

1. सकर्मक क्रिया
2. अकर्मक क्रिया

1. सकर्मकक्रिया

क्रिया का फल कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़ता है तो उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।

उदा:- सीता ने आम खाया । (यहाँ क्रिया का फल आम पर पड़ता हैं, इसलिए सकर्मक क्रिया है।)

अमर व्याकरण पुस्तक पढ़ता हैं। (यहाँ क्रिया का फल पुस्तक पर पड़ता हैं, इसलिए क्रिया सकर्मक है।)

ममता दूध पीती है। (यहाँ क्रिया का फल दूध पर पड़ता हैं, इसलिए क्रिया सकर्मक है।)

2. अकर्मक क्रिया

क्रिया का फल कर्म पर न पड़कर कर्ता पर पड़ता है तो उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।

उदा:- लड़की नाचती है।
सनल सोता है।
अमृता रोती है।
लड़का हँसता है।
बैल दौड़ता है।

(ऊपर दिये वाक्यों में क्रिया का फल - भोक्ता कर्ता है। इसलिए क्रिया अकर्मक है।)

सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं की पहचान

सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं की पहचान क्या, किसे या किसको आदि प्रश्न करने से होती है। यदि कुछ उत्तर मिलता तो सकर्मक क्रिया और उत्तर न मिलता तो अकर्मक ।

उदाहरण के लिए पढ़ता है क्रिया के साथ 'क्या' प्रश्न किये जाने पर - हिन्दी पढ़ता है, अंग्रेजी पढ़ता है, कन्नड़ा पढ़ता है जैसे उत्तर मिलता है तो सकर्मक क्रिया है।

इसी प्रकार- क्या, किसे, किसको - आदि प्रश्नों के उत्तर नहीं मिलता है तो क्रिया अकर्मक है।

(कुछ क्रियाएँ सकर्मक और अकर्मक, दोनों में समान रूप में होती है।)

उदा:- ललचाना, लजाना, खुजलाना, भरना, घबराना आदि।

द्विकर्मक क्रिया

कुछ क्रियाएँ पूर्ण होने के लिए दो कर्मों की आवश्यकता होती है, ऐसे क्रिया को द्विकर्मक क्रिया कहते हैं।

उदा:- दादी ने बच्ची को कविता सुनाई - इस वाक्य में दो कर्म हैं। इसमें पहले कर्म को मुख्य कर्म और दूसरे को गौण (अप्रधान) कर्म कहते हैं।

क्रिया का अधिक फल पड़ने वाला मुख्यकर्म और कम फल पड़ने वाला गौण (अप्रधान)है।

उदा :- विद्यार्थी को छात्रवृति दी - इस वाक्य में छात्रवृति मुख्यकर्म (कार्य) है और दिया गौण (अप्रधान) कर्म (कार्य) है।

(क्रिया से ‘क्या’ प्रश्न पूछने पर जो उत्तर मिलता है वह मुख्य कर्म है और ‘किसे’ या ‘किसको’ प्रश्न पूछने पर जो उत्तर मिलता है वह गौण कर्म है।)

प्रेरणार्थक क्रिया

क्रिया कर्ता स्वयं न करके, किसी की प्रेरणा से करता तो उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।

उदा:- मालकिन नौकरानी से काम करवाती हैं।

मोहन ने बच्चे को सीढ़ियाँ चढ़ाया ।

चलवाना, खिलवाना, नचवाना

मूल क्रिया	पहली प्रेरणार्थक क्रिया	दूसरी प्रेरणार्थक क्रिया
पीना	पिलाना	पिलवाना
खाना	खिलाना	खिलवाना
जीना	जिलाना	जिलवाना
चढ़ना	चढ़ाना	चढ़वाना

अकर्मक क्रिया	सकर्मक क्रिया	प्रेरणार्थक क्रिया
चमकना	चमकाना	चमकवाना
निकलना	निकलाना	निकलवाना
तड़पना	तड़पाना	तड़पवाना

व्युत्पत्ति के अनुसार क्रिया के भेद

व्युत्पत्ति(Origination) के अनुसार क्रिया के मूल धातु और यौगिक धातु नामक दो भेद होते हैं।

1.मूल धातु-

दूसरी धातुओं से स्वतंत्र रहने वाले धातु को मूल धातु कहते हैं।

आ, जा, पढ़, लिख, चल, उठ, खेल जैसे सब मूल धातु हैं।

2.यौगिक धातु -

अन्य धातुओं से निर्मित धातु को यौगिक धातु कहते हैं।

उदा:- कर धातु से करा और करवा ।

नाम धातु क्रिया

साधारण क्रिया के अलावा अन्य शब्दों में प्रत्यय (चिह्न) लगाकर क्रिया बनायी जाती हैं, ऐसी क्रिया को नाम धातु क्रिया कहते हैं।

उदा:- रंग	+	ना	=	रंगना
हाथ	+	ना	=	हथियाना
अपना	+	ना	=	अपनाना
शर्म	+	ना	=	शर्माना
स्वीकार	+	ना	=	स्वीकारना
दुःख	+	ना	=	दुःखाना

संयुक्त क्रिया

दो या दो से अधिक धातुओं को मिला (संयुक्त) कर बनानेवाली क्रिया को संयुक्त क्रिया कहते हैं।

उदा:- कह देना - इसमें कह, देना - दोनों क्रिया है।

(रमेश उमेश से कह दिया कि आज हड़ताल नहीं चलता।)

खा जाना -(नीता से पहले रीता ने खा लिया)

चिल्ला उठाना - (बुधिया की मृत्यु पर घीसू और माधव चिल्ला उठे)।

काल

क्रिया के करने या होने के समय का बोध कराने वाले शब्द के रूप को काल कहते हैं। इससे क्रिया कब चला, चलता हैं या चलेगा, इसका पता मिलता है।

उदा:- लड़का आया था।

लड़का आता हैं।

लड़का आयेगा।

काल विकारी (Changeable) शब्द है। लिंग, वचन, कारक, वाच्य आदि के कारण काल का रूपान्तर होता है।

उदा :- विमल सोता है।

विमल सोया।

विमल सोएगा।

हिन्दी में काल तीन प्रकार के होते हैं -

1. भूतकाल
2. वर्तमान काल
3. भविष्यत (भावी) काल

1.भूतकाल (Past Tense)

क्रिया के बीते हुए समय का बोध करानेवाले काल के रूप को भूतकाल कहते हैं।

-अथवा-

क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय का पता चले, उसे भूतकाल कहते हैं।

उदाः- लड़का आया था।
राहुल कालिकट गया था।
वह खा चुका था।
मैंने पत्र लिखा था।

(भूतकाल का अर्थ है बीता हुआ। इससे क्रिया के कार्य के समाप्त होने का पता मिलता है।)

भूतकाल 6 प्रकार के होते हैं :-

1. सामान्य भूतकाल
2. आसन्न भूतकाल
3. पूर्ण भूतकाल
4. अपूर्ण भूतकाल
5. सन्दिग्ध भूतकाल
6. हेतुहेतुमद् भूतकाल

1. सामान्य भूतकाल

क्रिया के जिस रूप से भूतकाल के किसी विशेष समय को निश्चय नहीं होता, उसे सामान्य भूतकाल कहते हैं।

उदा :- गया, गये, गई, गईं ।

2. आसन्न भूतकाल

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात है कि क्रिया का व्यापार अभी - अभी समाप्त हुआ है, उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं।

उदा :- गया है, गये हैं, गई है, गई हैं।

3.पूर्ण भूतकाल

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात है कि क्रिया का व्यापार समाप्त हुए बहुत समय बीत चुका है, उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं।

उदा :- गया था, गये थे, गई थी, गई थीं।

4.अपूर्ण भूतकाल

क्रिया का व्यापार भूतकाल में रही थी, पर उसकी समाप्ति का पता न मिलता, उसे अपूर्ण भूतकाल कहते हैं।

उदा :- जाता था, जाते थे, जाती थी, जा रहा था, जा रहे थे, जा रही थी, जा रही थीं।

5. सन्दिग्ध भूतकाल

क्रिया बहुत समय पहले बीत चुका है, किन्तु उसके होने में कुछ संशय (सन्दिग्ध) होता है, उसे सन्दिग्ध भूतकाल कहते हैं।

उदा :- गया होगा, गयी होगी, गए होंगे, गयी होंगी, गया हूँगा, गयी हूँगी ।

6. हेतुहेतुमद् भूतकाल

क्रिया का व्यापार भूतकाल में होना संभव था, पर किसी कारण से नहीं हुआ, उसे हेतुहेतुमद् भूतकाल कहते हैं।

उदाः- यदि वह आता तो मैं उससे मिलता।
पिताजी निर्देश देता तो बच्चा चुप रहता।

2.वर्तमानकाल (Present Tense)

क्रिया का व्यापार समाप्त नहीं हुआ है, काम अब भी चल रहा है, यह सूचित करने वाले काल के रूप को वर्तमान काल कहते हैं।

उदाः- मोहन पढ़ रहा है।
तुम सो रहे हो।
अनघ लिखता है।

वर्तमान काल तीन प्रकार के होते हैं -

1. सामान्य वर्तमान काल
2. संदिग्ध वर्तमान काल
3. तात्कालिक या अपूर्ण वर्तमान काल

1. सामान्य वर्तमान काल

क्रिया वर्तमान काल में होने की सूचना देने वाले काल को सामान्य वर्तमान काल कहते हैं।

उदाः- मैं पढ़ता हूँ ।
तुम सोते हो ।
लड़के खेलते हैं।
लड़की आती है।

2. संदिग्ध वर्तमान काल

क्रिया वर्तमान काल में होने की सूचना संदिग्धता (संशय) के साथ देने वाले काल को संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं।

उदाः- रमेश पढ़ता हूँगा।
अमर सोता होगा।
लड़के पढ़ते होंगे।

3. तात्कालिक अथवा अपूर्ण वर्तमान काल

क्रिया का व्यापार शुरु हुआ है, किंतु अभी जारी है, उसे सूचित करने वाले काल को तात्कालिक या अपूर्ण वर्तमान काल कहते हैं।

उदाः- वे कपड़े पहन रहे हैं।
गाड़ी आ रही है।
अरुण खाना खा रहा है।
मैं पढ़ रहा हूँ ।
वे पढ़ रहे हैं।

3.भविष्यत काल (Future Tense)

आने वाले क्रिया की सूचना देने वाले काल के रूप को भविष्यत काल कहते हैं। भविष्यत काल का दूसरा नाम भविष्यत काल है।

उदाः- मैं जाऊँगा।
लड़के खेलेंगे।
वह आएगा।
लड़की आऊंगी।

भविष्यत काल के दो भेद हैं -

1. सामान्य भविष्यत काल
2. सम्भाव्य भविष्यत काल

1. सामान्य भविष्यत काल

क्रिया के आगे होने की सूचना मिलनेवाले भविष्यत काल के रूप को सामान्य भविष्यत काल कहते हैं।

उदा :- मैं जाऊँगा ।
तुम चलोगे ।
लड़का खेलेगा।
लड़के खेलेंगे।

2. सम्भाव्य भविष्यत काल

क्रिया भविष्य काल में होने की सम्भावना पायी जाये तो उसे सम्भाव्य भविष्यत काल कहते हैं।

उदाः- आज शायद पानी बरसे।
शायद कल सुबह वह आ जाए।
ईश्वर हमारी रक्षा करें।

'ने' प्रत्यय का प्रयोग

हिन्दी में कुछ विशेष सन्दर्भों में कर्ता कारक को सूचित करने के लिए वाक्य में कर्ता के साथ 'ने' प्रत्यय लगाते हैं।

'ने' प्रत्यय लगाने का नियम

1. सामान्य, आसन्न, संदिग्ध, पूर्ण भूत्कालों में सकर्मक क्रिया का प्रयोग करता है तो कर्ता के साथ 'ने' प्रत्यय लगाते हैं।

   उदाः- अनन्तु ने सबेरे आम खाया।
2. कर्ता के साथ 'ने' प्रत्यय लगाने पर क्रिया कर्म, लिंग और वचन का अनुसरण करती हैं।

   उदाः- अनन्तु ने फल खाया।
   अनन्तु ने दो फल खाए।
   अनन्तु ने दो जलेबी खाई।
3. अगर कर्म के साथ को प्रत्यय लगा हो, अथवा वाक्य में कर्म अव्यक्त हो, तो क्रिया रूप पुल्लिंग एकवचन में रहता हैं।

   उदाः- लड़कों ने बैल को पीटा।
   अध्यापक ने विद्यार्थियों को बुलाया।
   मैंने परीक्षा के लिए रात भर पढ़ा।

Critical Overview / अवलोकन

'क्रिया' और 'काल' का अध्ययन हिन्दी व्याकरण में वाक्य संरचना केलिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। काल की जानकारी होने से वाक्य में घटित होनेवाली क्रियाओं के समय की पहचान कर सकते हैं, जैसे कि वाक्य में बताया हुआ कार्य करना है, या हो चूका है, या अभी भी जारी है।

Recap / पुनरावृत्ति

- क्रिया का प्रकार।
- क्रिया की वर्गीकरण।
- काल को समझना।
- काल का भेद।
- वर्तमानकाल की जानकारी प्राप्त करना।
- भविष्य काल को समझना।
- भूतकाल और उनकी विशेषताएँ।
- 'ने' प्रत्यय का प्रयोग।

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. काल कितने प्रकार के हैं?
2. क्रिया कितने प्रकार की हैं?
3. व्युत्पत्ति के आधारपर क्रिया के भेद कितने हैं?
4. क्रिया कैसे परिवर्तित होती है?
5. क्रिया का फल कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़ता है तो उसे क्या कहते हैं?
6. दो या दो से अधिक धातुओं को मिला कर बनानेवाली क्रिया को क्या कहते हैं?
7. कुछ क्रियाएँ पूर्ण होने केलिए दो कर्मों की आवश्यकता होती है। ऐसी क्रिया को क्या कहते है?

Answers उत्तर

1. तीन प्रकार, भूतकाल, वर्तमानकाल, भविष्य काल।
2. दो प्रकार, सकर्मक क्रिया, अकर्मक क्रिया।
3. दो भेद, मूल धातु और यौगिक धातु।
4. कर्म।
5. लिंग,वचन और कारक के अनुसार।
6. सकर्मक क्रिया।
7. संयुक्त क्रिया।
8. द्विकर्मक क्रिया।

Assignments प्रदत्त कार्य

1. काल के विविध रूपों का सामान्य परिचय दीजिए।
2. भूतकाल के भेदों को सोदाहरण समझाइए ।
3. 'ने' का प्रयोग उदाहरण देकर समझाइए ।
4. वर्तमान काल से क्या तात्पर्य है, उसके भेदोंको सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ।
5. भविष्यत् काल से क्या तात्पर्य है, उसके भेदों को सोदाहरण समझाइए ।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी व्याकरण - आचार्य कामता प्रसाद गुरु ।
2. सामान्य हिन्दी व्याकरण - श्रीकृष्ण पाण्डेय ।
3. व्यवहारिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना - हरदेव बाहरी।
4. व्यवहारिक हिन्दी व्याकरण अनुवाद तथा रचना -डॉ .एच .परमेश्वरन ।

BLOCK - 06

व्याकरण के व्यावहारिक प्रयोग

इकाई : 1
शुद्ध कीजिए

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- भाषा सिद्ध होने की प्रधानता समझता है।
- व्याकरण की प्रधानता समझता है।
- व्याकरण की विशेषताएँ समझता है।
- भाषा की अशुद्धियों को समझता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हम सब जो कुछ बोलते हैं उसका एक निश्चित अर्थ होता हैं, इससे वह दूसरों की समझ में आता हैं। ऐसी सार्थक बोली को भाषा कहते हैं। भाषा के माध्यम से मनुष्य अपने भावों और विचारों को दूसरों पर प्रकट करता हैं। भाषा के शुद्ध प्रयोग के लिए व्याकरण की आवश्यकता हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

- व्याकरण, भाषा की प्रधानता, तू, तुम, आप का प्रयोग, व्याकरण की विशेषताएँ, भाषा की शुद्ध प्रयोग।

Discussion / चर्चा

'तू, तुम, आप' का प्रयोग देखिए;

- मध्यम पुरुष 'तू' कर्ता हैं तो क्रिया धातु का प्रयोग करते हैं।
  जैसे; तू वहाँ मत जा।

  तू बाज़ार चल।
- मध्यम पुरुष बहुवचन 'तुम' कर्ता हैं तो क्रिया धातु के अंत में 'ओ' जोड़ा जाते हैं।
  जैसे; तुम वहाँ मत जाओ।

  तुम बाज़ार चलो।
- मध्यम पुरुष बहुवचन 'आप' कर्ता हैं तो क्रिया धातु के अंत में 'इए' और जोड़ जाते हैं।
  जैसे; आप वहाँ मत जाइए ।

  आप बाज़ार चलिए।

अधिक जानकारी केलिए देखिए;

1. तू मेरी बात सुन ।
2. तुम यह बात ध्यान से सुनो ।
3. आप मेरी मदद कीजिए ।
4. तू बीच में मत बोल ।
5. तुम बीच में मत बोलो ।
6. आप बीच में मत बोलिए ।

अतिरिक्त अभ्यास केलिए आगे देखिए;

- तुम कौन हो?

मैं एक छात्र हूँ । यहाँ 'मैं' पुल्लिंग हैं। 'मैं' स्त्रीलिंग हैं तो, मैं छात्रा हूँ ऐसा कहती हैं।

- ▶ तुम्हारा नाम क्या है ?
  मेरा नाम राजू है।
- ▶ तुम कहाँ पढ़ते हो ?

मैं सर्वोदया स्कूल में पढ़ता हूँ । यहाँ 'मैं' पुल्लिंग होने के कारण पढ़ता हूँ । मैं स्त्रीलिंग हैं तो क्रिया पढ़ती हूँ, हो जाएँगे।

- ▶ लड़का पलंग पर सोता है। 'लड़का' पुल्लिंग एकवचन हैं, इसलिए क्रिया 'सोता है'।

लड़की पलंग पर सोती है। 'लड़की' स्त्रीलिंग एकवचन है इसके कारण क्रिया 'सोती है'।

लड़के मैदान में खेलते हैं। 'लड़के' पुल्लिंग बहुवचन होने से क्रिया 'खेलते हैं'।

लड़कियाँ मैदान में खेलती हैं। 'लड़कियाँ' स्त्रीलिंग बहुवचन हैं, इसलिए क्रिया 'खेलती हैं'।

- ▶ वह घर का काम करती हैं। इधर 'वह' स्त्रीलिंग हैं।

वे इलहाबाद में काम करते हैं।

'वे' बहुवचन हैं इसलिए क्रिया 'करते' हैं।

हम सब यहाँ आराम करते हैं।

- ▶ आदर को सूचित करने केलिए भी बहुवचन का प्रयोग करते हैं।

मामाजी पंजाब में काम करते हैं।

पिता मुंबई में रहते हैं।

- ▶ रजिला और शमीरा प्रार्थना करती हैं।
- ▶ रमेश और निसार खेलते हैं।
- ▶ बाप और माँ हँस रहे हैं। इधर देखिए, यहाँ 'बाप' पुल्लिंग हैं और 'माँ' स्त्रीलिंग हैं तो भी क्रिया पुल्लिंग बहुवचन में हैं।

आगे देखिए,

- ▶ जोस केला खाता होगा।
  उमा केला खाती होगी।
  लड़के केला खाते होंगे।
  जोस और जोसफ केले खाते होंगे।
  लड़कियाँ केला खाती होंगी।
  उमा और रमा केला खाती होंगी।

आगे देखिए, वार्तालाप द्वारा व्याकरण पढेंगे;

रवि : नमस्कार

जॉन : नमस्कार, आप कैसे हैं ?

रवि : मैं ठीक हूँ । आप कब आए ?

जॉन : मैं परसों आया ।

रवि : कितने दिन की छुट्टी है ?

जॉन : एक महीने की छुट्टी है।

रवि : घरवाले भी आए हैं ?

जॉन : नहीं, बच्चों को स्कूल जाना हैं, इसलिए अब वे न आ सके ।

रवि : अच्छा, आप से मिलकर बड़ी खुशी हुई ।

जॉन : मुझे भी । फिर मिलेंगे, धन्यवाद ।

रवि : धन्यवाद ।

एक ओर वार्तालाप देखिए,

- ▶ अध्यापक और अभिभावक के बीच का वार्तालाप

अध्यापक : आप क्यों आए ?

अभिभावक : मैं एक अभिभावक हूँ, प्रधान अध्यापक से मिलने आया हूँ ।

अध्यापक : उनसे मिलने की क्या जरूरत है ?

अभिभावक : मेरे बच्चे इस स्कूल में पढ़ते हैं, उनकी पढ़ाई के संबंध में जानने के लिए आया हूँ ।

अध्यापक : प्रधान अध्यापक यहाँ नहीं हैं। वे अभी आएँगे, आप उधर बैठिए ।

(प्रधान अध्यापक के आने के बाद)

अभिभावक : नमस्कार मास्टर जी, मैं आप से मिलने आया हूँ ।

प्रधान अध्यापक : बताओ, क्या बात है ?

अभिभावक : मेरा एक लड़का इधर पढ़ता हैं।

प्रधान अध्यापक : वह किस दर्जे में हैं ?

अभिभावक : वह दसवें दर्जे में पढ़ता है।

प्रधान अध्यापक : वह किस डिविषन में है ?

अभिभावक : वह डिविषन ए में पढ़ता है।

प्रधान अध्यापक : अच्छा मैं क्लास टीचर को बुलाऊँगा।

ये है क्लास टीचर उनसे पूछ लीजिए।

अभिभावक : नमस्ते मास्टर जी, में अपने बच्चे की पढ़ाई के बारे में पूछने आया हूँ।

क्लासटीचर : वह पढ़ने में होशियार हैं। सार्वजनिक इम्तहान केलिए अभी दो महीने बाकी है,थोड़ा और ध्यान देकर पढ़ना चाहिए।

अभिभावक : जरूर, मैं बताऊँगा । अच्छा, में चलता हूँ। शुक्रिया मास्टर जी।

क्लासटीचर : शुक्रिया ।

Critical Overview / अवलोकन

भाषा के शुद्ध प्रयोग केलिए व्याकरण की आवश्यकता है।

भाषा का सही ज्ञान व्याकरण से ही प्राप्त होता है।

व्याकरण वह विधा है जिसकी सहायता से मानव शुद्ध भाषा बोल सकते हैं, पढ़ सकते हैं और लिख सकते हैं।

इससे व्याकरण के बारे में थोडी जानकारी मिली होगी। अब हम व्याकरण के अभ्यास के लिए कुछ वाक्य देखेंगे। आप इकाई एक में संज्ञा, सर्वनाम आदि पढ़ चुके हैं। अब उसके बारे में बताने की आवश्यकता नहीं ।

Recap / पुनरावृत्ति

- तू, तुम, आप कर्ता होते समय क्रिया इस प्रकार हैं - तू आ, तुम आओ, आप आइए
- कर्ता पुल्लिंग एकवचन हो तो क्रिया पुल्लिंग एकवचन में होते हैं। जैसे; राम काम करता है
- कर्ता पुल्लिंग बहुचन में है तो क्रिया पुल्लिंग बहुवचन में होते हैं। जैसे; लड़के काम करते हैं
- कर्ता स्त्रीलिंग एकवचन है तो क्रिया भी ऐसी होती हैं। जैसे; रानी काम करती है
- कर्ता स्त्रीलिंग बहुवचन है तो क्रिया भी ऐसी हैं। जैसे; लड़कियाँ काम करती हैं
- कर्ता एकवचन है, तो भी आदर को सूचित करने केलिए क्रिया बहुवचन में प्रयोग करते हैं जैसे;

  माँ उत्तराखंड में रहती हैं

  बड़े भाई दिल्ली में रहते हैं

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. तुम कर्ता है तो क्रिया का रूप कैसा है? उदाहरण लिखिए?
2. वर्तमानकाल में कर्ता पुल्लिंग एकवचन हो तो क्रिया कैसे होते हैं?
3. वर्तमानकाल में कर्ता स्त्रीलिंग एकवचन है तो क्रिया कैसी होती हैं?
4. वर्तमानकाल में कर्ता स्त्रीलिंग बहुवचन हैं तो क्रिया कैसी होती हैं?
5. कर्ता एकवचन है, तो भी आदर को सूचित करने केलिए क्रिया का प्रयोग कैसे करते हैं?
6. भाषा के शुद्ध प्रयोग केलिए किसकी आवश्यकता है?
7. भाषा के कितने रूप होते है?
8. शव्दों के स्वार्थक समूह को क्या कहता है?

Answers उत्तर

1. तू आ, तुम आओ, आप आइए
2. पुल्लिंग एकवचन में
3. स्त्रीलिंग एकवचन होती है।
4. स्त्रीलिंग बहुवचन ।
5. बहुवचन में प्रयोग करते हैं।
6. व्याकरण की ।
7. दो रूप ।
8. वाक्य ।

Assignments प्रदत्त कार्य

1. किताब की दूकान में दूकानदार और ग्राहक के बीच का वार्तालाप तैयार कीजिए ।
2. भाषा सिद्ध होने की प्रधानता समझाइए।
3. भाषा के सही ज्ञान व्याकरण से ही प्राप्त होते हैं, व्यक्त कीजिए।
4. भाषा के दो रूप को उदाहरण सहित समझाइए।
5. व्याकरण की विशेषताओं पर टिप्पणी लिखिए।

इकाई : 2

अभ्यासार्थ अनुच्छेद

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- सामान्य जीवन में प्रयुक्त भाषा की प्रधानता समझता है।
- विभिन्न वार्तालापों से परिचय प्राप्त करता है।
- विभिन्न अनुच्छेदों से परिचय प्राप्त करता है।
- एक अनुच्छेद मिले तो पहला इसका वाचन कर इसका ग्रहण करने का अवसर प्राप्त करता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हम व्याकरण के अभ्यास केलिए थोड़ा वाक्य और वार्तालाप पढ़ चुके हैं। अब हम थोड़ा अनुच्छेद का अभ्यास करेंगे। अनुच्छेद अभ्यास करने से क्या-क्या लाभ हैं, भाषा अच्छी तरह समझ सकते हैं। आपका ध्यान एवं एकाग्रता बढते हैं, ग्रहण करने की क्षमता भी बढ़ते हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

- ग्रहण करने की क्षमता, एकाग्रता बढाना।

Discussion / चर्चा

पहले नमूने के लिए एक अनुच्छेद देखिए -

1. निम्न लिखित अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए सवाल का सही उत्तर लिखिए;

मानव जीवन में सफलता प्राप्त करने केलिए परिश्रम का प्रमुख स्थान है। जीवन बिताने का माध्यम है परिश्रम। परिश्रम के बिना कोई काम चल नहीं सकता। हमारे जीवन की समस्त बातें परिश्रम के अधीन हैं। परिश्रम दो प्रकार के होते हैं। वे शारीरिक तथा मानसिक परिश्रम हैं। शारीरिक और मानसिक परिश्रम आपस में संबंधित हैं। शरीर को स्वस्थ रखने तथा शरीर के अंगों का उचित रूप से संचालन करने केलिए शारीरिक परिश्रम अत्यंत आवश्यक हैं। बिना परिश्रम के मानसिक उन्नति नहीं होती है। वह मनुष्य को स्वावलंबी तथा साहसी बनाता है। जीवन में सुख और शांति परिश्रम द्वारा ही प्राप्त होते हैं।

1. मानव जीवन में सफलता प्राप्त करने केलिए किसको प्रमुख स्थान है?
2. परिश्रम कितने प्रकार के होते हैं? कौन - से हैं?
3. परिश्रम के बिना क्या नहीं होती हैं?
4. परिश्रम मनुष्य को क्या बनाता है?
5. गद्यांश केलिए उचित शीर्षक लिखिए?

इस प्रकार का एक अनुच्छेद मिले तो क्या- क्या करने हैं, देखिए,

पहले, अनुच्छेद का अच्छी तरह वाचन करना चाहिए।

दो या तीन बार वाचन करना चाहिए।

इसके बाद गद्यांश के नीचे दिए गए सवाल को समझना चाहिए।

एक - एक सवाल को ध्यानपूर्वक सही उत्तर लिखना चाहिए।

इसका उत्तर देखिए;

उत्तर

1. मानव जीवन में सफलता प्राप्त करने केलिए परिश्रम की आवश्यकता हैं।
2. परिश्रम दो प्रकार के होते है, शारीरिक तथा मानसिक।
3. परिश्रम के बिना उन्नति नहीं होती है।
4. परिश्रम मनुष्य को स्वावलंबी तथा साहसी बनाते हैं
5. परिश्रम का महत्व।

(इस तरह उत्तर लिखना चाहिए।)

अगला अनुच्छेदए देखिए;

- ▶ नीचे दिए गए गद्यांश ध्यानपूर्वक पढिए और नीचे दिए गए प्रश्न का उत्तर लिखिए;

भारत देश में अनेक संप्रदाय तथा धर्मों के लोग हजारों वर्षों से बहुत ही प्यार से निवास कर रहे हैं। भारत में हिन्दु, मुसलमान, ईसाई, सिक्ख, बौद्ध, जैन आदि धर्म के लोग भाईचारे से जीते हैं। भाषा, रीति-रिवाज, खान-पान, धर्म, जाति, वस्त्र और आभूषण में विविधता होनेवाले हमारे देश में राष्ट्रीय एकता का बड़ा महत्व हैं। जब हमारे देश पर बाहरी शक्तियों ने आक्रमण किया तब भारत की एकता दर्शनीय रही। हम स्वयं बंगाली, गुजराती, मराठी, पंजाबी, आदि नाम से संबोधित करनेवाले लोग सब भारतीय हैं। हम सब भारत देश के नागरिक हैं। देश की एकता में साहित्य एवं कला भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत में भावात्मक एकता प्रारंभ से ही विद्यमान हैं।

1. भारत में विविध धर्म के लोग किस प्रकार जीते हैं ?
2. हमारे देश में बाहरी शक्तियों के आक्रमण के समय क्या दर्शनीय रही ?
3. देश की एकता में महत्वपूर्ण भूमिका निभानेवाले क्या-क्या हैं ?
4. प्रस्तुत गद्यांश केलिए उचित शीर्षक लिखिए ?

उत्तर

1. भारत में विविध धर्म के लोग भाईचारे से जीते हैं।
2. भारत की एकता दर्शनीय रही ।
3. देशकी एकता में साहित्य एवं कला महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
4. भारत की एकता।

Critical Overview / अवलोकन

एक गद्यांश मिले तो किस प्रकार इसका उत्तर दे सकता हैं, हम इसका विश्लेषण कर चुके हैं। एक बार फिर इसे देखें।

- ▶ पहले अच्छी तरह गद्यांश का वाचन करना चाहिए।
- ▶ फिर इसका भाव समझना है।
- ▶ दिए गए प्रश्न का वाचन करना चाहिए।
- ▶ अंत में ध्यानपूर्वक उत्तर लिखना चाहिए।

Recap / पुनरावृत्ति

- निम्नलिखित गद्यांश ध्यानपूर्वक पढिए और नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर लिखिए;
- श्रीनारायण गुरु का जन्म 1856 ईसवी में तिरुवनंतपुरम के चेम्बषंती नामक गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम माड़न और माता कुट्टी थी। पिता अध्यापक के साथ ही वैद्य भी थे। श्रीनारायण गुरु के बचपन का नाम नाणु था। नाणु कुशाग्र बुद्धि का छात्र था। उसके गुरु उससे बहुत प्यार करता था और उसे छात्रों का नेता बनाया। नाणु घुमक्कड़ प्रकृति के थे और धर्म परायण जीवन व्यतीत करने के इच्छुक थे। उन्होंने जीवन के रहस्यों को जानने केलिए दैहिक बंधनों को तोड़ते हुए मुक्त संसार की ओर निकल पड़े। गुरुजी मानव से कहते हैं कि सभी धर्मों का उद्देश्य एक ही है मानव जाति केलिए श्रीनारायण गुरु का संदेश यह है - 'एक जाति, एक धर्म और एक ईश्वर मानव का'।

1. श्रीनारायण गुरु का जन्म कब हुआ?
2. श्रीनारायण गुरु का जन्म कहाँ हुआ?
3. श्रीनारायण गुरु के पिता और माता का नाम क्या है?
4. श्रीनारायण गुरु के बचपन का नाम क्या था?
5. मानव जाति केलिए श्रीनारायण गुरु का संदेश क्या है?

- निम्नलिखित गद्यांश पढिए और नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर लिखिए:
- बाबा आमटे का पूरा नाम मुरलीधर देवीदास आमटे है। इनका जन्म महाराष्ट्रा के एक कट्टर ब्राह्मण परिवार में 26 दिसंबर 1914 को हुआ। इनके पिता देविदास हरबाजी आमटे एक बड़े जमींदार होने के साथ-साथ सरकारी अधिकारी भी थे। बचपन से ही बालक मुरलीधर का ध्यान निर्धन और असहाय लोगों के कष्टों की ओर जाता। प्रकृति से प्यार उसके स्वभाव की दूसरी विशेषता थी यौवन काल में मुरलीधर पर महात्मा गाँधी का बहुत प्रभाव पड़ा। भारत सरकार ने उनकी सेवाओं केलिए उन्हें 'पद्मश्री' की उपाधि से पुरस्कृत किया।

1. बाबा आमटे का पूरा नाम क्या हैं?
2. आमटे का जन्म कब हुआ और कहाँ?
3. आमटे के पिता का नाम क्या था?
4. यौवन काल में आमटे पर किसका प्रभाव पड़ा?
5. प्रस्तुत गद्यांश केलिए उचित शीर्षक लिखिए?

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. गद्यांश मिले तो पहले क्या करना चाहिए?
2. गद्यांश मिले तो दूसरा कार्य क्या करना चाहिए?
3. गद्यांश मिले तो तीसरा कार्य क्या करना चाहिए?
4. गद्यांश मिले तो अंतिम कार्य क्या करना चाहिए?
5. गद्यांश का भाषा कैसी होनी चाहिए?
6. गद्यांश का शीर्षक कैसे होना चाहिए?
7. गद्यांश का उत्तर कैसा लिखना चाहिए?

Answers उत्तर

1. अच्छी तरह गद्यांश का वाचन करना चाहिए।
2. भाव समझना हैं।
3. दिए गए प्रश्न का वाचन करना चाहिए।
4. ध्यानपूर्वक उत्तर लिखना चाहिए।
5. सरल होना चाहिए।
6. सामग्री पर आधारित होना चाहिए।
7. उत्तर एक या दो पंक्तियों में लिखना चाहिए।

Assignments प्रदत्त कार्य

1. सामान्य जीवन में भाषा की प्रधानता को समझाइए।
2. अनुछेद अभ्यास करने से क्या-क्या लाभ है, अपना मत व्यक्त कीजिए।
3. गद्यांश लिखते समय किन-किन बातें पर ध्यान देना चाहिए?
4. हिन्दी व्याकरण में गद्यांश को महत्वपूर्ण स्थान है, निर्धारित कीजिए।

इकाई : 3
अभ्यास केलिए रचना

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- भाषा का सार्थक इकाई है वाक्य।
- भाषा के दो भेद होते हैं, कथित भाषा और लिखित भाषा।
- एक रचना का अभ्यास करना समझता है।
- भाषा पर ज़ोर मिलता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हम सब जो कुछ बोलते हैं उसका एक निश्चित अर्थ होता हैं, इससे वह दूसरों की समझ में आता हैं। ऐसी सार्थक बोली को भाषा कहते हैं। भाषा के माध्यम से मनुष्य अपने भावों और विचारों को दूसरों पर प्रकट करता हैं। भाषा के शुद्ध प्रयोग के लिए व्याकरण की आवश्यकता हैं।

भाषा के विकास से साहित्य का विकास होते है। साहित्यिक रचना से परिचय होने से समाज और भाषा से और निकट आते हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

- भाषा, साहित्य और सामाज से संवंद्ध ।

Discussion / चर्चा

एक टोकरी भर मिट्टी - माधवराव सप्रे

किसी श्रीमान ज़मींदार के महल के पास एक गरीब अनाथ विधवा की झोंपड़ी थी। ज़मींदार साहब को अपने महल का अहाता उस झोंपड़ी तक बढ़ाने की इच्छा हुई, विधवा से बहुतेरा कहा कि अपनी झोंपड़ी हटा ले, पर वह तो कई जमाने से वहीं बसी थी उसका प्रिय पति और इकलौता पुत्र भी उसी झोंपड़ी में मर गया था। पतोहू भी एक पाँच बरस की कन्या को छोड़कर चल बसी थी। अब यही उसकी पोती इस वृद्धाकाल में एकमात्र आधार थी। जब उसे अपनी पूर्वस्थिति की याद आ जाती तो मारे दुःख के फूट-फूट रोने लगती थी। और जब से उसने अपने श्रीमान पड़ोसी की इच्छा का हाल सुना, तब से वह मृतप्राय हो गई थी उस झोंपड़ी में उसका मन लग गया था कि बिना मरे वहाँ से वह निकलना नहीं चाहती थी। श्रीमान के सब प्रयत्न निष्फल हुए, तब वे अपनी ज़मींदारी की चाल चलाने लगे। बाल की खाल निकालने वाले वकीलों की थैली गरम कर उन्होंने अदालत से झोंपड़ी पर अपना कब्जा करा लिया और विधवा को वहाँ से निकाल दिया बेचारी अनाथ तो थी ही, पास-पड़ोस में कहीं जाकर रहने लगी।

एक दिन श्रीमान उस झोंपड़ी के आसपास टहल रहे थे और लोगों को काम बतला रहे थे कि वह विधवा हाथ में एक टोकरी लेकर वहाँ पहुँची। श्रीमान ने उसको देखते ही अपने नौकरों से कहा कि उसे यहाँ से हटा दो पर वह गिड़गिड़ाकर बोली, 'महाराज, अब तो यह झोंपड़ी तुम्हारी ही हो गई है। मैं उसे लेने नहीं आई हूँ। महाराज क्षमा करें तो एक विनती है।'

ज़मींदार साहब के सिर हिलाने पर उसने कहा, 'जब से यह झोंपड़ी छूटी है, तब से मेरी पोती ने खाना-पीना छोड़ दिया है। मैंने बहुत-कुछ समझाया पर वह एक नहीं मानती यही कहा करती है कि अपने घर चल। वहीं रोटी खाऊँगी। अब मैंने यह सोचा कि इस झोंपड़ी में से एक टोकरी भर मिट्टी लेकर उसी का चूल्हा बनाकर रोटी पकाऊँगी। इससे भरोसा है कि वह रोटी खाने लगेगी महाराज कृपा करके आज्ञा दीजिए तो इस टोकरी में मिट्टी ले आऊँ!' श्रीमान ने आज्ञा दे दी।

विधवा झोंपड़ी के भीतर गई। वहाँ जाते ही उसे पुरानी बातों का स्मरण हुआ और उसकी आँखों से आँसू की धारा बहने लगी। अपने आंतरिक दुःख को किसी तरह संभालकर उसने अपनी टोकरी मिट्टी से भर ली और हाथ से उठाकर बाहर ले आई। फिर हाथ जोड़कर श्रीमान से प्रार्थना करने लगी, 'महाराज, कृपा करके इस टोकरी को जरा हाथ लगाइए जिससे कि मैं उसे अपने सिर पर धर लूँ।' ज़मींदार साहब पहले तो बहुत नाराज हुए। पर जब वह बार-बार हाथ जोड़ने लगी और पैरों पर गिरने लगी तो उनके मन में कुछ दया आ गई। किसी नौकर से न कहकर आप ही स्वयं टोकरी उठाने आगे बढ़े। ज्यों ही टोकरी को हाथ लगाकर ऊपर उठाने लगे त्यों ही देखा कि यह काम उनकी शक्ति के बाहर है। फिर तो उन्होंने अपनी सब ताकत लगाकर टोकरी को उठाना चाहा, पर जिस स्थान पर टोकरी रखी थी, वहाँ से वह एक हाथ भी ऊँची न हुई। वह लज्जित होकर कहने लगे, 'नहीं, यह टोकरी हमसे न उठाई जाएगी।'

यह सुनकर विधवा ने कहा, 'महाराज, नाराज न हों, आपसे एक टोकरी भर मिट्टी नहीं उठाई जाती और इस झोंपड़ी में तो हजारों टोकरियाँ मिट्टी पड़ी है। उसका भार आप जन्म-भर क्योंकर उठा सकेंगे? आप ही इस बात पर विचार कीजिए।

ज़मींदार साहब धन- मद से गर्वित हो अपना कर्तव्य भूल गए थे पर विधवा के उपर्युक्त वचन सुनते ही उनकी आँखें खुल गयीं। कृतकर्म का पश्चाताप कर उन्होंने विधवा से क्षमा माँगी और उसकी झोंपड़ी वापस दे दी।

Critical Overview / अवलोकन

'एक टोकरी भर मिट्टी'कहानी का कथानक बहुत सरल और सहज है। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने यथार्थ और आदर्श को बड़े ही सहजता से पाठकों के सामने रखा है। कहानी में अनाथ विधवा द्वारा सामाजिक संवेदना को वाणी भीदिया गया है। मनुष्य को अपनी जरूरतों से अधिक लालसा होने लगा है, जिसके फलस्वरूप वहअपने पथ से भ्रष्ट हो जाता है।

Recap / पुनरावृत्ति

- साहित्य समाज का दर्पण है
- कुछ विद्वान 'एक टोकरी भर मिट्टी' कहानी को हिन्दी की पहली कहानी की श्रेणी में रखते है
- रचना के अभ्यास से समाज से परिचय होते है

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. साहित्य किसका दर्पण है ?
2. 'एक टोकरी भर मिट्टी' किस प्रकार की विधा है ?
3. 'एक टोकरी भर मिट्टी' कहानी किसने लिखी है?
4. इस कहानी का पुरुष पात्र कौन है ?
5. इस कहानी की नायिका कौन है ?
6. 'एक टोकरी भर मिट्टी' कहानी का कथानक कैसे है ?
7. इस कहानी की भाषा कैसी है ?
8. इस कहानी का सन्देश क्या है ?

Answers उत्तर

1. समाज का
2. कहानी
3. माधवराव सप्रे
4. एक ज़मींदार
5. एक गरीब अनाथ विधवा
6. सरल और सहज ।
7. सरल भाषा है।
8. सामाजिक जीवन का चित्रण ।

Assignments प्रदत्त कार्य

1. 'एक टोकरी भर मिट्टी' कहानी की भाषा पर विचार व्यक्त कीजिए ?
2. भाषा के शुद्ध प्रयोग केलिए क्या करना चाहिए ?
3. भाषा और साहित्य के विकास केलिए समाज का योगदान क्या है ?
4. एक टोकरी भर मिट्टी कहानी की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए।
5. एक टोकरी भर मिट्टी कहानी के कथावस्तु पर अपना मत व्यक्त कीजिए।
6. एक टोकरी भर मिट्टी कहानी के पात्र ज़मींदार का चरित्र चित्रण।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी व्याकरण - आचार्य कमाता प्रसाद गुरु।
2. सामान्य हिन्दी व्याकरण - श्रीकृष्ण पाण्डेय।
3. व्यवहारिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना - हरदेव बाहरी।
4. व्यवहारिक हिन्दी व्याकरण अनुवाद तथा रचना - डॉ. एच. परमेश्वरन।

Model Question Paper
Set-01

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE : ....

Reg. No : ....
Name : ....

Common Course for UG Programmes
(Hindi)
Semester II - Language Core(LC)
Course Code: B21HD01LC
Course Title: हिन्दी गद्य साहित्य और संरचना

Time: 3 Hours **Max Marks: 70**

SECTION A

किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर लिखिए।
एक शब्द या वाक्य में उत्तर लिखिए।

1. हामिद किस कहानी का पात्र है ?
2. युग प्रवर्तक नाटककार कौन है ?
3. अज्ञेय जी के पूरा नाम लिखिए ।
4. निबंध को अंग्रेजी में क्या कहते है ?
5. हिन्दी का पहला रेखाचित्र का नाम लिखिए ।
6. गजाधर बाबू कितने साल रेलवे में काम किये ?
7. आधुनिक काल के गद्य विधा के जनक कौन है ?
8. प्रेमचंद के पहली कहानी का नाम लिखिए ।
9. आकाश द्वीप किसकी कहानी है ?
10. सामान्तर कहानी आन्दोलन के प्रवर्तक कौन है ?
11. उषा प्रियंवदा की दो कहानियों के नाम लिखिए ।
12. प्लेग की चुडैल किसकी कहानी है ?
13. उर्दू भाषा में प्रेमचंद जी स्वीकृत नाम क्या है ?
14. हिन्दी साहित्य के हास्य व्यंग्य लेखक कौन थे ?
15. तत्सम शब्द का उदाहरण लिखिए।

(1X10 = 10 Marks)

SECTION B

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए।
दो या दो से अधिक वाक्यों में उत्तर लिखिए।

1. संस्मरण साहित्य का अर्थ क्या है ?
2. विशेषण का परिचय दीजिए ।
3. सामान्य जीवन में भाषा की प्रधानता व्यक्त कीजिए ।
4. क्रिया कितने प्रकार के होते है ?
5. कहानी साम्राट प्रेमचन्द ।
6. गजाधर बाबू कौन है ?
7. संज्ञा क्या है ? कितने प्रकार के होते है ?
8. निबंध माने क्या है ? उदाहरण सहित लिखिए।
9. रज़िया कौन है ?
10. कहानिकर जैनेन्द्र । (2×5 = 10 Marks)

SECTION C

किन्हीं छः प्रश्नों के उत्तर लिखिए।
एक परिच्छेद में उत्तर लिखिए।

1. ईदगाह कहानी की मनोवैज्ञानिकता पर विचार कीजिए ।
2. संस्मरण और रेखाचित्र उदाहरण सहित व्यक्ति कीजिए ।
3. सर्वनाम उदाहरण सहित व्यक्ति कीजिए ।
4. हास्य - व्यंग्य लेखक हरिशंकर परसाई ।
5. वापसी शीर्षक का मतलब क्या है ?
6. निबंध साहित्य उदाहरण सहित व्यक्ति कीजिए ।
7. कहानिकार अज्ञेय ।
8. हामिद का चरित्र चित्रण ।
9. यात्रावृत्त की विशेषता पर टिप्पणी लिखिए ।
10. ग्राहक और दूकेनदार के बीच एक वार्तालाप तैयार कीजिए ।
11. नाटक की उद्भव और विकास पर अपना मत प्रकट कीजिए ।
12. जयशंकर प्रसाद और उनके नाटक । **(5×6 = 30** Marks**)**

SECTION D

किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए।
200 शब्दों के अन्दर उत्तर लिखिए।

1. वापसी कहानी का सारांश लिखिए।
2. संस्मरण , जीवनी , रेखाचित्र , व्यंग्य - टिप्पणी लिखिए।
3. ईदगाह कहानी का कथावस्तु लिखिए।
4. उदाहरण सहित विशेषण का परिचय दीजिए। **(10×2 = 20** Marks**)**

Model Question Paper
Set-02

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE : ....   Reg. No : ………...............
                                                                                Name   : ………………...

Common Course for UG Programmes
(Hindi)
Semester II - Language Core (LC)
Course Code: B21HD01LC
Course Title: हिन्दी गद्य साहित्य और संरचना

Time: 3 Hours   **Max Marks: 70**

SECTION A

किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर लिखिए।
एक शब्द या वाक्य में उत्तर लिखिए।

1. 'रानी केतकी की कहानी' के रचयिता कौन है?
2. रामचन्द्र शुक्ल जी के एक कहानी का नाम लिखिए?
3. कलम के सिपाही कौन है?
4. अज्ञेय का पूरा नाम क्या है?.
5. प्रेमचंद की अंतिम हिन्दी कहानी का नाम क्या है?
6. 'ईदगाह' कहानी का मुख्य पात्र कौन है?
7. वापसी कहानी का मुख्य चर्चा विषय क्या है?
8. हिन्दी के गद्य का विकास कितने कालों में विभक्त है?
9. हिन्दी गद्य के विकास केलिए महत्वपूर्ण भूमिका निभानेवाली पत्रिका कौन-सी है?
10. हिन्दी के युगप्रवर्तक नाटककार कौन है?
11. हिन्दी निबंध का जनक कौन है?
12. किसी व्यक्ति के जीवनवृत्तान्त को क्या कहते है?
13. हरिसंकर परसाई मुख्य रूप में किस विधा के लेखक है?
14. अर्थ के आधार पर शब्द के कितने भेद है
15. 'तत्सम' शब्द के दो उदाहरण दीजिए।

(1X10 = 10 Marks)

SECTION B

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

दो या दो से अधिक वाक्यों में उत्तर लिखिए।

1. प्रेमचंद युग के चार प्रसिद्ध कहानिकारों के नाम लिखिए ।
2. जयशंकर प्रसाद की प्रमुख कहानियों के नाम लिखिए ।
3. व्याकरण की प्रधानता समझाइए ।
4. भविष्य काल से क्या तात्पर्य है?
5. क्रिया कितने प्रकार है? और कौन-कौन है?
6. आत्मकथा की विशेषता क्या है ?
7. जीवनी क्या है?
8. हिन्दी के विभिन्न गद्य विधाएं क्या क्या है?
9. अज्ञेय के प्रमुख रचनाएँ लिखिए ।
10. शब्द की परिभाषा लिखिए । (2×5 = 10 Marks)

SECTION C

किन्हीं छः प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

एक परिच्छेद में उत्तर लिखिए।

1. प्रेमचंद के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दीजिए ।
2. 'ईदगाह' कहानी की विषयवस्तु क्या है ?
3. 'वापसी' कहानी के शीर्षक के औचित्य पर अपने विचार व्यक्त कीजिए ।
4. हिन्दी गद्य साहित्य के विकास पर एक समीक्षात्मक निबंध तैयार कीजिए ।
5. 'ईदगाह' की मनोवैज्ञानिकता पर विचार कीजिए ।
6. निबंध का उद्भव और विकास पर एक लेख तैयार कीजिए ।
7. यात्रावृत्त की विशेषता और उसकी विशिष्टता पर अपना विचार प्रकट कीजिए ।
8. हिन्दी के प्रमुख व्यंग्यकारों का नाम बताइए ।
9. रज़िया का चरित्र चित्रण कीजिए ।
10. संज्ञा क्या है? और संज्ञा के प्रकार व्यक्त कीजिए ।
11. सर्वनाम के भेदों को समझाइए ।
12. 'ने' का प्रयोग उदाहरण देकर समझाइए । **(5×6 = 30** Marks**)**

SECTION D

किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

200 शब्दों के अन्दर उत्तर लिखिए।

1. हिन्दी साहित्य में महिला कहानीकार उषा प्रियंवदा का स्थान निर्धारित कीजिए ।
2. 'ईदगाह' एक आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानी है । स्पष्ट कीजिए ।
3. हिन्दी में कहानी आधुनिक काल की उपज है, समझाइए ।
4. काल के विविध रूपों का परिचय दीजिए । **(10×2 = 20** Marks**)**

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

സർവ്വകലാശാലാഗീതം

വിദ്യയാൽ സ്വതന്ത്രരാകണം
വിശ്വപൗരരായി മാറണം
ഗ്രഹപ്രസാദമായ് വിളങ്ങണം
ഗുരുപ്രകാശമേ നയിക്കണേ

കൂരിരുട്ടിൽ നിന്നു ഞങ്ങളെ
സൂര്യവീഥിയിൽ തെളിക്കണം
സ്നേഹദീപ്തിയായ് വിളങ്ങണം
നീതിവൈജയന്തി പാറണം

ശാസ്ത്രവ്യാപ്തിയെന്നുമേകണം
ജാതിഭേദമാകെ മാറണം
ബോധരശ്മിയിൽ തിളങ്ങുവാൻ
ജ്ഞാനകേന്ദ്രമേ ജ്വലിക്കണേ

കുരീപ്പുഴ ശ്രീകുമാർ

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Regional Centres

Kozhikode
Govt. Arts and Science College
Meenchantha, Kozhikode,
Kerala, Pin: 673002
Ph: 04952920228
email: rckdirector@sgou.ac.in

Thalassery
Govt. Brennen College
Dharmadam, Thalassery,
Kannur, Pin: 670106
Ph: 04902990494
email: rctdirector@sgou.ac.in

Tripunithura
Govt. College
Tripunithura, Ernakulam,
Kerala, Pin: 682301
Ph: 04842927436
email: rcedirector@sgou.ac.in

Pattambi
Sree Neelakanta Govt. Sanskrit College
Pattambi, Palakkad,
Kerala, Pin: 679303
Ph: 04662912009
email: rcpdirector@sgou.ac.in

हिन्दी गद्य साहित्य और संरचना

COURSE CODE: B21HD01LC

YouTube

Sreenarayanaguru Open University
Kollam, Kerala Pin- 691601, email: info@sgou.ac.in, www.sgou.ac.in Ph: +91 474 2966841

ISBN 978-81-963059-8-7
9 788196 305987